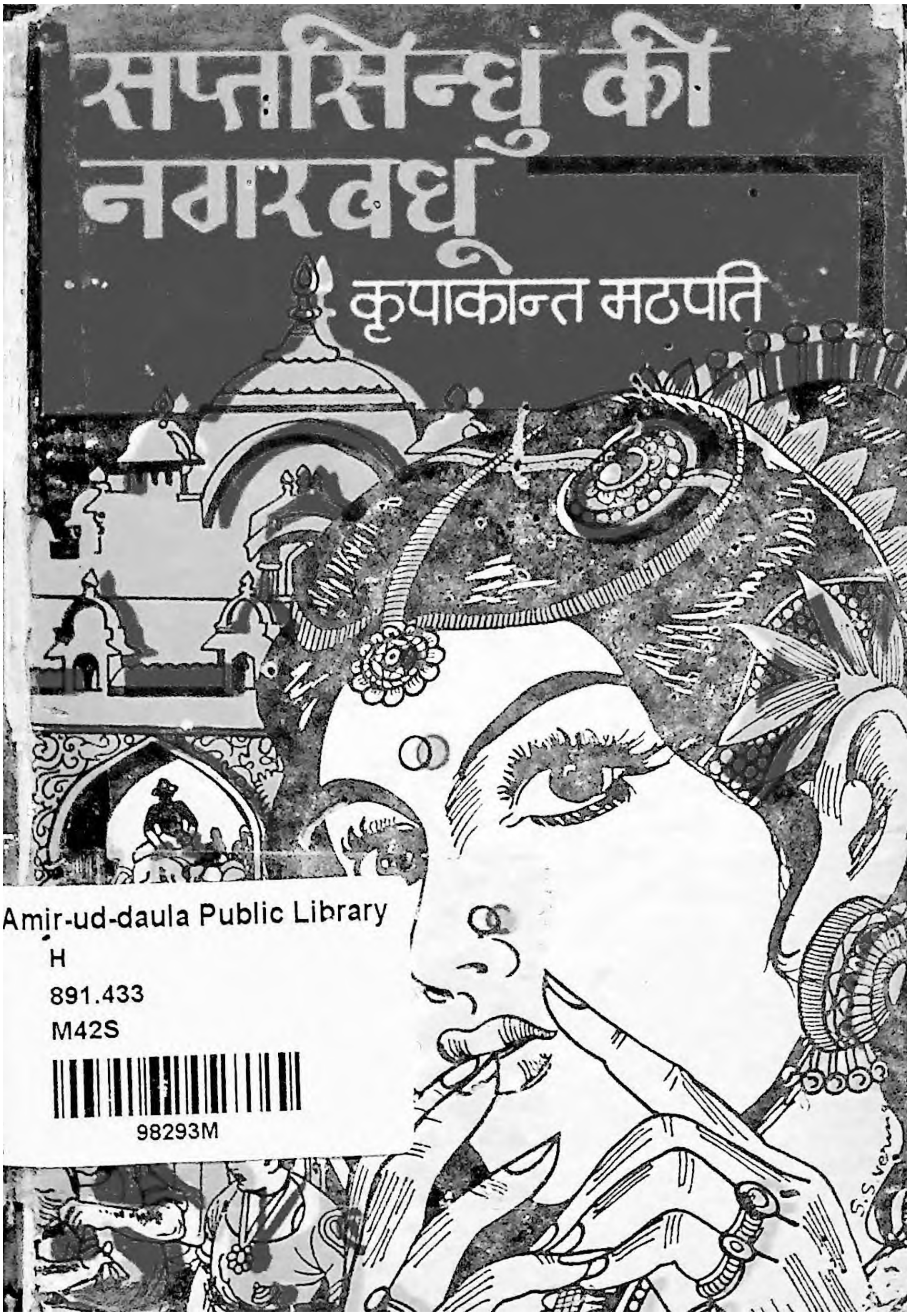

सप्तसिन्धु की नगरवधू
कृपाकान्त मठपति

सप्त-सिन्धु की नगरवधू

[सिन्धु-घाटी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित एक सामाजिक उपन्यास]

सप्त-सिन्धु की नगरबधू

कृपाकान्त मठपति

साहित्य निधि
दिल्ली-110032

मूल्य : रु. 30.00

प्रथम संस्करण : 1986
प्रकाशक : साहित्य निधि,
29/59A गली न० 11, विश्वास नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110032
मुद्रक : रुचिका प्रिण्टर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

परम पूजनीय । ममतामयी माँ एवं महान
संगीतज्ञ पिता के कर-कमलों में सादर समर्पित ।

आत्म निवेदन

आज से हजारों वर्ष पूर्व इस विशाल देश भारत में सप्त-सिन्धु के कगार पर सिन्धुघाटी सभ्यता के नाम से जानी जानेवाली सभ्यता का विकास हुआ था। सिन्धुघाटी की सभ्यता का विशेष क्षेत्र हड़प्पा और मोहन जोदड़ों था। आज भी उस स्थान की खुदाई हो रही है और उस सभ्यता के काल के अनेक चिह्न, देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ, अनेक आभूषण और अनेक अवशेष प्राप्त हुए हैं। वहाँ के टूटी हुई अट्टालिकाएँ, टूटे-फूटे खण्डहर आज भी वहाँ की बीती हुई सभ्यता की कहानी कहते हैं।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की सभ्यता की अपनी संस्कृति थी, अपना समाज था। उस सभ्यता के लोगों के रहन-सहन, रीति-रिवाज, उनकी आध्यात्मिक निष्ठा, सांस्कृतिक उन्नयन का प्रयास एवं सामाजिक परम्परा का निर्वाह आधुनिक युग की सभ्यता से मिलता-जुलता है। हालाँकि यह सभ्यता भी महाकाल के गर्भ में समा गयी थी।

मैं स्वयं राजनीति विज्ञान और इतिहास का विद्यार्थी रहा हूँ। आज भी इतिहास एवं पुरातत्व विषय के स्वाध्याय में यथासम्भव लगा रहता हूँ। मेरा यह उपन्यास हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की प्राचीन ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि से जुड़ा हुआ है किन्तु इस उपन्यास का कथानक, पात्रों का चयन एवं पात्रों की भूमिका वहाँ के समाज पर आधारित है। इस उपन्यास को हमने ऐतिहासिक से अधिक सामाजिक बनाने का प्रयत्न किया है। मैं तो यह समझता हूँ कि इतिहास में इतिहास की प्रधानता होनी चाहिए और साहित्य

में समाज की क्योंकि कहा भी गया है 'साहित्य समाज का दर्पण है।' समाज की घटित घटनाओं का प्रतिबिम्ब वस्तुतः साहित्य में ही दृष्टिगोचर होता है।

इस उपन्यास की घटित घटनाएँ भी सामाजिक हैं और पात्रों के नाम भी सामाजिक धरातल पर रखे गये हैं उपन्यास के औपन्यासिक वातावरण, संवाद तथा कल्पनात्मक-अभिव्यक्ति, पात्रों के चरित्र का उतार-चढ़ाव एवं संवेग सिन्धु घाटी की सभ्यता के अनुरूप ढालने का प्रयास कहाँ तक सफल है, इसका उत्तरदायित्व मैं देश भर के साहित्यिक-समुदाय एवं पाठक-वर्ग पर छोड़ता हूँ। वे हमें इस उपन्यास के सम्बन्ध में सम्मति देकर मुझे कृतार्थ करें।

कृपाकान्त मठपति

सप्तसिन्धु की नगरवधू

पागल

नगर मोहनजोदड़ो के स्नानघरों में भारी भीड़ हो रही थी। स्त्रियाँ, और बच्चे स्नानघरों में नहा रहे थे। पुरुष स्नानगृह खूब भरे थे।

पाँच हजार साल पहले सिन्धु नदी की घाटी में यह मोहनजोदड़ो नगर बसा था। तब विज्ञान बहुत आगे था। देश पूरी तरह सम्पन्न था। सिन्धु नदी का पाट इतना चौड़ा था कि उसमें जल पोत आसानी से चलते थे।

उस समय देश को भारतवर्ष बहुत कम लोग कहते उसका पुराना नाम आर्यावर्त ही सबको प्यारा लगता। आर्य लोगों ने देश को सभ्यता-दी थी। यहाँ की संस्कृति को भी आगे बढ़ाया था। तब हमारे देश का व्यापार मिस्र देश से बहुत होता था। वहाँ से जहाज आते, वे सिन्धु नदी के डेल्टा के पास रुकते वहीं से चौड़ी नहर द्वारा वे सिन्धु नदी में आ जाते।

ये जहाज मिस्र देश से कपास लाते। वहाँ की उत्तम किस्म का गेहूँ भी यहाँ आता। बड़े-बड़े व्यापारी आते। वे सूती व रेशमी कपड़े, सोने-चाँदी के आभूषण, हीरे-जवाहरातों के गहने भी लाते।

हमारे देश से भी तम्बाकू जाता। यहाँ की अनेक वस्तुएँ निर्यात होतीं। इस तरह आयात और निर्यात नित्य ही होता। दोनों देशों के सम्बन्ध बहुत अच्छे थे।

नगर मोहनजोदड़ो के स्नानघरों में भीड़ थी और यह भीड़ अधिक इसलिए बढ़ गयी थी कि नगर में मकरसंक्रान्ति का मेला था। आर्यजन पर्व मनाने के लिए प्रातः से ही प्रसन्नता से आलोडित हो रहे थे।

जो अधिक धर्मनिष्ठ थे, वे सिन्धु नदी में गोता लगाने गये, क्योंकि यह नगर सिन्धु नदी के तट पर ही बसा था। जिन्हें समय नहीं था जो अधिक व्यस्त थे वे स्नानगृह की ओर चल दिये।

मोहन जोदड़ो के ये स्नानघर अपने में अनोखे थे। ये देखते ही बनते थे। ये स्नान गृह बहुत बड़े थे। इनकी संख्या भी कम नहीं थी। ये सफेद संगमरमर के बने थे। चाँदी जैसे चमकते स्त्रियों के स्नानघर अलग थे व पुरुषों के उनसे पृथक। इनमें लोहे के मोटे-मोटे नल लगे थे। जिनके द्वारा सिन्धु नदी से पानी आता और वह बीचों-बीच में बने संगमरमर के शुभ्र तालाब में भर जाता। इनमें खुले आवास बने थे। जिनमें कपड़े टाँगे जाते। वहीं बदले जाते। गीले कपड़े सुखाने की भी इनमें पूरी व्यवस्था थी।

एक स्नानघर के साथ ही लगभग पाँच सौ पुरुष स्नान कर सकते थे। इसी तरह स्त्री-स्नानगृह बने थे।

नगर का नियम था कि क्या स्त्रियाँ क्या पुरुष सभी स्नानघरों में जाते थे। नगर की आबादी लगभग पाँच लाख थी। यह एक महानगर कहलाता। यहाँ धनिकों की बस्ती थी। उनकी गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ थीं।

पुरुष स्नानघरों में एक अधेड़ आदमी बुर्ज पर बैठा जोर-जोर से हँस रहा था। उसकी दाढ़ी बेतरतीब बढ़ रही थी। उसके बालों ने कनपटियों को ढक लिया था। वे गर्दन से लटककर पीठ तक पहुँच गये थे। वे मैले और देखने में बिल्कुल अच्छे नहीं लग रहे थे।

इस अधेड़ ने मिस्त्र की रुई से बनी श्वेत कमीज पहन रखी थी। वह पूरी आस्तीन की थी। उसमें हाथी दाँत के बटन लगे थे। गले के बटन भी सोने के थे। लेकिन चार में दो ही रह गये थे। कमीज फट गयी थी। उसके बटन खुले थे। उसने रेशमी सफेद धोती पहन रखी थी। उसके पैर नंगे थे। गले में पीला वसन्ती रंग का रेशमी दुपट्टा था।

यह पागल था। इसे लोग पागल कहते, कभी हँसता, कभी बड़बड़ाता। कभी गम्भीर हो जाता। तब लोग इसकी मुद्रा को गौरपूर्वक देखते, उन्हें आश्चर्य होता।

पागल हँसने-बड़बड़ाने लगा—"यह मोहनजोदड़ो है। देश की सभ्यता

यहाँ साँस लेती है। यहाँ सोने-चाँदी की बरसात होती है और दूध की नदी बहती है। यहाँ पाप भी होता है। उसका डेरा भी पड़ा है। यह नगर नहीं रहेगा। यहाँ के लोग मिट जायेंगे। इसकी कहानी शेष बचेगी। वही इतिहास बनेगा। और मोहनजोदड़ो तू आज हँसता है। तू कल रोयेगा। तेरा विनाश होगा।"

लोग हँसते-मुस्कराते व आपस में बातें करने लगते, कि इस पागल के कहने से विनाश हो जाएगा।

एक स्वर सुनायी दिया—"यह धनवान था, किसी गहरी वेदना से पागल हो गया।"

दूसरी आवाज कानों में पड़ी—"किसी नगरवधू ने इसे धोखा दिया, तभी से यह पागल हो गया।"

ऐसे ही कोई कह रहा था कि यह पागल नहाता नहीं मैला रहता है। सवेरा होते ही बुर्ज पर आकर बैठ जाता है और ऊटपटाँग बका करता है। इसका दिमाग खराब हो गया है। यह कभी ठीक नहीं हो सकता।

और पागल कह रहा था—"तूफान आयेगा। नदी उबलेगी। पूरा नगर पानी में डूब जाएगा। यहाँ प्रलय होगा। तब खुशियाँ और मातम मनाने वाला कोई भी नहीं रहेगा।"

पागल कह रहा था लोग उसकी ओर बहुत कम ध्यान देते। वह कहता कि एक दिन ऐसा आएगा। जब पायल नहीं बजेंगे। बिछुओं की झनकार भी नहीं होगी। मेंहदी का रंग काला पड़ जाएगा। चम्पा और गुलाब के फूलों से दुर्गन्ध आने लगेगी। महानाश का देवता इस नगर को अपनी टेढ़ी आँखों से देख रहा है। यहाँ पाप बढ़ गया है। यहाँ का व्याभिचार भी अपनी चरम सीमा पर है। यहाँ सुरा है, सुन्दरी है, वैभव है, विलासिता है।"

दोपहर तक पागल बुर्ज पर बैठा रहा। वह इस तरह बड़बड़ाता रहा फिर उठकर चल दिया तथा सिन्धु नदी के उस चौड़े घाट पर आकर रुका जहाँ जलपोत ठहरते थे।

बन्दरगाह पर मिस्र के एक जहाज ने अभी-अभी आकर लंगर डाला था। उस पर से सामान उतारा जा रहा था। उसी पर से एक नवयौवना

उतरी इसका रंग धुली चाँदनी जैसा था। इसके होंठ गुलाबी थे आम की फाक जैसे। आँखें कटोरे जैसी खूब बड़ी-बड़ी, नासिका लम्बी थी। इसके काले रेशमी बाल धुंघराले थे।

इसने धानी रेशमी साड़ी पहन रखी थी। उसमें जरी का काम था। वह बेशकीमती थी। इसके पैरों में मखमल की लाल जूतियाँ थीं। उन पर भी जरी का काम था। इसने नीलम पहुंची पहन रखी थी। गले में हीरों का हार था। इसके पीछे ही एक अधेड़ था। वह मिस्र देश का वासी व कोई रईस था। इसने चूड़ीदार श्वेत पाजामा और काली सर्ज की शेरवानी पहन रखी थी। इसके हाथ में जो छड़ी थी, उसकी मूंठ चांदी से मढ़ी थी।

पागल ने दोनों को देखा, वह जोर से चिल्लाया—"यह जवानी चन्द दिनों की है। इसका बुढ़ापा कभी नहीं आएगा। यह नाश हो जाएगा। यह विषैली नागिन है। यह विषमुखी है।"

पागल बकता रहा उसकी बातों पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। जहाज से कुछ बोरे सूखे मेवे के उतारे गये। चिरौंजी का एक बोरा फट गया। पागल उससे चिरौंजी निकाल कर खाने लगा व मजदूरों से कहने लगा—"सामान धनियों का है। अमीर इसे खायेगा। अमीर इससे लाभ उठायेंगे। तुम लोग पागल हो, मूर्ख हो, व्यर्थ के लिए अपना पसीना बहाते हो, यह सब लूट कर खा जाओ। इन धनिकों का नाश होने वाला है।"

अब पागल नगर के चौक में आ गया। वहाँ बने विष्णु मन्दिर के एक बुर्ज पर जाकर बैठ गया। तीसरा पहर हो गया था मन्दिर के चारों ओर फूलों की दुकानें लग रही थीं। बताशे व इलायची दाने, हरे नारियल और फलों की भी हाटें सजी थीं।

मन्दिरों में घण्टे बजते दर्शनार्थी और पूजन करने वाले लोग आ-जा रहे थे। बड़ी चहल-पहल थी। वहाँ का वातावरण अपने में मुखरित हो रहा था।

यह विष्णु मन्दिर था, किन्तु शंकर भगवान की भी प्रस्तर प्रतिमा थी। देवी दुर्गा की भी मूर्ति थी। यह महापावन कहलाती। यहाँ लोग श्रद्धा विभोर होकर चले आते और उनके चित्त को शान्ति मिलती।

मन्दिर में आने और जाने वाली स्त्रियाँ सोने-चांदी के आभूषणों से

नीचे से लेकर ऊपर तक लदी थी। वे रेशमी बहुमूल्य वस्त्र पहने ऐसी लग रही थीं जैसे रानियां और महारानियाँ हों।

पागल उन्हें देखता तो हँसने लगता, उसके मुँह से निकलता—

"यह रूप एक धोखा है। यह शृंगार हमेशा नहीं रहेगा। यह दिन सपने होंगे। यह वातावरण एक स्मृति में बदल जाएगा। मोहनजोदड़ो का सर्वनाश होगा। यह मेरी भविष्यवाणी है।"

सुनने वाले कहते कि इस पागल के मुँह से कभी अच्छी बात नहीं निकलती। इसे जो धुन सवार हो जाती, वही बकने लगता है। इसकी आदत बुरी है।

पुजारी आरती करने के बाद भक्तों में प्रसाद का वितरण करने लगा। पागल भी भीड़ को चीरता हुआ वहाँ आ गया। उसने पुजारी के हाथ से थाली छीन ली।

उसने प्रसाद को जमीन पर फैला दिया। थाली दूर फेंक दी और अट्टहास करता हुआ कहने लगा—

"यह झूठा भगवान है। इसका प्रसाद खाओगे, तो तुम्हारी बुद्धि कुंठित हो जाएगी। सच्चा प्रसाद खाना है तो सिन्धु नदी के घाट पर जाओ। पानी में कूद पड़ो व जल समाधि ले लो। प्रलय का देवता पानी में ही रहता है। तुम उसके पास चले जाओ।"

लोग कहते—अजीब पागल है। हमेशा नाश व महानाश ही चिल्लाया करता है। इसे नगर से निकाल दिया जाए। यह आदमी बहुत खराब है।

पागल मन्दिर से भागा वह बीच सड़क पर आ गया। वह आने-जाने वालों से कह रहा था—

"ठहर जाओ। आगे डग मत बढ़ाओ। आगे नाश का देवता है। वह सबको खा जायेगा। देखो वह देखो, सामने प्रलय की नागिन फुत्कार करती हुई आ रही है। वह सब विध्वंस कर देगी। उसके दोनों हाथों में विनाश के खिलौने हैं। वह उन्हीं से खेल रही है।"

पागल आगे चला। एक रथ आ रहा था, उसमें चार घोड़े थे। उस पर सारथी सुनहरी पगड़ी बाँधे बैठा था। रथ के पहिये रंग-बिरंगे थे। वे रंग-

रोगन से पोते गये थे। उस पर गुलाबी रंग का रेशमी आवरण पड़ा था। उस आवरण में सुनहरा और रूपहला गोटा लग रहा था।

रथ का परदा तनिक हटा। उसमें से जो हाथ बाहर निकला, उसमें मेंहदी रची थी। सोने का हाथ फूल-सा नजर आया। उसमें नगीने जड़ रहे थे।

पागल रथ के साथ साथ चलने लगा। वह कह रहा था—

"तुम झरोखे की रानी हो। परदे से झाँक रही हो। मैं पागल हूँ। मुझे किसने पागल बनाया यह तुम नहीं जानती हो।"

हाथ परदे से अन्दर चला गया। झरोखे की रानी एक कोने से झांकने लगी। घोड़ों के गलों में बँधी घण्टियाँ टन-टन करके उन्हें बढ़ा रही थी। उनको चाँदी के पायजेब पहनाये गये थे। वे भी मधुर स्वर में बज रहे थे।

ऐसे में सहसा आसमान पर बादल घिर आये। देखते-ही-देखते बरसात होने लगी। पथ पर भगदड़ मच गयी। पानी तेज हो गया। यह बेमौसम की बरसात थी। ऐसा कहा जाता कि मकर संक्रान्ति वाले दिन पानी अवश्य बरसता है। यह बहुत शुभ होता है।

पागल सड़क पर खड़ा नहा रहा था। ठण्डी हवा चल रही थी। मगर उसे सर्दी काबोध नहीं था। दुकानदार कह रहे थे कि पागल वास्तव में जड़ मनुष्य होता है। उसे न जाड़े में जाड़ा लगता और न गर्मी में गर्मी। यह पागल भी ठेठ पागल है। इसे कुछ नहीं होगा। लोग कहते हैं कि पागल कभी बीमार नहीं होता।

साँझ का आगमन होने वाला था। दिशाएँ धूमिल हो गयीं। पानी खूब जोर बाँधे बरस रहा था। पागल सड़क पर खड़ा था। वह वर्षा का आनन्द इस तरह ले रहा था, मानो सावन और भादों की बरसात हो।

पानी बरसता रहा। पागल भींगता रहा। बाजार अभी बन्द नहीं हुआ था। दुकानों में प्रकाश हो गया। कहीं झाड़-फानूसों की रोशनी हो रही थी, कहीं ऊँची दीवार पर दीपक जगमगा रहे थे। ये दीवारें चाँदी व सोने की थीं।

ऐसे ही किसी-किसी दुकान में मोमबत्तियाँ जल रही थीं। बाजार

जगमगा रहा था। बूंदें थिरक रही थीं। वे धरती का मुंह चूमतीं। हवा की शहनाई ऐसी बजती मानो बूंदों की बारात हो और वह धरती पर आयी हो।

रत्नगर्भा

रत्नगर्भा ने अपनी अट्टालिका की खिड़की खोली वह दूर तक निहारने लगी, उसकी दृष्टि सिन्धु नदी पर पहुँच गयी। दूर से देखने में नदी ऐसी लग रही थी, मानो चाँदी की बालू पर हीरे की धार बह रही हो। तट पर भीड़ थी। दूर और सुदूर एक जलपोत खड़ा था। जिसका मस्तूल ऊँचा उठ रहा था। जहाज से धुआं अब भी उठ रहा था। शायद उसमें कोयला झोंका जा रहा था।

रत्नगर्भा की दृष्टि ऊपर आसमान पर पहुँची। रंग-बिरंगी पतंगें उड़ रही थीं। उनके पेंच लड़ाये जा रहे थे। वे हवा में डोलती उसमें नृत्य कर रही थीं।

रत्नगर्भा के अन्तःकरण ने कहा—"सवेरे-ही-सवेरे लोग पतंग उड़ाने लगते हैं।"

तभी पीछे से किसी ने आकर उस स्वर्ग सुन्दरी की आँखें बन्द कर लीं।

रत्नगर्भा ने उँगलियों को टटोला वे जानी-पहचानी थीं। वह मन्द स्मित बिखेरती हुई मृदु स्वर में बोली—"कौन प्रभा? तू बड़ी नटखट है। पुरुषों जैसा मजाक करती; तुझे संकोच नहीं लगता।"

"मैं परिचारिका हूँ। तुम सेठ की बेटी हो मैं तुम्हारी दासी हूँ और भूल क्यों जाती हो रत्नगर्भा, मैं तुम्हारी सहेली भी हूँ।"

यह कहने के साथ प्रभा ने रत्नगर्भा की आँखों पर से अपने हाथ हटा लिए। वह मन्द-मन्द मुस्कराती हुई उसके सामने आकर खड़ी हो गयी।

दोनों चन्दन की चौकियों पर जाकर बैठ गयी। ये चौकियाँ नक्काशी-दार थीं। ये गोल थीं। इनसे सुगन्ध आ रही थी।

बातचीत के सिलसिले में प्रभा ने रत्नगर्भा से कहा—"आज सन्ध्या वायु सेवन के लिए चलोगी न ?"

"हाँ चलना पड़ेगा प्रभा। किसी ने मुझे निमन्त्रण दिया है। वह मेरी प्रतीक्षा करेगा।"

"वह भी करोड़पति का बेटा है। उसके जलपोत चलते हैं। उसका व्यापार मिस्र से होता है। वह जौहरी है। इसीलिए हीरे की परख का वह दिन शीघ्र आये। जब इस हवेली के आँगन में शहनाई बजे। तुम्हारे मुखड़े पर लम्बा-सा घूँघट हो। आतिशबाजियाँ छूटें और तुम्हारी बारात आये।"

"प्रभा मुझे भय लगता है।"

"क्यों ?"

"पिता जी मेरा सम्बन्ध कहीं और करना चाहते हैं और उन्हें इसकी खबर नहीं।"

"तुम दीपक को अपना हृदय दे चुकी हो। उसने भी तुम्हारा हाथ अपने हाथ में लेकर यह प्रतिज्ञा की है कि हाथ पकड़ कर जीवन भर तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा। फिर वह सूरज है। तुम चन्दा हो। यह जोड़ी ऐसी रहेगी जैसी राधा मोहन की।"

दोनों में देर तक बात होती रही। जब साँझ आयी तो रत्नगर्भा रथ पर बैठी प्रभा भी उसके साथ थी। दोनों नगर के बाहर एक पुराने शिव मन्दिर की ओर जा रही थीं। वहीं दीपक ने रत्नगर्भा को बुलाया। दोनों नित्य सांझ वहीं मिलते। यह भेद केवल प्रभा व सारथी वसन्त को मालूम था।

रथ रास्ते से होकर गुजर रहा था। रत्नगर्भा ने परदे की ओट से देखा। पागल सड़क के किनारे-किनारे जा रहा था। इस समय वह मौन था।

रत्नगर्भा ने प्रभा से कहा—"आज पागल मौन है। कल कह रहा था कि तुम झरोखे की रानी हो। यह पागल आखिर है कौन प्रभा ?"

"सुनती हूँ यह बहुत धनी था। किसी नगरवधू ने इसके हृदय को चकनाचूर कर दिया। इसका हृदय टूट गया। यह उसी वेदना को लेकर पागल हो गया। इसका सब कुछ नष्ट हो गया और यह अकेला रह गया।"

"प्यार का सौदा बहुत महँगा पड़ता है। प्रभा मैं भी सोचती हूँ यदि दीपक मेरा जीवन साथी न बन पाया तो मेरी भी यही गति होगी। मैं भी पागल हो जाऊँगी।"

रथ नियत स्थान पर पहुँच गया। प्रभा बसन्त के पास आकर नीचे खड़ी हो गयी। रत्नगर्भा आगे बढ़ी। धीरे जा रही थी। उसकी चाल हंसिनी की थी। दूर से दो आँखें उसे देख रही थीं।

रत्नगर्भा मन्दिर के टूटे बुर्ज पर दीपक के साथ बैठ गयी। दोनों में बातें होने लगीं। प्रसंग ब्याह का था। दीपक कह रहा था—"मेरे पिताजी मिस्र के एक व्यापारी की बेटी से मेरा ब्याह कर रहे हैं। वह काहिरा में रहती है उसका नाम नीली है। अपने बाप के साथ वह आयी थी। मेरी हवेली में अतिथि बन कर रही।"

"तुम्हें नीली कैसी लगी ?"

"मैंने उसे दूर से देखा है मैं उसके पास नहीं गया।"

"क्यों ?"

"मेरे हृदय में जो एक छोटा-सा मन्दिर है, उसमें तुम बैठी हो रत्नगर्भा। तुम मेरे मन की रानी और हृदय की देवी हो। तुम्हीं मेरा संसार हो। तुम्हीं मेरा जीवन हो। तुम्हीं मेरी प्रियतमा हो।"

"तुमने मेरे मुँह की बात छीन ली दीपक। मैं भी यही कहना चाहती थी।"

"क्यों ?"

"तुम मेरी आँखों की ज्योति हो। मैं तुम्हारे नेत्रों से देखती हूँ तुम्हारे ही कानों से सुनती हूँ। यदि हम दोनों विवाह के पवित्र बन्धन में नहीं बँध पाये तो हमारा अन्त हो जायेगा। हम जीवित नहीं रह सकते। हमारा प्यार अपनी सीमा को पार कर चुका है।"

"प्रेम में भगवान होते हैं रत्नगर्भा। प्यार करना भगवान की पूजा

दोनों चन्दन की चौकियों पर जाकर बैठ गयी। ये चौकियाँ नक्काशी-दार थीं। ये गोल थीं। इनसे सुगन्ध आ रही थी।

बातचीत के सिलसिले में प्रभा ने रत्नगर्भा से कहा—"आज सन्ध्या वायु सेवन के लिए चलोगी न?"

"हाँ चलना पड़ेगा प्रभा। किसी ने मुझे निमन्त्रण दिया है। वह मेरी प्रतीक्षा करेगा।"

"वह भी करोड़पति का बेटा है। उसके जलपोत चलते हैं। उसका व्यापार मिस्र से होता है। वह जौहरी है। इसीलिए हीरे की परख का वह दिन शीघ्र आये। जब इस हवेली के आँगन में शहनाई बजे। तुम्हारे मुखड़े पर लम्बा-सा घूँघट हो। आतिशबाजियाँ छूटें और तुम्हारी बारात आये।"

"प्रभा मुझे भय लगता है।"

"क्यों?"

"पिता जी मेरा सम्बन्ध कहीं और करना चाहते हैं और उन्हें इसकी खबर नहीं।"

"तुम दीपक को अपना हृदय दे चुकी हो। उसने भी तुम्हारा हाथ अपने हाथ में लेकर यह प्रतिज्ञा की है कि हाथ पकड़ कर जीवन भर तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा। फिर वह सूरज है। तुम चन्दा हो। यह जोड़ी ऐसी रहेगी जैसी राधा मोहन की।"

दोनों में देर तक बात होती रही। जब साँझ आयी तो रत्नगर्भा रथ पर बैठी प्रभा भी उसके साथ थी। दोनों नगर के बाहर एक पुराने शिव मन्दिर की ओर जा रही थीं। वहीं दीपक ने रत्नगर्भा को बुलाया। दोनों नित्य साँझ वहीं मिलते। यह भेद केवल प्रभा व सारथी वसन्त को मालूम था।

रथ रास्ते से होकर गुजर रहा था। रत्नगर्भा ने परदे की ओट से देखा। पागल सड़क के किनारे-किनारे जा रहा था। इस समय वह मौन था।

रत्नगर्भा ने प्रभा से कहा—"आज पागल मौन है। कल कह रहा था कि तुम झरोखे की रानी हो। यह पागल आखिर है कौन प्रभा?"

"सुनती हूँ यह बहुत धनी था। किसी नगरवधू ने इसके हृदय को चकनाचूर कर दिया। इसका हृदय टूट गया। यह उसी वेदना को लेकर पागल हो गया। इसका सब कुछ नष्ट हो गया और यह अकेला रह गया।"

"प्यार का सौदा बहुत महँगा पड़ता है। प्रभा मैं भी सोचती हूँ यदि दीपक मेरा जीवन साथी न बन पाया तो मेरी भी यही गति होगी। मैं भी पागल हो जाऊँगी।"

रथ नियत स्थान पर पहुँच गया। प्रभा वसन्त के पास आकर नीचे खड़ी हो गयी। रत्नगर्भा आगे बढ़ी। धीरे जा रही थी। उसकी चाल हंसिनी की थी। दूर से दो आँखें उसे देख रही थीं।

रत्नगर्भा मन्दिर के टूटे बुर्ज पर दीपक के साथ बैठ गयी। दोनों में बातें होने लगीं। प्रसंग ब्याह का था। दीपक कह रहा था—"मेरे पिताजी मिस्र के एक व्यापारी की बेटी से मेरा ब्याह कर रहे हैं। वह काहिरा में रहती है उसका नाम नीली है। अपने बाप के साथ वह आयी थी। मेरी हवेली में अतिथि बन कर रही।"

"तुम्हें नीली कैसी लगी ?"

"मैंने उसे दूर से देखा है मैं उसके पास नहीं गया।"

"क्यों ?"

"मेरे हृदय में जो एक छोटा-सा मन्दिर है, उसमें तुम बैठी हो रत्न-गर्भा। तुम मेरे मन की रानी और हृदय की देवी हो। तुम्हीं मेरा संसार हो। तुम्हीं मेरा जीवन हो। तुम्हीं मेरी प्रियतमा हो।"

"तुमने मेरे मुँह की बात छीन ली दीपक। मैं भी यही कहना चाहती थी।"

"क्यों ?"

"तुम मेरी आँखों की ज्योति हो। मैं तुम्हारे नेत्रों से देखती हूँ तुम्हारे ही कानों से सुनती हूँ। यदि हम दोनों विवाह के पवित्र बन्धन में नहीं बँध पाये तो हमारा अन्त हो जायेगा। हम जीवित नहीं रह सकते। हमारा प्यार अपनी सीमा को पार कर चुका है।"

"प्रेम में भगवान होते हैं रत्नगर्भा। प्यार करना भगवान की पूजा

करना है जहाँ सच्चा प्यार होता है, वहाँ उसकी जीत अवश्य होती है।"

दोनों आशा व निराशा के भँवर में चक्कर लगा रहे थे। रत्नगर्भा का कहना था कि तुम पुरुष हो। अपने पिता से स्पष्ट कह दो कि तुम मुझसे ब्याह करोगे। मैं नारी जाति की हूँ। अपना संकोच नहीं छोड़ सकती वैसे मैं स्वयं अपने पिता से कह देती कि मैंने तुमको अपना जीवन साथी चुन लिया है।

दीपक मौन था। उसका साहस साथ नहीं दे रहा था कि वह अपने पिता से भेद की बात कैसे बताये।

कुछ भी निर्णय नहीं हो पाया। रथ वापस लौट पड़ा। रात हो आयी थी।

दीपक का घोड़ा एक आम के पेड़ से बँधा था। यह अरब के सौदागर से पूरे पाँच हजार का खरीदा गया था। यह सफेद अरबी घोड़ा था। इसकी चाल प्रसिद्ध थी। इसे देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते।

दीपक ने घोड़े की पीठ थपथपायी। उसने रकाब पर पैर रखा। घोड़ा हवा में उड़ने लगा। उसकी चाल तेज हो गयी। नगर की पक्की सड़क पर उसकी टापें बजने लगीं।

सेठ राधा मोहन की हवेली नगर में प्रसिद्ध थी। दरवाजे पर बड़ा-सा फाटक लगा था। अन्दर हवेली के आँगन में हाथी बँधा था। उसके गले में घण्टा बँधा था जो कभी-कभी बज उठता।

राधा मोहन के एक ही पुत्र था। व्यापार करोड़ों का था। वे मिस्र से माल मँगवाते, उनका माल भी मिस्र देश जाता। नगर के प्रमुख बाजार में उनकी हीरे-जवाहरात की दुकान थी। वे अपने बेटे का ब्याह मिस्र के सौदागर और कई जलपोतों के स्वामी आमेन की बेटी नीली के साथ करना चाहते थे। यह नीली अपने भवन में नीलोफर कही जाती थी।

राधा मोहन की अवस्था चालीस को पार कर चुकी थी। वे संभ्रान्त नागरिक थे। भद्र पुरुष कहलाते थे। उनकी गणना प्रमुख व्यक्तियों में थी।

जब युवा अवस्था थी तब राधा मोहन रंगीनियों से खेले। उनका लगाव एक नगरवधू से था। उस नगरवधू का नाम कमला था। वह कमल के

समान ही सुन्दर थी।

कमला की हवेली बहुत बड़ी थी। लगभग सौ सेवक व सेविकाएँ उसकी सेवा में नियुक्त रहतीं। वह दिन में कई परिधान बदलती। प्रातः उसे श्वेत वस्त्र में देखा जाता मध्याह्न की बेला में वह रेशमी कपड़े पहनती, फिर जब साँझ आती तो वह चन्दा की चाँदनी बन जाती। उसके भीने व बारीक वस्त्र उसे प्रदर्शन की पुतली बना देते। उन कपड़ों में उसका अंग प्रत्यंग स्पष्ट दृष्टिगोचर होता।

कमला का राधा मोहन से प्यार हो गया था। कहने के लिए वह नगर-वधू थी। लेकिन वह किसी से भी नहीं मिलती। जो पुरुष उसके सम्पर्क में आना चाहता उसे मना कर देती। राधा मोहन का ब्याह हो जाने पर भी वह उन्हीं की पूजा करती रही। उसने पुत्र को जन्म दिया जिसके पिता राधा मोहन थे।

वह पुत्र कमला ने अपने पास नहीं रखा उसे विश्वासपात्र दासी के साथ एक अज्ञात स्थान पर रख दिया। उसका लालन-पालन राजकुमारों की तरह होने लगा। उसका नाम गौरव रखा गया। वह दासी वनमाला को ही अपनी माँ समझता। जब वह बड़ा हुआ तो अपने लिए समझने लगा कि वह मुँह में चाँदी का चमचा लेकर पैदा हुआ है।

यह भेद राधा मोहन जानते थे। उन्होंने कमला से प्रतिज्ञा की थी। उसे वचन दिया था कि गौरव पर वे पैसा पानी की तरह बहायेंगे। किन्तु उसे जीवन में यह कभी न मालूम होना चाहिए कि वह नगर वधू के पेट से जन्मा है और उसका पिता मैं हूँ।

गौरव ने जब युवा अवस्था में पदार्पण किया तो वनमाला ने उसे बतलाया कि उसके पिता लखपति ही नहीं करोड़पति थे। वे मिस्र देश से व्यापार करते थे। उनके पास असीम धन था। अचानक हृदय गति रुक जाने से उनकी जवानी में ही मौत हो गयी थी।

गौरव की सूरत शहर के राधा मोहन से बिल्कुल मिलती थी। वह गौर-वर्ण का था युवतियाँ जब उसे देखतीं तो अपने कलेजे पर हाथ रख लेतीं। वह श्याम वर्ण अरबी घोड़े पर सवारी करता, वह नगर के चौराहे पर जाकर पान खाता। उसके एक पान का बीड़ा लगभग सौ रुपये का होता। इस पान

के बीड़े में केसर होती। कस्तूरी महकती। इसमें चांदी का वर्क लगा होता। इसमें सोने का भस्म होता।

सुगन्धित द्रव्यों से गौरव का बदन हमेशा सुवासित रहता। वह जिधर से निकल जाता उधर से ऐसा लगता कि हवा में सुगन्ध आ गयी है।

गौरव को लोग देखते तो आपस में एक दूसरे से कहने लगते कि यह राजकुमार है। यह धन से खेलता है। इसके भाग्य का सितारा सातवें आसमान चमक रहा है।

अन्त में लोग मुस्करा देते और कहने लगते कि अपना-अपना भाग्य है। कोई पथ पर हाथ पसारता है कोई खुले हाथ से दान करता है। नीचे धरती है और ऊपर आकाश। यही तो कहा जाता है कि दो फूल साथ-साथ खिले लेकिन उनकी तकदीर जुदा है। एक वेश्या के जूड़े पर बाँधा जाता है। दूसरा भगवान पर चढ़ाया जाता है।

असमंजस

रत्नगर्भा के पिता नगर के धनी व्यक्ति थे। उनकी ऊँची अट्टालिका थी। वैभव की बरसात उनके आंगन में होती। वे बहुत सुखी थे। उनकी परम सुन्दरी कन्या थी जो इकलौती थी।

रत्नगर्भा के पिता का नाम मानिक चन्द था। उनकी कपड़े की बड़ी दूकानें थीं। उनमें रेशमी, ऊनी और सूती वस्त्र बिकते। उनका बहुत बड़ा संग्रह था। मानिक चन्द अपनी बेटी का सम्बन्ध ऊँचे घराने में करने की सोच रहे थे। उन्होंने एक घर देखा था। जहाँ लक्ष्मी-ही-लक्ष्मी थी उसके जहाज सिन्धु नदी में ही नहीं, सागर में चलते। उसका अकेला लड़का था आमदनी बहुत अच्छी थी।

मानिक चन्द भी अधेड़ हो चले थे। जब उनकी जवानी के दिन थे वे भी नगर वधू कमला की हवेली के चक्कर काटते, वहीं एक युवक और आता

था, उसका नाम घनश्याम था। वह कमला का दीवाना था, उसका कहना था कि अगर कमला उसे प्राप्त नहीं हुई तो वह जीवन समाप्त कर देगा। या फिर पागल हो जाएगा।

मानिक चन्द रत्नगर्भा के कमरे में आये। तब रत्नगर्भा आदमकद आइने के सामने खड़ी थी। वह शीशे में खड़ी दूसरी रत्नगर्भा से बातें कर रही थी।

सहसा पिता की सूरत शीशे में देखी तो वह चौंक गयी। उसे लाज लगी। संकोच ने उसकी दृष्टि नीचे झुका दी और वह घूम कर खड़ी हो गयी और अपनी साड़ी के छोर को बायीं अनामिका पर लपेटने लगी।

मानिक चन्द एक रत्न जड़ित कुर्सी पर बैठ गये। वे पुत्री से बोले—"तुम्हारी माँ भगवान को प्यारी हो गयी बेटी। मैंने दूसरा विवाह इसलिए नहीं किया कि तुम्हें कष्ट मिलता। कहा जाता है कि जब माँ दूसरी हो तो बाप तीसरा बन जाता है। तुम्हें मैंने बेटी और बेटे के रूप में हमेशा देखा है। तुम मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी हो। तुम्हें देख लेता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि मुझे संसार की बहुत बड़ी निधि मिल गयी है। आज मैं तुमसे कुछ परामर्श करने आया हूँ।"

रत्नगर्भा ने चौकी ले ली। वह पिता के सामने बैठ गयी। उनकी दृष्टि अनगिनत थी।

मानिक चन्द धीरे से बोला, "पहले तो मैंने सोचा था कि ऐसे लड़के से तुम्हारा विवाह करूँगा जो घर जवाँई बन कर रह सके। लेकिन धनी परिवार का कोई भी बाप अपना बेटा इस तरह मुझे नहीं देगा। इसलिए सन्तोष कर लिया तुमने सुना होगा कुन्दन लाल करोड़ पति हैं। उनका एक बेटा है। मैं तुम्हारा सम्बन्ध वहीं करना चाहता हूँ।"

रत्नगर्भा ने बाप की ये बातें सुनीं वह उठकर दूसरे कमरे में चली गयी।

मानिक चन्द समझ गये, लड़की समझदार है, सयानी हो गयी है उसे लाज आती। उसमें संकोच है तभी चली गयी, आमने-सामने कोई उत्तर नहीं दिया।

मानिक चन्द अपने कक्ष में चले गये। उन्होंने प्रभा को बुलवाया। उसे

सारी बात समझायी व फिर कहा—"रत्नगर्भा से पूछ कर मुझे उत्तर दो मैं जानना चाहता हूँ कि उसकी राय क्या है ?"

प्रभा जो उत्तर लायी वह इस तरह था, "मैं यह ब्याह नहीं कर पाऊँगी। मैंने राधा मोहन के पुत्र दीपक को अपना वर चुना है। यदि यह ब्याह नहीं हुआ तो मैं आजीवन कुमारी रहूँगी।"

मानिक चन्द ने सुना तो उनके तन बदन में आग लग गयी। वे क्रोध से झल्ला उठे और रोष भरे शब्दों में कहने लगे—"राधा मोहन को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। जिस लड़के का बाप वेश्यागामी हो, उसका बेटा कैसे अच्छा हो सकता है। यह ब्याह कभी नहीं होगा। मैं ऐसी भूल कभी नहीं करूँगा।"

मानिक चन्द ने यह कहा। फिर अंगारों पर पैर रखते हुए कमरे से बाहर निकल गये।

पीछे दीवाल की ओट में खड़ी रत्नगर्भा ने भी सुना था। वह रोने लगी। उसके आंसू धार बन कर बह रहे थे। वह असमंजस में पड़ गयी।

इस तरह घर का वातावरण उदास हो गया। रत्नगर्भा की सारी खुशियाँ विलीन हो गयी। मानिक चन्द कपड़े की कोठी पर आये, लेकिन उनका मन वहाँ नहीं लग रहा था। वे दिन भर यही सोचते रहे कि भविष्य में ऊँट किस करवट बैठेगा। उन्होंने क्या सोचा था और क्या हो गया।

मानिक चन्द सोच रहे थे कि राधा मोहन को हमेशा उन्होंने स्पर्धा की दृष्टि से देखा है। नगरवधू कमला को लेकर उनके प्रतिद्वन्द्वी रह चुके हैं। वे उनके प्रत्यक्ष में नहीं तो परोक्ष में शत्रु हैं।

मानिक चन्द दूसरी बात सोच रहे थे कि लड़की रत्नगर्भा पागल हो गयी है। उसका कहना है कि अगर दीपक के साथ उसका ब्याह नहीं हुआ तो वह आजीवन कुमारी रहेगी। यह कैसी विडम्बना है। वाह रे भाग्य ! तू मनुष्य को कैसे नाच नचाता है। तू जादूगर है। हँसी को उदासी में बदल देता है। तेरा भेद कोई नहीं जानता, फकीरों का कहना बिल्कुल सच है कि यह दुनिया तकदीर की लकीरों से बँधी है।

दिन आगे बढ़ रहा था। सवेरे उसका बचपन था। दोपहर को वह जवान हुआ। तीसरे पहर मानो उसकी उम्र ढली, साँझ को बूढ़ा हो गया।

अब रात आ गयी थी। आसमान तारों से भर गया। मानिक चन्द घर आ गये। उन्होंने सेवकों को मना कर दिया कि आज वे कुछ नहीं खायेंगे। उन्हें भूख नहीं है।

इधर यह परिस्थिति थी और उधर घर रत्नगर्भा ने भी कुछ नहीं खाया वह साँझ को हवाखोरी के लिए भी न गयी। घर में उदास लेटी रही। दीपक के पास प्रभा को भेज दिया था। वह झूठा सन्देश दे आयी कि बिटिया की तबियत आज अच्छी नहीं। उन्हें सवेरे से ज्वर है स्वस्थ होने पर ही वे आपसे मिलने आयेंगी।

वह रात दीपक ने न जाने कैसे काटी सवेरे वह सोचने लगा कि जब मानिक बाबू दूकान पर चले जायेंगे तो वह रत्नगर्भा के घर जायेगा व उससे मिलेगा।

दोपहर का सूरज बीचोंबीच आसमान पर पहुँच चुका था उसकी सीधी किरणें धरती पर पड़ रही थी। तभी दीपक ने रत्नगर्भा के घर में प्रवेश किया। प्रभा उसे सम्मान के साथ अपनी बिटिया रानी के कक्ष में ले आयी।

दीपक ने देखा रत्नगर्भा बिस्तर पर लेटी है उसका चेहरा उतरा हुआ उदास है। वह दीपक को देखते ही उठ कर बैठ गयी। उसके मुँह से निकला —"तुमने क्यों कष्ट किया दीपक? मैं स्वयं आती।"

"मेरा मन न माना इसीलिए चला आया, कहो अब कैसी तबियत है?"

"तबियत का हाल मत पूछो।"

"क्यों?"

"यह कभी ठीक नहीं होगी। मुझे असाध्य रोग लग गया है। अब तुम मुझे भूल जाओ।"

"कैसी बहकी-बहकी बातें कर रही हो रत्नगर्भा?"

"तुम्हें मेरी शपथ है दीपक, मुझे भूल जाओ अपना ब्याह कर लो, मैं तुम्हारी जिन्दगी में कभी नहीं आऊँगी।"

"मुझसे कोई भूल हो गयी है क्या?"

"भूल तुमसे नहीं हुई।"

"फिर क्या बात है ?"

"तकदीर मुझसे रूठ गयी है। उसने फैसला किया है कि मुझे तुम्हारी नहीं बनने देगी।"

"ऐसा क्यों ?"

"कैसे कहूँ ?"

यह कहने के बाद रत्नगर्भा ने आदि से लेकर अन्त तक की सारी कथा दीपक को सुना दी। उसके पास कोई उत्तर नहीं रहा। वह गहरे सोच में डूब गया।

दीपक अपनी हवेली आ गया। वह बिस्तर पर लेट गया और सोचने लगा कि वह अपने पिता को धर्मात्मा समझता था। लेकिन मानिक चन्द का कहना है कि वे वेश्यागामी रह चुके हैं। क्या पिताजी ने यह भूल अपनी जवानी में की थी ? यदि उन्होंने यह पाप किया था तो उसका प्रायश्चित्त किया या नहीं ?

दीपक सोचता रहा। वह हैरानी में सोचता रहा, सोचता रहा। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उसे लग रहा था कि धरती घूम रही है। आसमान नीचे उतरता आ रहा है। जिस कमरे में वह लेटा है उसकी छत भी घूम रही है।

दीपक के मस्तिष्क में उलझन-ही-उलझन। वह अपने पर संयम नहीं कर पा रहा था। उसे लग रहा था कि अगर ऐसी ही स्थिति रही तो वह पागल हो जायेगा।

परिचय

नीली अपने पिता आमेन के साथ मोहनजोदड़ो नगर घूमने निकली। वह मिस्र की राजधानी काहिरा में रहती थी। जिसके लिए उस समय कहा जाता कि वह संसार का गौरवशाली नगर है। वहाँ धन-ही-धन है। वहाँ

के दिन सोने के होते और रातें चाँदी की।

नीली को मोहनजोदड़ो बहुत अच्छा लगा, नगर हँस रहा था। उसकी सड़कें ऐसी लगतीं मानो उन्होंने शृंगार किया हो। उसके बाजार बहुत ही सुन्दर व रमणीक थे। उसके भवन इतने ऊँचे थे कि आकाश से बातें करते।

नीली ने सुना था कि नगर मोहनजोदड़ो के स्नानघर देखने योग्य हैं। वह एक स्नानघर में पहुँची। यह पुरुष स्नानघर था। प्रातः का समय था। वहाँ अलग-अलग घाटों पर पुरुष नहा रहे थे।

तब नीली के पिता आमेन बाहर एक ज्योतिषी के पास रुक गये थे। उन्होंने पुत्री को आज्ञा दे दी कि वह स्नानघर देख कर शीघ्र ही वापस लौट आये।

आमेन की रुचि भारतीय ज्योतिष में बहुत पहले से थी। वह ज्योतिषी से जानना चाहता था कि उसकी पुत्री नीली का ब्याह दीपक के साथ होगा या नहीं।

इधर आमेन ज्योतिषी से बातें कर रहा था और उधर नीली एक बुर्ज पर बैठी थी। वह उस मनोरम संगमरमर के सफेद तालाब को देख रही थी जिसमें पुरुष डुबकियाँ लगाते और स्नान कर रहे थे।

नीली ने देखा कि एक गौरवर्ण का युवक तालाब में स्नान कर रहा है। उसने ऐसा युवक आज तक अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। उसकी आँखें उस पर टिक कर रह गयी और वह उसे एकटक देखने लगी।

ऐसे में ही उसकी युवक से आँखें चार हो गयीं। उसने भी नीली को देखा और चौंका। उसने जल्दी-जल्दी स्नान किया और फिर कपड़े बदल कर नीली के पास आकर बैठ गया। उसकी उत्सुकता बढ़ रही थी। इसी-लिए संकोच त्याग कर उसने नीली से पूछ लिया—"शायद आप भारतीय नहीं हैं।"

नीली भारतीय भाषा आसानी से बोल लेती थी। वह धीरे-से बोली —"आपने कैसे जाना?"

युवक मुस्करा दिया। वह नीली को ऐसे देख रहा था जैसे कि वह कोई दर्शन की वस्तु हो। वह उसकी आँखों में झाँकता हुआ मृदु स्वर में कहने

लगा। पहली बात तो यह है कि इस नगर की स्त्रियाँ पुरुष स्नानगृह में कभी नहीं आती।"

"और दूसरी बात!"

नीली बड़े बाप की बेटी थी। उसने संकोच नहीं किया। इसलिए युवक से तत्क्षण ही पूछ लिया।

"दूसरी बात यह है कि आपकी वेष-भूषा यह बतला रही है कि आपने भारतीय लिबास अवश्य पहना है। मगर वह आपको विदेशी बतला रहे हैं।"

युवती मुस्करायी। वह आनन्द विभोर हो गयी। उसकी रुचि युवक के प्रति और अधिक बढ़ गयी। उसने सहज स्वर से उत्तर दिया—"आपका कहना बिल्कुल सही है। मैं मिस्र देश में रहती हूँ। वहाँ की राजधानी काहिरा मेरा नगर है। मेरे पिता आमेन हैं। वे भी भारत आये हैं। उनके समुद्र में जहाज चलते हैं। वे रुई और कपास का व्यापार भी करते हैं। उनका भारत के साथ आयात और निर्यात होता रहता है।"

"तो आप हमारे देश में भ्रमण के लिए आयी हैं।"

"हाँ।"

"आपका नाम।"

"मुझे नीली और घर में सब लोग नीलोफर कहते हैं। क्या मैं आपका परिचय जान सकती हूँ?"

"क्यों नहीं मुझे गौरव कहते हैं। मैं इसी नगर में रहता हूँ। मेरी अपनी हवेली है। मेरे लगभग बीस नौकर हैं।"

"आपके पिता क्या करते हैं?"

"पिता को मैंने नहीं देखा। माँ कहती हैं कि जब मैं गोद में था तभी वे चल बसे थे।"

"आप काम क्या करते हैं?"

"मैंने आज तक कोई काम नहीं किया और न मुझे काम करने की जरूरत है।"

"ऐसा क्यों"

"पिताजी अपने पीछे करोड़ों की सम्पदा छोड़ गये हैं। मैं धन से खेलता,

हूँ धन मेरे लिए खिलौना है।"

"आदमी को कुछ जरूर करना चाहिए, यह बहुत जरूरी है। जब आमदनी नहीं होगी तो एक दिन संचित धन खत्म हो जायेगा।"

"माँ का कहना है कि उन्होंने अपना बहुत-सा रुपया अलग-अलग व्यापारों में लगा रखा है। वे व्यापारी ईमानदार हैं। माँ को सही हिसाब देते। इस तरह पूरे साल-भर में वे करोड़ दो करोड़ रुपया जरूर कमा लेती हैं।"

"आपको चाहिए कि आप अपना स्वयं काम देखें। माँ पर अधिक बोझ डालना उचित नहीं है।"

"मैं तो बहुत कहता हूँ। लेकिन माँ मुझे कुछ भी नहीं बतलाती कि किस व्यापारी के पास उनका रुपया लगा है और कितना है। वे मुझे कहती हैं अभी तेरे खेलने और खाने के दिन हैं। अभी से सिर पर लेगा तो तेरी चिन्ता बढ़ जायेगी। मैं अकेला हूँ और अपनी माँ की पहली सन्तान हूँ।"

"यह बहुत अच्छा है तभी आप बेफिक्र हैं और आपको कोई चिन्ता नहीं है।"

"और नीली तुम कितने भाई-बहन हो?"

"मैं भी आपकी तरह अकेली हूँ।"

"तुम्हारे पिता यहाँ कहाँ ठहरे हैं?"

"वे एक व्यापारी के अतिथि हैं।"

"तुम यहाँ अकेली आयी हो?"

"मेरे पिता स्नानघर के बाहर एक ज्योतिषी के पास बैठे हैं। वे भारतीय ज्योतिष पर बहुत विश्वास करते हैं।"

स्नानघर में भीड़ बढ़ती जा रही थी। हर आदमी इन दोनों की ओर चौंकती निगाहों से देखता। नीली और गौरव में हँस-हँस कर बातें हो रही थीं। अब दोनों का संकोच छूट गया। वे एक-दूसरे को तुम कह कर पुकारने लगे। दोनों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ा। वे स्नानघर से बाहर आ गये। नीली ने दूर से देखा कि उसके पिता आमेन अब भी ज्योतिषी के पास बैठे थे। उसने गौरव को बताया, वह लगभग एक सप्ताह तक मोहनजोदड़ो में रहेगी।

गौरव ने पूछा कि तीसरे पहर वह उसे कहाँ मिलेगी ? इस पर नीली मुस्करायी और मुक्त कण्ठ से कहने लगी—"तुम चाहो तो मेरे अतिथि गृह में आ सकते हो। मैं पता बतलाती हूँ, वहाँ मैं तुम्हारा स्वागत करूँगी। मैं प्रतीक्षा करूँगी। बोलो आओगे ?"

गौरव अपने को भाग्यशाली समझ रहा था। उसने अपनी परिस्थिति स्पष्ट कर दी। वह बोला, "जरूर आऊँगा। मैं भी तुम्हें अपनी हवेली में बुलाता लेकिन मुझे संकोच लगा है कि माँ क्या कहेंगी ?"

"इसका मतलब यह हुआ कि तुम अपनी माँ से शरमाते हो ?"

"शरमाना पड़ता है मेरा स्वभाव बन गया है। यदि तुम चाहो तो तीसरे पहर युवक क्रीड़ा गृह में आ जाना, वहाँ हम लोग बैठेंगे। बातें करेंगे हमारा मन बहलेगा।"

"यह क्रीड़ा घर कहाँ है ?"

"यह नगर के पूरब की ओर है।"

"वहाँ क्या होता है ?"

"वहाँ कोई चौपड़ खेलता है, कोई सितार बजाता है, कोई गेंद खेलता है, किसी को उछल-कूद का खेल पसन्द है। इस तरह जिसके जो मन में आता वह वही खेलता है। वहाँ खेलने की पूरी सुविधाएँ प्राप्त हैं।"

"अच्छा पहले तुम मेरे पास आना। फिर मैं तुम्हारे साथ चलूँगी और देखूँगी कि वह क्रीड़ा घर कैसा है ?"

इसके बाद नीली अपने पिता के पास पहुँच गयी। गौरव दूसरी तरफ चल दिया।

गौरव बहुत प्रसन्न था। उसका हृदय तीव्र गति से धड़कने लगा था। उसे अपार आनन्द की अनुभूति हो रही थी। नीली उसकी आँखों में ही नहीं उसके मन और मस्तिष्क पर छा गयी थी। वह उसे एक क्षण के लिए भूल नहीं पाता।

यही हाल नीली का था। उसने अपने जीवन में ऐसा आकर्षक युवक आज तक नहीं देखा था। उसने दीपक को भी देखा था मगर उसकी दृष्टि में दीपक जमीन था और गौरव आसमान।

आमेन को ज्योतिषी ने बतलाया कि दीपक के साथ नीली का ब्याह

कभी नहीं हो पायेगा। इसमें बाधाएँ आयेंगी।

बहुत पूछने पर ज्योतिषी ने बतलाया कि नीली की शादी ऐसे युवक से होगी जो एक नगरवधू का पुत्र होगा। इस सम्बन्ध को किसी तरह भी रोका नहीं जा सकता। यह होकर रहेगा। वह जो वर पसन्द करेगी वही उसका जीवन साथी बनेगा।

इससे आमेन की हैरानी बढ़ गयी। उसने ज्योतिषी को दक्षिणा दी और उठ कर खड़ा हो गया।

ऐसे में नीली बाप के सामने आ गयी। वह मुस्करा रही थी। आमेन उसके साथ चल दिया। रास्ते में वह सोचता जा रहा था कि अगर मैं ज्योतिषी से न पूछता तो मुझे कोई चिन्ता नहीं होती। मेरी उलझन बढ़ गयी और यह चिन्ता होने लगी है कि एक वेश्यापुत्र के साथ मेरी बेटी का ब्याह होगा।

आमेन ने यह बात नीली को नहीं बतलायी। दोनों अपने ठहरने के स्थान पर आ गये। नीली प्रफुल्लित थी और आमेन के चेहरे पर उदासी के बादल छा रहे थे।

जिस व्यापारी की अतिथिशाला में आमेन ठहरा था उसने उसकी सुविधा के लिए अपने चार नौकर नियुक्त कर दिये थे। जैसे ही बाप बेटी पहुँचे, उन्हें पीने के लिए चांदी के गिलासों में शीतल जल दिया गया। उन पर पंखे से हवा की जाने लगी। मिस्र के मखमली कालीन बिछे थे। उन पर गुलगुले गाव तकिये रखे थे। दोनों के सामने सूखे और हरे मेवे तथा पकवान आ गये।

हरी मेवा में कच्चे नारियल की गिरी थी, अंगूर थे। अमरूद थे। केले की पकी हुई फलियाँ थीं। सूखे मेवे छुहारे मखाने, किसमिश, चिरौंजी और अखरोट थे।

पकवान दो तरह के थे नमकीन और मीठे। मीठे पकवानों में रसगुल्ले थे, मोतीचूर के लड्डू, बालूशाही, सोहन हलुवा और कलाकन्द की गजी बर्फी।

नमकीन पकवानों में बेसन व मैदा के पदार्थ थे। यह मोटे और महीन शेव पावड़ी स्वहार आदि थे।

नीली ने बाप को मौन देखा वह देर से उसकी चिन्तित मुद्रा देख रही थी। इसलिए व्यस्त स्वर में पूछने लगी—"आप क्या सोच रहे हैं पिताजी? शायद ज्योतिषी ने आपका मस्तिष्क खराब कर दिया है? आप पूछने गये होंगे कि आपका व्यापार कैसा चलेगा? आपके कोई पुत्र होगा या नहीं। मेरा ब्याह किसके साथ होगा? उसी ज्योतिषी ने आपकी चिन्ता बढ़ा दी है तभी आप उदास हैं।"

आमेन की मुद्रा गम्भीर थी। लेकिन वह पुत्री की बातें सुनकर हँसा और हँसता हुआ धीरे से कहने लगा—"तू किसी ज्योतिषी से कम है क्या?"

"हाँ पिताजी आपके आशीर्वाद से मैं मनुष्य का चेहरा देखकर उसके मन के भाव समझ जाती हूँ। मुझे भी आपके साथ रहते-रहते कुछ अनुभव हो गया है। हाँ तो बतलाइए कि क्या सोच रहे हैं?"

"सोच रहा था कि नीली आज तीसरे पहर तुझे लेकर राधा मोहन की हवेली चलूँगा वे मेरे व्यापारी मित्र हैं।"

"मुझे वहाँ ले जाकर क्या करेंगे?"

"कुछ काम है मैंने उन्हें समय दिया है वे मेरी प्रतीक्षा करेंगे।"

अब नीली धर्मसंकट में पड़ गयी। लेकिन तीसरे पहर की बेला में गौरव को बुलाया था वह उससे मिलने को उत्सुक हो रही थी। उसका मन उससे कह रहा था कि तुम्हें गौरव से प्यार हो गया है। प्यार किया नहीं जाता वह अपने आप ही हो जाता है। यह उसका स्वभाव है।

प्रसंग वहीं समाप्त हो गया। नीली गहरे सोच में डूब गयी थी। अपने मन के भाव छिपाने के लिए उठ कर खड़ी हो गयी। सामने खुली छत थी। ये लोग दूसरी मंजिल पर ठहरे थे। जालीदार लगभग तीन हाथ ऊँची मुंडेर थी। उस पर सुगन्धित और रंग-बिरंगे फूलों के गमले रखे थे। नीली एक बेला के पास आ गयी, उसने कुछ फूल तोड़े और उन्हें सूँघने लगी।

निराशा

तब यन्त्रचालित घड़ियों का आविष्कार नहीं हुआ था। अधिकांश लोग धूप घड़ी को ही अपने प्रयोग में लाते थे। जिनके पास इस धूप घडी का कोई साधन नहीं होता ऐसे ही जो शिक्षित व सम्भ्रान्त नहीं होते, वे कहते कि अब दिन का पहला पहर बीत गया। दोपहर होने वाली है। सूरज को बीच आकाश में देखते तो कहने लगते कि ठीक दोपहर है। ऐसे ही तीसरे पहर और साँझ की पहचान भी कर लेते। रात में तारों को देखते उससे ही अनुमान लगा लेते कि यह रात का पहला पहर है। आधी रात हो गयी है। और अब सवेरा होने वाला है।

धनिकों के घर में धूप घड़ी लगी रहती। ये इस घड़ी से दिन में समय का बोध करते। रात में पानी की घड़ी प्रयोग में लाते। वह इन्हें समय बतलाती।

धूप घड़ी इस तरह की होती कि वह खुली जगह में बीचोबीच ऊँची-सी लकड़ी के रूप में गाड़ दी जाती। दिन में चार पहर होते। इसलिए उस पर जो छतरी लगायी जाती। उसमें चार लोहे की तीलियाँ होतीं। जब पहली तीली पर छाया आती, तो कहा जाता कि पहला पहर बीत गया। दूसरी दोपहर बतलाती, तीसरी तीसरा पहर चौथी तीली साँझ होने की प्रतीक थी कि दिन का यह चौथा पहर है।

पानी की घड़ी रात में काम लायी जाती। एक बड़े से चौड़े मुँह के पात्र में ऊपर तक पानी भर दिया जाता। इसमें एक बड़ा-सा कटोरा ऊपर तैरता रहता। यह कटोरा ताँबे का होता, बहुत हल्का बनाया जाता। इसकी पेंदी में बीचो बीच में एक छोटा-सा सुराख होता। यह छेद इतना महीन होता कि इसमें सुई भी कठिनाई से जाती। कटोरे में धीरे-धीरे पानी भरता रहता। चौथाई कटोरा भरने पर कहा जाता कि चौथाई पहर बीत गया। आधे कटोरे का पानी आधा पहर बतलाता, फिर जब कटोरा पूरी तरह भर कर पानी में डूब जाता तो लोग कहने लगते कि एक पहर बीत गया है।

गौरव धूप की घड़ी देख रहा था। उसे नीली के पास जाने की जल्दी

हो रही थी। उसने सेवकों को आदेश दिया कि वह फिर स्नान करेगा। उस स्नान के जल में केवड़ा और गुलाब जल डाला जाये। इससे पहले गौरव ने चिरौंजी पीस कर उसका उबटन लगवाया। इस उबटन में चिरौंजी के साथ केसर थी। इसमें शुद्ध चमेली का तेल मिला कर इसे गीला किया गया।

स्नान के बाद गौरव ने अपने बालों में सुगन्धित आँवले का तेल डाला। वह बड़े से शीशे के सामने खड़ा हुआ। उसके बाल काले थे, घुँघराले थे। उसने कंघी से उन्हें काढ़ा। यह कंघी हाथी दाँत की थी।

गौरव ने श्वेत-बारीक मिश्र की रुई से बनी हुई बढ़िया धोती पहनी उसका कुर्ता रेशमी था। यह रेशम चीन से आयात होता। इसके बुनने के करघे मोहनजोदड़ो में लगे थे। कुर्ते के बटन सोने के थे। सभी पर हीरे की कलियाँ जड़ी थी। उसने पैरों में जरी के काम के मखमली जूती पहने। यह लाल और हरे थे। देखने में बहुत आकर्षक लगते।

गौरव के गले में हमेशा हीरे की माला पड़ी रहती। कानों में कुण्डल भी पहनता। जो हीरे या पन्ना के होते। अंगूठियाँ दोनों हाथों में कई थीं। यह सोने की थी। किसी पर पोखराज जड़ा था किसी पर हीरा, किसी पर नीलम था, तो किसी पर पन्ना।

गौरव नियत समय पर हवेली से निकला। घोड़े पर सवार हुआ। सबसे पहले पान की दुकान पर आया व उसका बीड़ा मुँह में दबा लिया।

फिर गौरव अपने गन्तव्य की ओर चल दिया। घोड़ा उसने बाहर एक खम्भे से बाँध दिया। पता लगाता हुआ वह सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आया।

वहाँ मालूम हुआ कि नीली और आमेन दोनों कहीं घूमने गये हैं।

गौरव को गहरा धक्का-सा लगा। उसकी सारी प्रसन्नता उदासी में बदल गयी। वह हतबुद्धि-सा देर तक वहीं पर खड़ा रहा। वह सोच रहा था कि नीली की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है। क्या वह कितनी देर में वापस लौटें? ऐसे ही गौरव सोचता। जब नीली ने मुझे मिलने का समय दिया था तो फिर यहाँ से चली क्यों गयी? शायद वह अपने पिता की आज्ञा टाल नहीं पायी। इसीलिए विवश हो गयी होगी। कोई बात नहीं। मैं कल सवेरे ही सवेरे आ जाऊँगा और उससे मिलूँगा।

इस तरह निराशा का घूंट पीकर गौरव वहां से चला आया। उसका सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया। उसमें उदासीनता आ गयी और वह अनुभव करने लगा कि शायद कुछ अस्वस्थ है।

इधर गौरव आशा लेकर आया था। निराशा लेकर लौटा और उधर आमेन नीली के साथ राधा मोहन की हवेली पहुँच गया था।

राधा मोहन आमेन की प्रतीक्षा कर रहे थे उन्होंने अपने पुत्र दीपक को आदेश दिया था कि तीसरे पहर वह कहीं नहीं जायेगा। हवेली में ही रहेगा।

किन्तु दीपक इससे पहले ही चला गया। उसे रत्नगर्भा से मिलना था। इसीलिए वह मानिक चन्द की हवेली पहुँच गया।

राधा मोहन नौकरों पर बिगड़ रहे थे कि दीपक कहाँ चला गया? वह बतला कर क्यों नहीं गया? कितनी देर में आयेगा।

सभी सेवक मौन थे। बेचारे चुपचाप सिर झुकाये खड़े थे। किसी में इतना साहस नहीं था कि वह जाते हुए दीपक से पूछता कि छोटे स्वामी कहाँ जा रहे हो। और कब आओगे?

तीसरा पहर साँझ में बदल गया। हवेली झाड़-फानूसों की रोशनी में जगमगाने लगी। राधा मोहन पूरी तरह निराश थे कि दीपक अब तक नहीं लौटा था। वे आमेन के सामने लज्जित थे। उसे दूसरे दिन आने का निमन्त्रण दिया। हवेली के फाटक तक दोनों बाप-बेटी को भेजने गये।

इधर दीपक रत्नगर्भा से फिर मिला। रत्नगर्भा सहम गयी। वह भयभीत होकर दीपक से कहने लगी—"तुम्हें मना किया था दीपक! मेरी हवेली पर मत आया करो। अगर पिताजी को इस बात का पता लग गया तो मैं उन्हें कुछ भी उत्तर नहीं दे पाऊँगी। उन्हें क्रोध बहुत जल्दी आता है। और उनका गुस्सा खराब है।"

दीपक का सीधा सा व सरल उत्तर था—"मैं कहीं और जाने के लिए निकला था रत्नगर्भा, मगर पैर इधर घूम गये और मैं तुम्हारी हवेली आ गया। मैं जान-बूझ कर नहीं आया। मुझे यहाँ कोई अज्ञात शक्ति ले आयी है।"

"मैं जानती हूँ कि वह अज्ञात शक्ति क्या है?"

"क्या है रत्नगर्भा ?"

"वह प्रीति उसके पैर ही तुम्हें यहाँ ले आये। मैंने तुमसे कहा था कि तुम मुझे भूल जाओ दीपक, तुम्हें भूलना होगा। मैं तुम्हारी नहीं बन पाऊँगी। ईश्वर के लिए भविष्य में यहाँ कभी मत आना। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ।"

"नहीं आऊँगा, कभी नही आऊँगा, मैं अकेले ही जीवन पार कर लूँगा मैं···।"

अभी दीपक इतना ही कह पाया था कि रत्नगर्भा बीच में बोल उठी —"तुम्हें घर बसाना होगा दीपक, मैंने तुम्हें अपनी शपथ खिलायी है।"

"मैं किसी भी आग्रह की डोर में नहीं बँधना चाहता, रत्नगर्भा।"

"क्यों ?"

"मैं एक निराश प्रेमी हूँ। मेरे प्यार ने मुझे निराशा दी है। मेरी आशा के सभी खिलौने तोड़ दिये। मुझे विवश मत करो। मैं ब्याह कभी नहीं करूँगा।"

"दीपक तुम्हें मेरे लिए ब्याह करना होगा।"

"ब्याह कोई आवश्यक नही है।"

"जीवन साथी के बिना जिन्दगी की यात्रा कभी पूरी नहीं होती।"

"तुम कुमारी रहो, मैं ब्याह करूँ ऐसा कभी नहीं होगा। ऐसा कभी नहीं होगा।"

दीपक व रत्नगर्भा में इस तरह बातें हो रही थीं। प्रभा दूसरे कक्ष में दरवाजे की ओट में खड़ी सब सुन रही थी। उसकी आँखों में आँसू आ गये। वह भी दुखी हो रही थी। जब आँसुओं का वेग कम नहीं हुआ और वे धारा-प्रवाह बहने लगे तो उसने आँचल से उन्हें पोंछा। उसने दीर्घ उच्छ्वास ली। उसका हृदय बैठने लगा। वह अधीर हो गयी। प्रभा को अपनी स्थिति पर नियन्त्रण पाना कठिन हो गया।

इसके बाद रात आयी। वह दिन भर की सुधियाँ ले आयी। इधर दीपक अपनी आग में जल रहा था। उधर रत्नगर्भा ने अपने कमरे में अन्धेरा कर रखा था। उसे लग रहा था कि दुनिया की रोशनी हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो गयी है।

रत्नगर्भा सोच रही थी कि अब उसके जीवन में अंधेरा-ही-अंधेरा है। उसके मन चाहे सूरज का उदय कभी न होगा। वह हमेशा अन्धकार में ही रहेगी।

इधर दीपक बाप से कुछ भी नहीं कह पाया और उधर रत्नगर्भा जिंदगी मौत से खेल रही थी। ऐसा लगता था कि उसकी जिन्दगी का नाटक अभी समाप्त हो जायेगा।

दीपक निराश होकर लौटा था। वह अपनी हवेली वापस नहीं आया। वह बीच में ही रुक गया। वह संगमरमर का सफेद तालाब था। इसमें चाँदनी चाँदी जैसे लगती और रात को चाँद मुस्कराता। दीपक ने सोचा कि वह किसी अतिथिशाला में जाकर विश्राम करेगा। इसीलिए वह वहाँ चला आया जहाँ आमेन और नीली ठहरे थे।

दीपक नीली के आवास पर पहुंच गया। उसने अपना परिचय दिया कि वह राधा मोहन का बेटा है व आमेन की लड़की नीली से मिलने आया है।

दीपक सिर-आँखों पर लिया गया। यह सूचना नीली और राधा मोहन को भेज दी गयी।

दीपक आया। उसका भव्य स्वागत हुआ। आमेन ने उसे समझाया कि वह एक बहुत बड़ा व्यापारी बनेगा। वह सुनता रहा मौन। उसने कोई भी उत्तर नहीं दिया।

दीपक उस कक्ष में पहुँचा जहाँ नीली अपने बालों को सुन्दर ढंग से संवार रही थी। दोनों एक-दूसरे को नहीं पहचानते थे। उनमें कोई संकोच नहीं था। रात आ गयी थी। आसमान के रुपहले दिये जल गये थे। धरती पर भी चिरागों की रोशनी होने लगी थी।

जब दीपक और नीली में व्यक्तिगत बातें हुई तो उसने पाया कि नीली के अन्दर अहंकार की भावना सबसे प्रबल है। वह धन को अधिक महत्व देती है। उसके अन्दर यही सबसे बड़ी कमी रही है।

योजनाएँ अपने में अधूरी ही रह गयीं। नीली खुले वातावरण में खेल रही थी। उसे कोई भी डर नहीं था। वह करोड़पति बाप की बेटी थी। बाप के वैभव ने बेटी को जहाँ सौम्यता प्रदान की वहीं एक दबी सी अहंकार

दीप्ति भी।

दीपक को नीली से घृणा हो गयी। वह उसकी छाया से नफरत करने लगा। उसका अन्तःकरण कह रहा था कि अगर ऐसी औरत घर में आ जायेगी तो घर नर्क बन जायेगा।

दीपक अपने जीवन की बाजी हार चुका था। वह रत्नगर्भा से दूर ही दूर रहना चाहता था। उसको उससे भी घृणा हो गयी थी।

रत्नगर्भा भी प्यार की बाजी हार गयी। उसे लग रहा था कि वह अपने जीवन का अन्त कर दे। जिस जीवन में हँसी न हो, खुशी न हो, आगे का कोई भविष्य न हो, वह बिल्कुल व्यर्थ है।

समय तेजी के साथ आगे बढ़ा चला जा रहा था। वह किसी को भी कहानी नहीं सुनाता। अपनी भूली-बिसरी कथाएँ पीछे छोड़ रहा था। उसका कहना था कि मैं बलवान् हूँ, मैं समय के पहिए पर घूमता हूँ। अच्छाई और बुराई दोनों मेरे सामने हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं।

दीपक घर नहीं आया। वह एक नगरवधू के घर पहुँच गया। जिसके फाटक पर हाथी बँधा था। जहाँ की पुरानी मालकिन कमला कहीं जा रही थी। उसने एक नयी लड़की को आश्रय दिया था। उसका नाम हिम-किरीटिनी था।

यह इतनी सुन्दर थी जैसे स्वर्ग की अप्सरा। इसके गालों पर गुलाबी बर्फ जमी थी। इसके माथे पर हीरे-मोती की पर्त जमी थी। इसकी उँगलियाँ कमल-नाल-जैसी थीं कमर डमरू जैसी। यह हँसती तो मुँह से फूल झरते, यह रोती तो धरती पर पर मोती-ही-मोती बरस जाते।

दीपक ने इस नयी नवेली को देखा। वह भूल गया कि रत्नगर्भा क्या है। वह भूल गया कि नीली क्या है।

वह आश्चर्य की सीमा को पार करने लगा। उसे लगा कि धरती का स्वर्ग यही है और अप्सराएँ यहीं निवास करती हैं ?

नयी नगरवधू

प्रातः का समय था। हिम किरीटिनी अपने केश खोले खिड़की पर खड़ी थी। वह देख रही थी कि सवेरा नगर के पथ पर मुखरित हो रहा है। रथ आ रहे थे जा रहे थे! बैलगाड़ियाँ भी अपना मार्ग भी तय कर रही थीं। घोड़ा-गाड़ियाँ दौड़ रही थीं। लोग पैदल चल रहे थे।

खिलौने वाले खिलौने बेचते। फेरी वाले अपनी आवाजें बुलन्द करते सब-कुछ मिलाकर वह वातावरण बहुत ही मोहक था।

हिमकिरीटिनी अपने अतीत की कहानी दोहरा रही थी। वह हड़प्पा में रहती थी। यह नगर मोहनजोदड़ो से थोड़ी ही दूर था। उससे कुछ और दूर छोटी-सी रियासत थी। उस रियासत का राजा मर गया। उस पर उसके शत्रुओं ने अधिकार कर लिया। हिम किरीटिनी को उस विजयी राजा ने मार डालने का षड्यन्त्र रचा। वह अभागी अपने परिवार में अकेली ही रह गयी थी। उसने सिन्धु नदी के तट पर आकर साँस ली, उसने सोच लिया था कि अपने जीवन का अन्त कर देगी।

सहसा पीछे से किसी ने उसे टोक दिया। यह एक सम्भ्रान्त महिला थी। यह अधेड़ थी। इसके हाथों में हीरे की चूड़ियाँ थीं। इसके कानों में पोखराज के कुण्डल थे। नाक पर जो कील थी, उसमें हीरे की कली जड़ी थी। इसने रेशम की पीली साड़ी पहन रखी थी। नीलम का हार इसके गले में था। दाहिने हाथ में एक डोलची थी। जो चाँदी की थी। उसमें पूजा के सभी पात्र चाँदी के थे। यह सिन्धु नदी में स्नान करने आयी थी। देर से हिमकिरीटिनी को निहार रही थी। इसकी आँखें तेज थी। यह उड़ती चिड़िया पहचानती थी। इसे समझते देर नहीं लगी। यह लड़की कहीं बाहर से आयी है। यह परेशान है। या तो आश्रय की खोज कर रही है, या फिर जल-समाधि लेने की इसकी योजना है।

उस प्रौढ़ा महिला ने हिमकिरीटिनी को पीछे से टोका। वह स्नेह भरे मृदु स्वर में बोली—"शायद मैंने तुम्हें कहीं देखा है बेटी, यहाँ कैसे बैठी हो?"

हिमकिरीटिनी ने सहानुभूति भरी बातें सुनी तो वह मुड़कर प्रौढ़ा की ओर देखने लगी। उसके मुँह से निकल गया—"मैं हड़प्पा से आयी हूँ। मैं राजकुमारी हिमकिरीटिनी हूँ। अब मेरे पिताजी के वैभव का दीपक बुझ गया। मैं अकेली रह गयी हूँ। मेरा संसार में कोई नहीं है।"

अब प्रौढ़ा ने हिमकिरीटिनी के सिर पर अपना स्नेह भरा हाथ रख दिया। वह अधिकार के साथ अपनत्व भरे स्वर में बोली—"यह कैसे कहती हो बेटी। अभी मैं हूँ। मुझे अपनी धर्म-माता समझो, निराश मत हो, तुम्हारे जीवन की बगिया में आशा के फूल खिलेंगे। बहार तुमसे रूठी नहीं, बसन्त बनकर फिर आयेगी।"

अब हिमकिरीटिनी उठकर खड़ी हो गयी। उसने प्रौढ़ा के वक्ष में अपना सिर रख दिया और फफक-फफककर रोने लगी। उसने बतलाया कि वह कंचनपुर की राजकुमारी है। उसने अपनी सारी-की-सारी परिस्थिति प्रौढ़ा के सामने वर्णन कर दी।

प्रौढ़ा ने हिमकिरीटिनी का सिर ऊपर उठाया। अपने आँचल से उसके आँसू पोंछे। उसने आश्वासन देते हुए शान्त स्वर में कहा—"तुम मेरी हवेली में चलो बेटी, मेरे कोई सन्तान नहीं है। करोड़ों की सम्पदा है। बहुत दिनों से इस तलाश में थी कि अपना उत्तराधिकारी किसे बनाऊँगी। आज तुम मिल गयी हो, यह मैं सिन्धु नदी का वरदान ही कहूँगी।"

प्रौढ़ा ने हिमकिरीटिनी को विश्वास पर विश्वास दिलाया वह उसके साथ चल दी। उसने उसे बतलाया कि वह सिन्धु नदी के गर्भ में समा जाना चाहती थी। इसीलिए यहाँ आयी थी।

प्रौढ़ा रथ पर बैठाकर उसे अपनी हवेली में ले आयी। हिमकिरीटिनी ने देखा कि हवेली के चौक में हाथी बंधा है। वह प्रसन्न हो गयी। प्रौढ़ा के साथ अन्दर आयी। उसे लगा कि वह हवेली राजमहल से किसी भी तरह कम नहीं है। लगभग दो सौ दास व दासियाँ थीं।

तीन दिन तक हिमकिरीटिनी कुछ भी समझ नहीं पायी कि वह कहाँ आ गयी है। चौथे दिन उसे वास्तविकता का बोध हुआ। उसे एक बूढ़ी दासी ने बतलाया कि यह प्रसिद्ध नगरवधू कमला की हवेली है। उसने वेश्यावृत्ति से संन्यास अपनी युवावस्था में ही ले लिया था।

हिमकिरीटिनी ने सोच लिया कि वह वेश्या के घर में नहीं रहेगी। किन्तु वह जिस कार्य को बहुत आसान समझ रही थी, वह उतना ही कठिन हो गया। उसने वहाँ से निकलने की बहुत कोशिश की। मगर निकल नहीं पायी।

कमला ने हिमकिरीटिनी पर कोई भी प्रतिबन्ध नहीं लगाया। वह उसे स्नेह और प्यार से अपने वश में करना चाहती थी। उसने उसे चाबियों का गुच्छा दे दिया। उसे सभी तिजोरियाँ खोल कर दिखला दीं। ये तिजोरियाँ सोने, चाँदी और हीरे-जवाहरातों के गहनों से भरी पड़ी थी।

कमला हिमकिरीटिनी को तहखाने में ले गयी। वहाँ सोने-चाँदी के सिक्कों से खजाना भरा पड़ा था।

ऐसे ही हिमकिरीटिनी ने देखा कि लोहे के बड़े-बड़े सन्दूक रेशमी व जरी के कपड़ों से भरे हैं। कमला ने उससे कह रखा था कि यह सब कुछ तुम्हारा ही है बेटी। अब तक मैं इसकी रखवाली करती रही। अब तुम आ गयी हो। मुझे छुट्टी दो मैं भगवान का भजन करूँगी।

कमला ने गुप्त रूप से इतना अवश्य किया था कि उसने अपने विश्वासी दास-दासियों को आगाह कर रखा था कि किसी तरह भी हिमकिरीटिनी हवेली के फाटक से बाहर न जाने पाये।

हिमकिरीटिनी ने कई बार कोशिश की किन्तु उसे सफलता नहीं मिली। वह निराश हो गयी और कमला की हवेली को ही अपना आश्रय बना लिया।

जब एक साल बीत गया, तो कमला ने हिमकिरीटिनी को नगरवधू बना दिया। उसने उसे अपनी कहानी सुनायी। अपने सारे भेद खोल दिये। उसे यह शिक्षा दी--कहने के लिए वह नगरवधू कहलायी जायेगी लेकिन उसका प्यार किसी एक की सीमा में बँध कर नहीं रह जायेगा। वह मोहन-जोदड़ो की नगरवधू कहलायेगी। उसकी हवेली में करोड़पति और लखपति आकर टकरायेंगे।

हिमकिरीटिनी ने अपनी स्थिति पर सन्तोष कर लिया और वह प्रसन्नता से नगरवधू बन गयी।

महीने दो-महीने में कहीं एक बार उसका नृत्य और संगीत होता। यह

शिक्षा उसे कमला ने स्वयं दी थी। कमला की हवेली के बाहर रथों की भीड़ लग जाती। घोड़े और हाथी आकर रुकते। घोड़ागाड़ियाँ भी प्रचुर मात्रा में आती थीं।

तब हिमकिरीटिनी ऐसे सजायी जाती जैसे रानियाँ शृंगार करती हैं। उसके बदन पर करोड़ों की सम्पदा के गहने होते। उसके वस्त्र देखने योग्य होते। उसका नृत्य होता। उस पर मोहरों के तोड़े बरसते। हीरे व जवाहरातों के गहने फूलों की तरह बरसाये जाते। वह मोहनजोदड़ो की नगरवधू थी। उसकी एक मुस्कान पर करोड़पति लोग अपने को न्योछावर कर देते थे।

साधारण श्रेणी के लोग और मध्यम वर्ग के प्राणी इस हवेली में प्रवेश नहीं कर पाते। यह इन्द्रपुरी थी। यह स्वर्ग की राजधानी थी। हिमकिरीटिनी एक अप्सरा थी। उसका रूप अद्वितीय था।

कमला सन्तोष की साँस लेती। अवकाश के समय वह हिमकिरीटिनी के पास आकर बैठ जाती। उससे कहती कि जब मेरी मौत हो तो मुझे गंगा जल से नहलाना। वह मँगा कर पहले से ही रख लेना। मेरे मुँह में तुलसी दल डालना और सोना डालना।

कमला कहती बेटी सोने-चाँदी का विमान बनवाना। नारियाँ अर्थी में कन्धा नहीं लगातीं, तुम मेरी अर्थी में कन्धा लगाना। मुझे सिन्धु नदी में नहलाकर, फिर चिता पर लिटाना। मेरी चिता चन्दन की लकड़ी की होगी। उसमें तुम्हारे हाथों से आग लगेगी। घी और कपूर से चिता जलेगी, फिर मेरा श्राद्ध करना बेटी। उसमें हृदय खोलकर दान देना। तभी मेरी मृत आत्मा को शान्ति मिल पायेगी बेटी।

हिमकिरीटिनी कमला के मुँह पर हाथ रख देती। नाराज हो जाती और मीठा गुस्सा दिखलाकर कहने लगती कि कैसी हो माँ, जब देखो तब मौत को ही निमन्त्रण दिया करती हो। मुझे तुम्हारी बातें अच्छी नहीं लगतीं।

ऐसे में कमला को प्यार आ जाता। वह हिमकिरीटिनी को खींचकर अपने वक्ष से लगा लेती। उसका मुँह चूमती, उसकी बलायें लेती। उसकी आँखों में स्नेह के आँसू आ जाते और वह गीले स्वर में कहने लगती कि,

"मेरी बेटी मुझे कितना चाहती है तू मुझे कभी मरने नही देगी। तू कितनी अच्छी है। मैं तेरे लिए जिन्दा रहूँगी बेटी। जल्दी नही मरूँगी।"

इस तरह हिमकिरीटिनी और कमला दोनों का स्नेह व्यापार चल रहा था।

हाँ तो हिमकिरीटिनी खिड़की पर खड़ी थी और सड़क का वातावरण देख रही थी। तभी पीछे से आकर कमला ने उसके कपोल पर हल्की सी चपत जड़ दी। उसने उसे अपनी दोनों बाँहों में समेटा कलेजे से लगा लिया, फिर तड़ातड़-तड़ातड़ उसके कई चुम्बन ले डाले।

हिमकिरीटिनी अपनी धर्म-माता के कन्धे से लग गयी। वह लाड़ दिखाती हुई दुलार भरे स्वर में बोली— "माँ तुम कितनी अच्छी हो अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मैं विष खा लूँगी।"

"पगली कहीं की।"

यह कहने के साथ कमला ने अपनी बेटी के सिर पर हाथ रख दिया। उसकी उँगलियाँ बालों से खेलने लगी।

हिमकिरीटिनी ने धीरे से पूछा, "माँ यह कल जो दीपक आया था। यह करोड़पति का बेटा है। ऐसा लग रहा था कि वह मेरा प्यार पाने के लिए पागल हो रहा है।"

"तुम्हारा प्यार इतना सस्ता नहीं है बेटी। जो हर आदमी उसे खरीद ले। अभी न जाने कितने दीपक आयेंगे। सयंम रखो, मैं सब बतला दूँगी। इसका बाप भी एक दिन मेरा प्यार खरीदने आया था।"

हिमकिरीटिनी कहने के लिए नगरवधू थी, लेकिन अभी तक उसका चरित्र गंगा जल की तरह पवित्र था। उसे किसी भी पुरुष ने छुआ तक नहीं। वह सौन्दर्य की रानी थी। लोग उसकी सुन्दरता का दूर से ही पान करते और मुदित होकर चले जाते।

हिमकिरीटिनी ने सोच लिया था कि वह उसी पुरुष को अपना प्यार देगी जिसके लिए कमला आदेश देगी, उसे कमला से इतनी अधिक श्रद्धा हो गयी थी, जिसका नाम नहीं।

दोनों माँ-बेटी झूले पर जाकर बैठ गयीं। दो दासियाँ उन पर आकर पंखा झलने लगी। हिमकिरीटिनी ने कमला की गोद में अपना सिर

टिकाया। वह झूले पर लेट गयी। कमला उसके बाल सहलाने लगी। तभी चाँदी के दो गिलासों में अनार का शरबत एक परिचारिका ले आयी। ये गिलास चाँदी की तश्तरी में रखे थे। इनमें खस डाली गयी थी। उसकी भीनी-भीनी सुगन्ध आ रही थी।

सामने ही सोने का बड़ा-सा पिंजड़ा टँगा था। उसमें बैठी मैना बोल रही थी—"मैना भूखी है। मैना प्यासी है। वह हिमकिरीटिनी को बुला रही है। आओ हेमा, आओ किरीटिनी।"

भेंट

दूसरे नहीं तीसरे दिन गौरव नीली के सामने पहुँच गया। तब वह बिस्तर पर चित लेटी थी। उसके बाल खुले थे। वे पीछे चौकी पर रखे पानी से भरे तसले में डूब रहे थे। यह पानी नहीं गुलाब जल था। शीतल था। नीली ने इसमें अपने केश देर से भिगो रखे थे। एक सेवक ने आकर सूचना दी कि कोई गौरव महाशय मिलने आये हैं।

तब आमेन दूसरे कमरे में बैठा किसी व्यापारी से बातों में व्यस्त था।

गौरव आया उसे बैठने के लिए एक ऊँची-सी पीठिका दी गयी। नीली लेटी रही। उसने क्षमा-याचना की कि नियत समय पर वह गौरव से मिल नहीं पायी।

गौरव मौन था। आज वह देख रहा था कि नीली अतीव सुन्दरी है। उसके ठाठ रानियों जैसे हैं। वह स्वर्ग की अप्सरा है।

न जाने कितनी देर तक गौरव उस रूप-माधुरी का पान करता रहा। उसकी आँखों की प्यास बुझती ही नहीं और बढ़ती चली जा रही थी। उसके हृदय की धड़कन तीव्र हो गयी। वह मिलन के गीत गाने लगी।

नीली मुस्करा रही थी। वह भी देख रही थी। वह भी अपने से कह

रही थी कि राजा के राजकुमार भी इतने सुन्दर नहीं होते। यह पुरुष है या कामदेव। सुना जाता है कि रति का पति कामदेव बहुत आकर्षक है। अप्सराएँ उसके चक्कर काटती हैं। वह मदन है मदन। सबके मन को मोह लेता है। यह गौरव भी मदन है। यह भी कामदेव है। काश मैं इसकी पत्नी बन जाऊँ। बस फिर मुझे जिन्दगी में और कुछ नहीं चाहिए।

दोनों ओर मौन पल रहा था। दोनों की आँखें हँस रही थी। दोनों चेहरों पर मुस्कान थी। दोनों ही एक-दूसरे के आकर्षण की डोर में बँध रहे थे।

नीली ने सन्नाटे को भंग किया। वह धीरे से बोली—"क्या देख रहे हो? कुछ बोलते नहीं, मौन क्यों हो?"

"वह देख रहा हूँ जो कभी देखा नहीं। मौन इसलिए हूँ क्योंकि प्यार की पूजा कर रहा हूँ।"

"प्यार की पूजा कर रहे हो?"

"हाँ नीली एक प्यार की देवी है। उसी की पूजा कर रहा हूँ। मेरे चित्त को बड़ी शान्ति मिल रही है। ऐसा लगता है कि मैं स्वर्ग में आ गया हूँ।"

"यह स्वर्ग है?"

"स्वर्ग इतना अच्छा नहीं है। नीली वहाँ दम घुटने लगता है। यह धरती का स्वर्ग है। तुम स्वर्ग की रानी हो।"

"और तुम इन्द्र धनुष हो। इन्द्र धनुष कभी धरती पर नहीं निकलता। वह आसमान पर ही दिखलायी पड़ता। काश मैं तुम्हारी बन पाती।"

"मैं भी यही सपना देख रहा हूँ। नीली क्या ऐसा सम्भव हो सकता है।"

"नदी की बाढ़ को कभी रोका नहीं जा सकता है गौरव! नारी एक नदी है और प्यार उसकी धारा। नदी में ज्वार आ गया है। उस ज्वार को संसार की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती है।"

"सच कहती हो नीली?"

"झूठ वे लोग बोलते हैं जिन्हें प्यार की पूजा नहीं आती, जो अपने में अधूरे होते हैं। काश मैं तुम्हें पा सकता।"

"तुम्हारा सपना साकार होगा गौरव। मैं तुम्हारी बनूंगी। तुम्हारी बनकर रहूँगी। सच कहती हूँ कि तुम मेरे दिल की धड़कन बन गये हो। वह धड़कन प्यार के गीत गाती मुझे सुनायी पड़ती है।",

"तुम मेरी आँखों की रोशनी बन गयी हो नीली। तुमने जो राह दिखलायी मैं उसी पथ पर चल रहा हूँ।"

नीली ने ताली बजायी। दो दासियाँ तत्क्षण ही सामने आकर उपस्थित हो गयी। उन्हें आदेश मिला कि वे उसके केश जल से बाहर निकालें उसे उठाकर बैठा दें और उस पर पंखा करें।

अब नीली के गीले बालों पर रोयेंदार सफेद कपड़ा लिपटा था। एक दासी उसे पकड़े खड़ी थी। दूसरी पंखा झल रही थी।

नीली ने फिर ताली बजायी। इस बार भी दो दासियाँ सामने आ गयीं। उन्हें आज्ञा मिली थी कि वे आगन्तुक अतिथि के लिए जलपान की सामग्री ले आयें।

गौरव शान्त बैठा था। वह मन्द-मन्द मुस्करा रहा था। इतने में ही आमेन आ गया। नीली ने गौरव से उसका परिचय करवाया। गौरव ने शालीनता के साथ आमेन को प्रणाम किया।

दोनों पक्षों का परिचय नीली द्वारा कराया जा चुका था। आमेन ने देखा कि गौरव युवक ही नहीं युवक-विशेष है।

आमेन की आँखों ने पढ़ा, आमेन के मस्तिष्क ने सोचा, उसके हृदय ने स्वीकार किया कि गौरव धरती का नहीं स्वर्ग का राजकुमार है।

आमेन ने दीपक को अपना जाना था। वरण कर चुका था। अब उसे बोध हुआ कि गौरव पारस है और दीपक सोना है। उसने गौरव से खूब बातें कीं अन्त में गौरव ने उसे निमन्त्रण दिया। उसने दोनों बाप-बेटी को अपनी हवेली पर भोज के लिए आमन्त्रित किया।

वह दिन नीली की जिन्दगी का सबसे पहला खुशी का दिन था। उसे लग रहा था कि समय पंख लगाकर उड़ रहा है। कितनी जल्दी दोपहर हो गयी और मालूम ही नहीं हो पाया। तीसरा पहर बात करते आ गया। साँझ के बाद गौरव की हवेली पहुँचना है। वहाँ हम लोगों का इन्तजार होगा।

साँझ से पहले-ही-पहले नीली ने अपना शृंगार कर लिया था। वह अपने साथ काहिरा से गहनों का डिब्बा लायी थी। उसने बालों पर झूमर बाँधी। इस झूमर में कीमती नगीने जड़े थे और वे रंग-बिरंगे थे।

गले में नीली ने पुखराज का हार पहना। अपनी गोरी बाँहों पर सोने के नगीने से जड़े बाजूबन्ध बाँधे। आज उसके हाथों में सोने के जड़ाऊ कंगन थे, जिन पर हीरे और मोती जड़े थे। कमर में उसने नीलम की करधनी पहनी। पैरों में पायल सोने के थे। उनके घुंघरू बज रहे थे। आज उसने भारतीय नकल की थी। उसने हरे रंग की गोटा जड़ी लहर पटोर पहनी। गुलाबी दुपट्टा ओढ़ा। पैरों में मखमल की पीली जूतियाँ पहनीं जिन पर जरी का काम था।

दोनों बाप-बेटी एक घोड़ा गाड़ी पर बैठे। यह किराये की थी। वे गौरव की हवेली आ गये। वहाँ दरबान बाहर ही खड़ा था। उसे आदेश दिया गया था कि आने वाले मेहमानों को सिर आँखों पर लिया जायेगा।

आमेन नीली के साथ गौरव के उस कक्ष में आ गये जो एक बड़ा-सा गोल कमरा था जिसमें गोल ही ईरानी कालीन बिछी थी। गोलाकर कुर्सियाँ पड़ी थीं। बीचो-बीच में एक बड़ी-सी गोल मेज थी। यह मेज चाँदी से मढ़ी थी। ऐसे ही कुर्सियाँ भी चाँदी मंडित थीं।

वनमाला आमेन के सामने आ गयी। गौरव ने दोनों का परिचय करवाया। नीली ने भी दोनों हाथ जोड़ कर वनमाला को प्रणाम किया।

दोनों पक्ष एक-दूसरे का परिचय प्राप्त करके प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे। दो दासियाँ और दो सेवक चारों ओर पंखा झल रहे थे। एक परिचारिका तीन चाँदी के कटोरों में खीर रख गयी। उनमें चाँदी के ही चम्मच पड़े थे। यह खीर मेवा की थी। केसर ने इसको पीला कर दिया था। दुबारा जब वह दासी लौटी तो उसके दोनों हाथों में सोहन हलुवा था। एक दासी सब्जियाँ ले आयी। दूसरी पूड़ियाँ ला रही थी, तीसरी पापड़ लायी, फिर मिष्ठान आया।

इसी तरह प्रीति भोज हुआ। खाने की मेज पर चाँदी की तशरियाँ-ही-तशतरियाँ थीं।

यह पहला दिन था। आमेन अपने निवास पर लौट आया। जब वह

काहिरा से चला था तो वहाँ कहकर आया था कि भारत में केवल एक सप्ताह रहेगा। आने-जाने में समय लगता है। समुद्री मार्ग है। जल पोत का सहारा लेना पड़ता है।

किन्तु अब आमेन ने योजना आगे बढ़ा दी उसने सोच लिया कि वह एक महीना से पहले भारत से मिस्र नहीं जाएगा।

आमेन का अन्तःकरण कह रहा था कि दीपक के साथ नीली का सम्बन्ध होना कठिन है। दोनों एक दूसरे को पसन्द नहीं करते। वह सोचने लगा था कि नीली का ब्याह गौरव से करेगा। गौरव एक राजकुमार है। उसके जीवन में कोई भी अभाव नहीं है। वह पूर्णतया सुखी है।

रात को जब तक आमेन सोया नहीं तब तक निरन्तर इसी तरह सोचता रहा। उसके सोचने का क्रम कुछ ऐसा था कि उसके चित को शान्ति मिल रही थी। वह सोच रहा था कि गौरव लाखों में एक लड़का है। ऐसा वर नीली के लिए कहीं नहीं मिल सकता। यह उसका भाग्य है। जो संयोग से गौरव से भेंट हो गयी।

इधर आमेन की यह स्थिति थी। उधर नीली भी करवटें बदल रही थी। उसे लग रहा था कि उसकी जिन्दगी में खुशियों की बारात आयी है। बहार के दिन आये हैं। यह मौसम बसन्त का है। तभी उसके मन की कोयल बोल रही है।

सवेरे जब दोनों बाप-बेटी बिस्तर से उठे और एक-दूसरे के सामने आये तो दोनों प्रसन्न थे। उनके चेहरे प्रसन्नता से खिल रहे थे।

आमेन ने इससे यह अनुभव किया कि उसकी बेटी गौरव को पसन्द करती है। इसलिए खुश है।

और नीली सोच रही थी कि पिताजी ने गौरव को पसन्द कर लिया है इसलिए वे प्रसन्न हैं। दोनों मौन थे। उनकी आँखें हँस रही थीं।

आज वह दिन था। जब आमेन ने वनमाला और गौरव को अपने निवास स्थान पर प्रीतिभोज के लिए आमन्त्रित किया था। भोज भारतीय था। वह शाकाहारी रखा गया था। क्योंकि वनमाला विधवा थी वह शाकाहारी भोजन ही करती।

आमेन के साथ उसके बावर्ची भी आये थे। वे भारतीय भोजन बनाने

में पूर्णतया निपुण थे। उन्हें आदेश मिला। वे कच्चे भोजन की रसोई तैयार करने लगे।

साँझ की बेला होते ही वनमाला गौरव को लेकर आ गयी। आमेन ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया और उसे बैठने के लिए चाँदी से मढ़ी कुर्सियाँ दी।

पश्चिमी सभ्यता के अनुसार भोजन मेज पर परोसा गया था। सभी पात्र चाँदी के थे। भोजन भारतीय था। इसमे रोटियाँ थीं, चावल थे, दाल थी। कई तरह की सब्जियाँ थी जो सूखी और रसेदार थीं। रायता, पापड़, चटनी और अचार ये सारी वस्तुएँ छोटी छोटी कटोरियों में मेज पर सजा दी गयी थीं। मीठी खीर थी। हलुआ था। दूध की पूड़ियाँ थीं और रस-मलायी थी।

दावत चलती रही। दोनों पक्ष प्रायः मौन थे। बीच-बीच में बातें चलने लगतीं उनमें कहा जाता कि भारत संसार में एक अनोखा देश है। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति अपने में सबसे पुरानी, सबसे आगे।

कभी कहा जाता कि गौरव बहुत संकोची लड़का है। ऐसे ही बात चलने लगती कि नीली को मैंने बेटे की तरह पाला है। वह मेरे जिगर का टुकड़ा है।

प्रसंग चल रहा था। बातें आगे बढ़ रही थीं। वनमाला का कहना था कि वह गीले में सोयी और गौरव को सूखे में सुलाया है। वह मेरी जिन्दगी का एक चिराग है। उसी की रोशनी से मेरे हृदय में उजाला होगा।

आमेन और वनमाला की भेंट का यह दूसरा दिन था। तीसरे दिन की योजना यह बनायी गयी कि दोनों पक्ष सिन्धु के तट पर जायेंगे। वहाँ दाल बाटी बनेगी। वे मनोविनोद करेंगे, जल-विहार व नौका-विहार की भी योजना बनायी थी।

नीली को ऐसा लग रहा था कि भाग्य उनका पूरा-पूरा साथ दे रहा है। उसके पिता के मन से दीपक निकल गया, वह बहुत अच्छा हुआ। गौरव मेरा भाग्य है व उसे भगवान ने मेरे पास भेजा है। वह ईश्वर का दिया हुआ मेरे लिए एक वरदान है।

रात में नीली को नींद नहीं आयी। खुशी उसमें समायी नहीं पड़ रही

थी। ऐसा लगता था कि अधिक खुशी के कारण वह पागल हो जाएगी।

आमेन की भी रुचि वनमाला और गौरव में बढ़ती जा रही थी। उसने ऐसी माँ नहीं देखी थी और न ऐसा बेटा। दोनों का स्वभाव सरल था। दोनों मिलनसार थे। यही उनकी विशेषता थी।

सवेरा होते ही आमेन ने अपने एक विश्वासी सेवक से यह खबर मिस्र देश भेज दी कि वह एक महीने बाद ही भारत से चलेगा। यहाँ कुछ जरूरी काम है, इसीलिए रुकना आवश्यक हो गया है।

इसके बाद आमेन ने सन्तोष की साँस ली। उसे लगने लगा था कि नीली का ब्याह गौरव के साथ अवश्य हो जाएगा। इसमें कोई सन्देह नहीं।

वचन

दाल बाटी बनी। नौका-विहार हुआ। वहीं पर वनमाला और आमेन में ब्याह का प्रसंग चल पड़ा।

इस पर वनमाला ने आमेन से कहा—"यों तो अपने घर की मैं स्वयं मालकिन हूँ। मुझे किसी से कुछ भी पूछना नहीं है। लेकिन फिर भी समाज में रहकर समाज के साथ चलना पड़ता है। मेरी कुछ दूर ही एक बहन है मुझसे बड़ी है। मैं उससे परामर्श करूँगी उसके बाद आपको व्याह का वचन दे पाऊँगी।"

"इस कार्य में कितना समय लगेगा?"

"मैं कल पूछ लूंगी और परसों आपको बतला दूँगी। यों मैं राजी हूँ और मुझे कोई इनकार नहीं है।"

नीली दोनों की बातें सुन रही थी। वह प्रसन्नता से आलोड़ित थी।

ऐसे ही गौरव भी अपने में प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था। नाव नदी की बीच धारा में बह रही थी। वह पूरब से पश्चिम की ओर जा रही

थी। नदी का वहाव भी उसी की ओर था। गौरव नीचे झुक कर हाथ में सिन्धु का जल लेता। वह उससे खेलता उसे यह जल क्रीड़ा बहुत अच्छी लग रही थी।

नीली में भी संकोच था, किन्तु उमंग उसमें उत्साह भर रही थी। वह भी चुपके-चुपके कनखियों से गौरव की ओर देखती और फिर जल में हाथ डुबोती उसका आनन्द लेती। उसका हृदय उछल रहा था। उसका मन मयूर नाच रहा था और अन्तःकरण कह रहा था कि आज के दिन का अन्त न हो। नाव नदी में बहती रहे। वातावरण ऐसा ही बना रहे। जिन्दगी मुस्कराती रहे।

दूसरे दिन सवेरे ही सवेरे वनमाला कमला के पास आयी। उसे सारा हाल बतलाया। दोनों में बातें होने लगीं। कमला ने कहा––"मैं क्या बतलाऊँ लड़की तुम्हें पसन्द है। तुमने आमेन से बात कर ली है। हाँ कह दो और गौरव का ब्याह कर डालो।"

"दीपक के साथ नीली का सम्बन्ध हो रहा था। मगर दोनों ने एक दूसरे को पसन्द नहीं किया। इसीलिए बात बिगड़ गयी। मैं चाहती हूँ कि ब्याह के बाद राधा मोहन को यह पता न चले। वे इस ब्याह को रोक सकते हैं। वे इसमें बाधा डालेंगे। मुझे ऐसी शंका है।"

"ठीक कहती हो वनमाला जो लोग भविष्य के लिए नहीं सोचते उन्हें ही बाद में पछताना पड़ता है। तुम आमेन से हाँ कह दो और इस भेद को गुप्त रखो, किसी पर भी प्रगट मत होने दो।"

"यही मैं भी सोचती हूँ मालकिन। मुझे गौरव का ब्याह करना है। और सम्बन्ध बहुत अच्छे घर में हो रहा है। आगे जैसी बातचीत होगी। वह फिर आकर परसों बतलाऊँगी।"

कमला और वनमाला में जब बातें हो रही थीं तो हिमकिरीटिनी किवाड़ों की ओट में खड़ी सुन रही थी। उसे अभी यह पता नहीं था कि गौरव ही कमला का पुत्र है। उसने गौरव को कभी देखा नहीं था। आज उसका नाम सुना, वह चौंक गयी। वनमाला के लिए भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह स्त्री कौन है और कमला को मालकिन क्यों कहती है।

हिमकिरीटिनी ने सोच लिया था कि आज नहीं कल जब माँ का मन अच्छा होगा तो वह गौरव के विषय में जानकारी करेगी वह यह भी पूछेगी कि वनमाला कौन है ?

वनमाला चली गयी। उसके जाने के बाद कमला गहरे सोच में डूब गयी। उसे यह चिन्ता होने लगी थी कि कहीं गौरव के व्याह में राधा मोहन बाधा न डाले। क्योंकि उनके लड़के दीपक का सम्बन्ध विच्छेद हो गया है।

कमला को खुशी भी थी। उसके बेटे का व्याह हो रहा था। एक विदेशी लड़की बहू बनकर आ रही थी, यह करोड़पति बाप की बेटी थी।

कमला अपने कक्ष में आ गयी। वह बिस्तर पर जाकर लेट गयी। अतीत के चलचित्र उसके आँखों के सामने आने लगे। वह देखने लगी कि वह राधा मोहन की बाँहों में है। उसकी गोद में गौरव है। वह माँ बन गयी। उसने बालक को वनमाला को सौंप दिया। उसने पुत्र के लिए त्याग किया था ताकि दुनिया वाले यह न कह सकें कि गौरव एक वेश्या का वेटा है।

अब गौरव को सामाजिक सम्मान मिल रहा था। उसकी समाज में प्रतिष्ठा थी। कमला को यह महान खुशी थी। वह अपने में फूली नहीं समाती।

आमेन जब आया तो वनमाला ने नीली को गौरव के साथ घूमने के लिए भेज दिया। दोनों में बातें होने लगीं। वनमाला ने कहा—"मैं आपको अपना लड़का दे रही हूँ। बदले में आपकी लड़की ले रही हूँ। मुझे यह सम्बन्ध सहर्ष स्वीकार है।"

"आपको बहुत बहुत धन्यवाद आपने मेरी एक बहुत बड़ी समस्या हल कर दी। अब आप यह बतलाइए कि आप दहेज में क्या लेगी।"

"जो लड़की देगा उसके साथ दहेज का सौदा करना व्यर्थ है। दहेज वे लोग माँगते है जो लोग लालची होते हैं। मेरे अन्दर स्वार्थ की भावना नहीं है मुझे भगवान ने बहुत दिया है।"

"फिर भी कुछ तो अवश्य होना चाहिए। मैं आपको एक करोड़ दूंगा। अपने दामाद गौरव को एक जल पोत दे दूंगा। बाकी जीवन भर आपकी सेवा करूँगा।"

"मैं विवश नहीं करती हूँ। मुझे दहेज पसन्द नहीं है। आप की जो

श्रद्धा हो अपनी लड़की को दीजिये। उसके लिए मैं मना नहीं करती हूं।"

"मेरी आपसे एक प्रार्थना है।"

"क्या?"

"बारात मोहनजोदड़ो से काहिरा जाएगी। उसके जाने का प्रबन्ध मैं करूँगा। नीली का ब्याह मेरी कोठी से होगा, वहाँ के लोग देखेंगे। मैं अन्तर्देशीय ब्याह के पक्ष में था। मेरी वह इच्छा पूरी हो गयी।"

"बारात मिस्र जायेगी?"

"हाँ।"

"यह बहुत कठिन बात है।"

"कोई कठिन नहीं। आप हाँ कह दीजिए। सारा प्रबन्ध मैं कर लूंगा।"

वनमाला और आमेन दोनों परस्पर वचनबद्ध हो गये। सारी बातें पक्की हो गयीं। दूसरे दिन के लिए मूहूर्त रखा गया कि कल आमेन लड़का रोकने की रस्म अदायगी करेंगे।

वनमाला ने जाकर सारी बातें कमला को बतलायीं कमला के हर्ष का पारावार नहीं रहा। वह ऐसे शुभ अवसर पर राधा मोहन को भी बुलाना चाहती थी। किन्तु उसे गुप्त भय की आशंका थी कि दीपक के साथ नीली का ब्याह नहीं हो सका है। वही सम्बन्ध गौरव को हो रहा है। ऐसा हो सकता है कि वे इस ब्याह में बाधा डालें।

राधा मोहन के लिए कमला सोचने लगी कि दीपक उनका पुत्र है। उसे उनकी पत्नी ने जन्म दिया है। गौरव भी उनका बेटा है। लेकिन इस भेद को कोई भी नहीं जानता। गौरव के साथ सबसे बड़ा कलंक यह है कि वह वेश्या का पुत्र है। नगर वधू के बेटे को समाज में कोई भी स्थान प्राप्त नहीं हो सकता। वह हमेशा हेय दृष्टि से देखा जाएगा।

कमला ने इस पर बहुत विचार किया फिर उसने योजना बदल दी और निश्चय कर लिया कि राधा मोहन को ब्याह की सूचना भी नहीं देगी।

दूसरे दिन कमला ने हिमकिरीटिनी को अपने साथ लिया। उसे सब कुछ बतला दिया कि गौरव उसी का पुत्र है। दोनों वनमाला की हवेली में आ गयीं। आमेन ने गौरव के तिलक लगाया। उसके हाथ पर नारियल

रखा। उसे हीरे का हार पहना दिया। वनमाला को मुट्ठी भर हीरे दिये। कमला को उसे बतलाया था कि वह वनमाला की बड़ी बहन है। आमेन ने एक मुट्ठी हीरे उसे भी दिये। पण्डित ने मूहूर्त निकाला, अगले महीने ही ब्याह था। वह निश्चित हो चुका था कि बारात भारत से मिस्र जाएगी। इसके बाद आमेन नीली के साथ स्वदेश के लिए रवाना हो गया। जहाज समुद्र की छाती पर छर-छर का शोर मचाता हुआ आगे बढ़ रहा था। खलासी उसमें कोयला झोंक रहे थे। जहाज का कप्तान डेग पर खड़ा था। जलपोत का मस्तूल ऊँचा उठा रहा था।

खम्भात की खाड़ी से होता हुआ यह जल पोत अरब सागर में आ गया। नीली ने अपनी आँखों पर दूरबीन लगा रही थी। वह दूर-दूर तक दृश्य देख लेती। कई जहाज सामने से आ रहे थे। कहीं कुशल मल्लाह नावों पर बैठे मछलियाँ पकड़ रहे थे। ये नावें समुद्र की लहरों पर डगमग-डगमग करती। हिचकोले खाती। नीली को समुद्र का वातावरण बहुत अच्छा लगा। वह सोच रही थीं कि उसके साथ गौरव भी होता तो यात्रा का आनन्द मिलता।

ऐसे में ही नीली की आँखों के आगे गौरव का चेहरा घूमने लगा। वह निहाल हो गयी और उसके हृदय में गुदगुदी होने लगी।

हिमकिरीटिनी

हिमकिरीटिनी ने जब से दीपक को देखा था, तब से वह उसे भूल नहीं पायी। उसे यह मालूम हो चुका था कि गौरव और दीपक दोनों के पिता राधा मोहन है। एक वेश्या का पुत्र है और दूसरा उनकी पत्नी का।

दीपक रत्नगर्भा की ओर से पूरी तरह निराश हो चुका था। उसने सोच लिया था कि रत्नगर्भा के पिता मानिक चन्द अपनी बेटी का विवाह उसके साथ कभी नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त रत्नगर्भा ने भी उसे निराश

कर दिया था कि वह अपना ब्याह करे और उसे भूल जाए।

राधा मोहन चाहते थे, कि उनके पुत्र का ब्याह नीली के साथ हो जाए। मगर वह सम्बन्ध नहीं हो पाया इसका उन्हें महान दुख था।

राधा मोहन अनजान थे.। उन्हें कुछ भी पता नहीं था कि गौरव के साथ नीली का सम्बन्ध हो चुका है। लड़का रोक लिया गया और आमेन मिस्र लौट गया है।

राधा मोहन कभी-कभी कमला से मिलने चले आते। उनके आने का भेद कोई भी नहीं जान पाता। वे चुपके-चुपके आते और चोरी-चोरी चले जाते।

कमला ने राधा मोहन को कुछ भी नहीं बताया कि उसने गौरव का ब्याह तय कर लिया है।

इसी तरह राधा मोहन कभी-कभी वनमाला के घर आ जाते, वे ऐसे समय में आते थे जब गौरव घर में नहीं होता।

वनमाला ने भी सारे का सारा भेद गुप्त रखा। वह कमला के आदेशों पर चलती और उसी की आज्ञा का, पालन करती थी। वह एक क्षण के लिए भी भूल नहीं पाती कि वह कमल की दासी है। उसे बहुत बड़ा अधिकार मिला था। वह गौरव की मां कहलाती समाज, में उसे बहुत बड़ी प्रतिष्ठा मिली थी।

हिमकिरीटिनी दीपक के आने की प्रतीक्षा नित्य करती, उसकी सूरत आँखों में बस गयी थी। हृदय में उसने घर कर लिया और मस्तिष्क पर छा गया।

दीपक ने सोच लिया था कि अब रत्नगर्भा आजीवन कुँआरी रहेगी तो वह भी अपना ब्याह नहीं करेगा। उसके हृदय पर गहरी ठेस लगी थी। वह वेदना को भीतर ही भीतर पी रहा था।

मनुष्य का स्वभाव है जब उसकी प्रिय वस्तु उसे प्राप्त नहीं हो पाती तो वह उसकी ओर से निराश हो जाता है तो फिर उसका जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

दीपक ने सुन्दरी का सहारा लिया। वह हिम किरीटिनी के नृत्य और संगीत पर मुग्ध था। उसी में उसकी रुचि थी।

अब वह सुरा का भी सेवन करने लगा। उसने लोगों से सुना था कि मदिरा दुख को भुला देती है। वह वेदना को प्रसन्नता में बदल देती है।

कई दिन बाद दीपक हिमकिरीटिनी के पास आया। वह उसे देखते ही फूल की तरह खिल उठी। उसने उसका स्वागत किया।

हिमकिरीटिनी ने हँसकर पूछा—"आज बहुत दिन बाद आए हो मुझसे कोई भूल हो गयी थी क्या ?"

"तुमसे भूल कभी नहीं हो सकती हिमकिरीटिनी ! मैं स्वयं ही भूल गया। मुझे आने की याद नहीं रही थी।"

"तुम अपने को भी भूल जाते हो ?"

"हाँ जब सुरा का सेवन कर लेता हूँ तो फिर कुछ भी याद नहीं रहता।"

"तुम सुरा का सेवन क्यों करते हो ?"

"अपना दुख भुलाने के लिए।"

"कौन सा दुख ?"

"एक प्यार की देवी थी। मैं उसकी पूजा करता था। परिस्थितियों ने उस देवी को मुझसे विमुख कर लिया। मेरा हृदय टूट गया। उस पर आघात पहुँचा। बस तभी से मदिरा को साथी बना लिया। उसके कड़वे घूंट जब गले से नीचे उतर जाते हैं तो कुछ देर बाद नशा आ जाता। मैं प्यार की मार भूल जाता हूँ।

"यह प्यार की देवी कौन है ?"

"मैं किसी का नाम बतलाकर उसे बदनाम नहीं करना चाहता हूँ।"

"तुम मेरे पास क्यों आते हो ?"

"अपना मन बहलाने के लिए तुम, नाचती हो तो मुझे ऐसा लगता है कि बसन्त बहार आ गयी है। तुम गाती हो तो मुझे प्रतीत होने लगता है कि कोई कानों में अमृत घोल रहा है। नाचो हिमकिरीटिनी खूब नाचो आज मैं तुम्हारा नृत्य देखकर ही जाऊँगा।"

"अभी कैसे नाचूं ? अभी तो मैंने श्रृंगार भी नहीं किया है ?"

"मैं श्रृंगार देखने नहीं तुम्हारा नृत्य देखने आया हूँ। तुम झूम कर नाचो और मुझे पागल बना दो।"

"आज साँझ की बेला में आना तब नाचूँगी। नाचने के लिए माँ से अनुमति लेनी पड़ेगी। मैं उनकी आज्ञा के लिए बिना कोई भी कार्य नहीं करती।"

"यह मेरी आज्ञा है, हिमकिरीटिनी यह मेरा आग्रह है। सच बता दो, देखो झूठ मत बोलना, क्या तुम मुझे प्यार करती हो?"

"कैसी बातें करते हो दीपक? अगर मैं प्यार न करती। अगर मुझे कोई आकर्षण न होता तो तुम यहाँ कभी नहीं आते।"

"सच कहती हो। लाओ अपना हाथ मुझे दो।"

यह कहने के साथ दीपक ने हिमकिरीटिनी का हाथ अपने हाथों में ले लिया। उसे उसने सीने पर रखा और धीरे से मुस्कराता हुआ बोला—"तुम्हें मेरी शपथ है हिमकिरीटिनी। एक बार बतला दो क्या तुम मुझे प्यार करती हो?"

हिमकिरीटिनी ने एक लम्बी साँस ली उसके चेहरे पर उदासी छा गयी और वह गहरी वेदना के साथ कहने लगी—

"मैं नगर वधू हूँ। मैं किसी को प्यार नहीं करती। मैं उसका प्रदर्शन करती हूँ। मुझमें स्वार्थ है जो धन देता है, जो धन लुटाता मैं उसी पर बलि-बलि जाती हूँ। वेश्या किसीकी भी मित्र नहीं होती। दीपक यहाँ पर तुम भूलते हो। तुमसे घना लगाव हो गया है। तभी मन की सारी बातें साफ-साफ कह दीं।"

दीपक भौंचक्का-सा रह गया। वह हिमकिरीटिनी का मुँह देखने लगा। देर बाद उसके मुँह से निकला—"तुम सच बोलती हो। तुम भी प्यार की देवी हो। तुम्हारी देह से प्यार की सुगन्ध आती। तुम्हारी बातें मुझे अच्छी लगती हैं नाचो हिमकिरीटिनी नाचो। मैं पागल हूँ। मैं दीवाना हूँ। तुम्हारा नाच देख कर ही जाऊँगा।"

अब हिमकिरीटिनी अपने को रोक नहीं पायी। वह उठकर खड़ी हो गयी। उसके पैरों में पायल थे। वह नाचने लगी। पायलों के घुघरूँ बजने लगे।

"कुछ गाओ भी हिमकिरीटिनी ऐसा गाओ कि मैं झूमने लगूँ।"

हिमकिरीटिनी का स्वर सुरीला होकर दीपक के कानों में उतरने लगा

वह गा रही थी—"परदेश न जाने दूंगी मैं जान अपनी दे दूंगी··· परदेश···।"

दीपक झूमने लगा। उसे लग रहा था कि हिमकिरीटिनी स्वर्ग की एक अप्सरा है, उसका गीत मधुर है। उसका कण्ठ सुरीला, उसके राग में पीड़ा है और प्यार की एक सच्ची अनुभूति।

हिमकिरीटिनी नाचती रही। गाती रही। जब वह थक गयी तो दीपक के पास आकर बैठ गयी। उसे न जाने क्या हो गया था, वह अपने पर संयम नहीं रख पायी। उसने अपने गोरी-गोरी बाँहों की माला दीपक के गले में डाल दीं। उसने उसके कन्धे पर सिर टिका दिया और पलकें बन्द कर लीं।

दीपक का हाथ हिमकिरीटिनी के सिरपर पहुँचा उसकी उँगलियाँ उसके बालों में खेलने लगीं। वह मुग्ध था। सन्तुष्ट था। उसे लग रहा था कि उसकी खाली झोली में किसी ने खुशियाँ-ही-खुशियाँ भर दी हैं! वह गरीब हो गया था लेकिन प्यार के धन ने उसे अमीर बना दिया है।

जब दीपक चला गया तो हिमकिरीटिनी देर तक विचारों में खोयी रही थी। वह सोच रही थी कि माँ कमला ने कहा था कि किसी से प्यार मत करना, अभी न जाने कितने दीपक आयेंगे। नगर वधू किसी को प्यार नहीं करती। उसके लिए प्यार करना एक पागल-पन है।

ऐसे ही हिमकिरीटिनी सोच रही थी कि आज उससे भूल हो गयी। उसने अपना हाथ दीपक के हाथों में दे दिया। उसने अपनी बाँहें उसके गले में डालीं। माँ कमला ने मना किया था कि किसी भी पुरुष को छूना मत। उससे दूर-ही-दूर रहना। यह पुरुष पतंगे हैं। जहाँ शमा जलती वहाँ है ये परवाने बनकर पहुँच जाते हैं। इनमें प्यार नहीं होता। ये वासना के पुजारी होते हैं। नारी से इनकी वासनापूर्ति होती है इसीलिए उसे प्यार करते हैं।

हिमकिरीटिनी न जाने कितनी देर तक विचारों से लीन रही। अन्त में वह मुस्करा दी और उसके अन्तःकरण ने कहा—'तुम नगर वधू नहीं हो तुम कंचनपुर की राजकुमारी हिमकिरीटिनी हो। तुमने प्यार किया नहीं तुम्हें दीपक से प्यार हो गया है। तुम्हारा प्यार पवित्र है तुम उसकी पूजा करो, तुम्हें सफलता मिलेगी।'

अन्तर्द्वन्द्व

नित्य दोपहर का नियम था कमला भोजन के बाद अपने कक्ष में जाकर सो जाती। फिर वह तीसरे पहर ही उठती।

यही वह समय होता जब दीपक आता। उसे हिमकिरीटिनी की प्रधान दासी उसके कक्ष में पहुँचा देती। कमला को पता ही नहीं चल पाता कि दीपक कब आया था और कब चला गया।

दोपहर बीतने पर थी। हिमकिरीटिनी ने दीपक के माथे पर हाथ रख दिया। वह उसके बाल सहलाती हुई मधुर स्वर में बोली—"अगर तुम सुरा का सेवन करोगे तो मैं तुम्हारी राह से हट जाऊँगी। तुम्हारा हृदय टूट गया था। तुम्हें प्यार चाहिए था। मैंने तुम्हें प्यार दिया है। तुम पर मेरा अधिकार है।"

"हिमकिरीटिनी तुम नगर वधू हो। तुमने ही कहा था कि नगरवधू किसी को प्यार नहीं करती।"

"हाँ मैंने कहा था। मैं नगरवधू नहीं हूँ। मैंने आज तक कोई पाप नहीं नहीं किया। मैं गंगा जल की तरह पवित्र हूँ!"

"तुम वेश्या की हवेली में रहती हो। तुम नाचती हो। तुम गाती हो। तुम पर धन की बरसात होती है।"

"इस सत्य पर मैं आवरण नहीं डाल सकती। यह सच है।"

"फिर झूठ क्या है?"

"झूठ यह है कि लोग मुझे गलत समझते हैं। झूठ यह है कि मैं अपनी इच्छा से यहाँ नहीं आयी हूँ। मुझे लाया गया है।"

"और सच?"

"और सच यह है कि मैं शरणार्थी बनकर आयी थी और मुझे नगरवधू कहा जाने लगा। मैं नहीं जानती थी कि जहाँ मैं आश्रय पाने जा रही हूँ वह किसी नगरवधू की हवेली है।"

अब हिमकिरीटिनी रोने लगी थी। उसने आदि से लेकर अन्त तक की अपनी सारी कथा दीपक को सुना दी।

दीपक को लगा सच्चाई उसके सामने खड़ी है। और पुकार-पुकार कर कह रही कि सत्य को कभी झुठलाया नहीं जा सकता। मिथ्या के पैर नहीं होते। सुगन्ध सच्चे फूलों से ही आती है। कागज के नकली फूलों में कभी खुशबू नहीं होती।

दीपक ने हिमकिरीटिनी के आँसू अपने रूमाल से पोंछे। उसने उसका सिर ऊपर उठाया और उसकी आँखों में झाँकने लगा।

उसने धीरे से विश्वास दिलाते हुए कहा, "मैं सुरा का सेवन आज से नहीं करूँगा। हिमकिरीटिनी तुम्हें वचन देता हूँ।"

"बस मैं यही चाहती हूँ। बस मुझे यही चाहिए।"

"मैं तुम्हें पाना चाहता था हिमकिरीटिनी। तुमने मेरा प्यार स्वीकार कर लिया। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

उस दिन ऐसी बातें हुईं। अपनी हवेली आकर दीपक सोचने लगा कि मैंने नीली को ठुकराया इससे पिताजी असन्तुष्ट हो गये। रत्नगर्भा के पिता मानिकचन्द हम दोनों के बीच में दीवाल बन गये। हिमकिरीटिनी मुझे चाहती है। मैं उसका जीवन साथी बनूँगा। किन्तु उसे अपनी कोठी में कैसे लाऊँगा। उसके नाम के साथ कलंक जुड़ चुका है, कि वह नगर वधू है। समाज ने उसके माथे पर कलंक का टीका लगा दिया कि वह वेश्या की हवेली में रहती है। उसका नाच देखने नगर के प्रमुख नागरिक जाते। उसके संगीत प्रेमियों की भी कमी नहीं है।

दीपक इसी तरह न जाने क्या-क्या सोचता रहा। कभी उसके मन में आता कि वह हिमकिरीटिनी को लेकर मोहनजोदड़ो से कहीं दूर चला जाए। कहीं दूर प्यार का संसार बसेगा। वह घर उत्तराधिकार धन और वैभव सभी का त्याग कर देगा।

हिमकिरीटिनी के लिए दीपक को अटल विश्वास था कि वह हर स्थिति में उसके साथ सुखी रहेगी। प्रत्येक परिस्थिति में वह मुस्करायेगी। वह प्यार की देवी है। वह प्यार की पूजा है।

दीपक को नींद नहीं आयी। विचारों का सिलसिला समाप्त नहीं होता। एक के बाद दूसरा विचार आता।

आधी रात हो चुकी थी। दीपक कमरे से बाहर आया। उसने ऊपर

आसमान पर दृष्टि डाली तारे जुगनू से चमक रहे थे। रात अँधेरी थी। वह बरामदे में टहल रहा था। उसने कमर पर दोनों हाथ बाँध लिये थे।

अब दीपक सोच रहा था कि हिमकिरीटिनी को कमला अपनी हवेली से सहज ही नहीं जाने देगी। इसके लिए भी संघर्ष करना होगा।

दीपक सोचता रहा। उसके विचारों का अन्त ही नहीं हो रहा था। रात का अन्तिम पहर आ गया। वह बिस्तर पर आकर लेटा तो उसे नींद आ गयी। सपने में उसने देखा कि उसने एक छोटा-सा घर बसाया है। उस घर की रानी हिमकिरीटिनी है। वह राजा है। घर कच्चा है। उसका आँगन गोबर से लीपा गया है। उस आँगन के एक कोने में तुलसी का पौधा है। हिमकिरीटिनी उसकी रोज पूजा करती। वह साँझ को तुलसी की आरती करती है। लड्डुओं का भोग लगाती है।

हिमकिरीटिनी ने एक तोता पाला है। वह लोहे के पिंजड़े में रहता। वह राम-राम रटता।

इधर दीपक की यह परिस्थिति थी। उधर हिमकिरीटिनी सोच रही थी कि यह जीवन व्यर्थ है। इसका भविष्य अच्छा नहीं है। जिस नारी के पति नहीं उसका जीवन निराधार है। उसका कोई मूल्य नहीं। जिस नारी के पुत्र नहीं। समाज में उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। वह अशुभ मानी जाती। उसे लोग बन्ध्या कहकर पुकारते। इस तरह यह सिद्ध हो जाता है कि नारी के लिए पति ही उसका संसार है। पुत्र उसका भविष्य।

उस रात हिमकिरीटिनी सोयी नहीं। चिन्ता ने उसे सोने नहीं दिया उसे हवेली से घृणा हो गयी। कमला का धन वैभव उसे साँप की तरह काटने लगेगा। उसे कमला पर क्रोध आ रहा था कि उसने उसे नगरवधू क्यों बना दिया?

सवेरे सूरज ने आँखें खोलीं तो कमला हिमकिरीटिनी के कक्ष में आयी। उसने देखा हिमकिरीटिनी खिड़की पर खड़ी है। वह नीचे झाँक रही है।

कमला ने पास आकर अपना स्नेह भरा हाथ हिमकिरीटिनी के सिर पर रख दिया। वह उसकी बलाएँ लेती हुई मृदु स्वर में बोली—"कैसे चुप-चाप खड़ी हो हेमा?"

हिमकिरीटिनी ने पीछे घूम कर भी नहीं देखा। उसने कमला को कोई

उत्तर नहीं दिया। वह पथ पर देख रही थी। कोई आ रहा था कोई जा रहा था। हर आदमी अपने में व्यस्त दिखलायी पड़ता।

हिमकिरीटिनी का अन्तःकरण कहने लगा कि सबके पास काम है। सब का अपना कर्तव्य है। किसी को अवकाश नहीं है। हर आदमी व्यस्त है। मेरा जीवन व्यर्थ है। मुझे ही मदिरा की प्याली बना दिया गया है। जिसे पीकर लोग मस्त हो जाते हैं। मैं यहाँ नहीं रहूँगी। यह काल कोठरी है। यहाँ मेरे भीतर की नारी मर जायेगी। यह बदनाम जगह है। यहाँ बदनाम लोग आते हैं।

"क्या सोच रही हो हिमकिरीटिनी ?"

यह कहने के साथ कमला ने हिमकिरीटिनी को अपनी ओर खींच लिया। उसने उसका चेहरा गम्भीर और उतरा हुआ देखा, तो सन्नाटे में आ गयी। उसे अपने वक्ष से लगा लिया। और व्यस्त स्वर में पूछने लगी—"क्या बात है हेमा? तुम कुछ परेशान हो, तुम्हें किसी ने कुछ कहा है क्या ?"

"हाँ, कहा है ?"

"क्या ?"

"यही कि तुम्हारे जीवन को धिक्कार है।"

"किसने कहा है ?"

कमला को क्रोध आ गया। वह गुस्से से काँपने लगी। तभी उसने सुना कि हिमकिरीटिनी कह रही थी—"भाग्य से मेरी बातें हुई थीं। तकदीर ने मुझसे शिकायत की और मुझे खूब धिक्कारा।"

अब कमला का गुस्सा अपने आप शान्त हो गया। वह हँसने लगी उसने प्यार से हिमकिरीटिनी के कपोल पर एक हल्की-सी चपत जड़ी। उसके मुँह से निकला—"तू पागल है। व्यर्थ की बातें सोचा करती है। यह तकदीर और यह भाग्य किसी का भी साथ नहीं देता। दुनिया में सबसे बड़ी ताकत धन की है। धन होने पर स्वर्ग तक सीढ़ी लगायी जा सकती है।"

"जो निर्धन होते हैं वे सुखी कहलाते। धनवान इस धरती के साँप होते हैं। उनमें विष-ही-विष होता है। वे दूसरों का भला कभी नहीं करते। उनसे हमेशा अहित ही होता है। मुझे धन नहीं, मन की शान्ति चाहिए।"

"तुम पागल तो नहीं हो गयी हो। आज तुम्हें क्या हो गया ?"

"आज मेरी आँखें खुल गयी हैं। अभी तक मैं सो रही थी।"

कमला की समझ में कुछ नहीं आया। वह हैरान हो गयी। हिमकिरीटिनी को खींच कर बिस्तर पर लायी। उसका सिर अपने वक्ष पर टिका लिया। उसे समझाने लगी कि "व्यर्थ की बातें कभी मत सोचा करो बेटी। अधिक सोचने से मन खराब होता है और उलझन बढ़ जाती है। फिर तुम्हें सोचने की जरूरत क्या है ? तुम इस हवेली की रानी हो रानी, तुम्हारे एक इशारे पर यह दास और दासियाँ हाथ जोड़कर खड़े हो जायेंगे। तुम जो इच्छा करोगी वह फौरन पूरी हो जायेगी।" हिमकिरीटिनी ने यह सुना तो वह सजग हो गयी। व्यस्त स्वर में कमला से कहने लगी—"मेरी हर इच्छा पूरी होगी ?"

"हाँ तू जो कहेगी वही किया जायेगा।"

"वही करोगी यह वचन देती हो ?"

"मैं वचन देती हूँ बेटी मैं तेरे लिए सब कुछ करूँगी।"

"मुझे यहाँ से जाने दो। मुझे यह हवेली और धन नहीं चाहिए।"

कमला को ऐसा लगा कि जैसे उस पर वज्रपात हो गया है। वह भौंचक्की-सी रह गयी। हिमकिरीटिनी का मुख देखने लगी। उसके मन में शंकाएँ आने-जाने लगी कि किसी ने इस लड़की को बहका दिया है। किसी ने इसके कान भरे हैं। इसे धन का लालच नहीं क्योंकि यह राजकुमारी है। यह मुँह में चाँदी का चम्मच लेकर पैदा हुई थी। किन्तु भाग्य ने इसे यहाँ लाकर पटका।

कमला को कोई उत्तर नहीं दिया। वह गुप्त भय की आशंका से मन ही मन काँप गयी। उसे लग रहा था कि आपत्ति के बादल हवेली पर छा गये हैं। कोई न कोई अनहोनी घटना शीघ्र ही घटने वाली है यह उसी के लक्षण हैं।

कमला मौन ही मौन रही। उसने हिमकिरीटिनी को वहीं पर छोड़ा, चुपचाप उठकर अपने कमरे में चली आयी। उसने दो विश्वासपात्र दासियों को भेजा। उन्हें आदेश दिया था कि वे हिमकिरीटिनी का मन बहलाने की कोशिश करें। वह उलझन में है। उसका चित्त परेशान है।

कमला ने एक-एक कर सभी दास और दासियों को अपने कमरे में बुलाया। वह सब पर बिगड़ी उसका एक ही प्रश्न था जिसका कोई भी उत्तर नहीं दे पाता। वह सबसे पूछती कि हिमकिरीटिनी के पास कौन आया था?

उलझन

कमला की उलझन बहुत अधिक बढ़ गयी थी। उसने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि हिमकिरीटिनी में इतनी जल्दी परिवर्तन हो जायेगा। सन्देह ही नहीं, उसका पूर्ण विश्वास था कि किसी ने हिमकिरीटिनी को उल्टा-सीधा समझाया है। वह भड़क गयी है। उसका मस्तिष्क खराब हो गया है।

कमला ने सबसे पहला कदम यह उठाया कि गुप्त रूप से उसने हिमकिरीटनी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उसे तनिक भी खबर नहीं होने दी।

कमला का आदेश था कि हिमकिरीटिनी के कमरे में बाहर का कोई भी स्त्री या पुरुष नहीं जायेगा। हवेली के दरबान को कड़ा आदेश मिल चुका था कि जो भी पुरुष हवेली में आये, उसे मेरे पास भेजा जाये। उसके आते ही मुझे सूचना मिले कि अमुक व्यक्ति आया है।

दासियों को कमला ने आगाह कर दिया था कि दिन-रात हिमकिरीटिनी का मन बहलाओ। मनोविनोद और मनोरंजन से उसे प्रसन्न रखो। उसे सोचने का मौका मत दो और कभी अकेली मत छोड़ो।

कमला हवेली की स्वामिनी थी। उसकी आज्ञा का पालन होने लगा। दीपक अपने नियत समय पर आया। आज दरबान ने उसे टोक दिया। उसका कहना था कि वह हिमकिरीटिनी से नहीं मिल सकता है। उसे मालकिन के पास जाना होगा। हिमकिरीटिनी की तबियत अच्छी नहीं है। वैद्य ने उसे सबसे मिलने के लिए मना कर दिया है।

दीपक वहीं पर रुक गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कल

हिमकिरीटिनी बिल्कुल अच्छी थी। आज अचानक उसे क्या हो गया? वहाँ जाकर मैं क्या करूँगा?

देर तक दीपक वहीं पर खड़ा रहा फिर घूमकर चल दिया। जाने से पहले उसे अपना परिचय दरबान को देना पड़ा।

कमला ने दीपक का नाम सुना तो कुछ चौंकी मगर फिर सन्तोष कर लिया। वह युवक है। हिमकिरीटिनी से मिलने आया होगा। उसकी आज्ञा न मिलने पर लौट गया।

फिर दीपक नहीं आया। पूरे तीन दिन बीत गये। चौथे दिन कमला हिमकिरीटिनी के कमरे में आयी। तब भी हिमकिरीटिनी गम्भीर थी। वह कमला से बोली नहीं, बिस्तर पर लेटी थी। लेटी ही रही।

कमला आकर हिमकिरीटिनी के पास बैठ गयी। उसने उसके माथे पर हाथ रखा। वह प्यार से बोली, "क्या सोच रही हो हेमा? मन से व्यर्थ की बातें निकाल दो। यहाँ का सब कुछ तुम्हारा है। मैं हवेली की रखवाली करती हूँ। अगर तुम्हें मुझसे कोई कष्ट है तो मैं हवेली छोड़कर जा सकती हूँ।"

अब हिमकिरीटिनी उठकर बैठ गयी। वह मुस्करायी और व्यंग्य भरे स्वर में कहने लगी—"तुम क्यों जाओगी तुमने धन कमाया है। तुम्हारे वैभव की कहानी पूरा नगर कहता है। मुझे जाने दो मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ दो।"

"फिर तुम बहकी-बहकी बातें करने लगी हो। इसीलिए मैं तुम्हारे पास नहीं आयी। मुझे कारण बतलाओ कि आखिर तुम्हें क्या हो गया है?

"कारण यह है कि तुमसे और तुम्हारे धन से घृणा हो गयी।"

"यह अचानक तुम्हें सनक कैसे सवार हुई?"

"जैसे अचानक तुम्हारे जाल में फँसी थी।"

"मैंने तुम्हें जाल में फँसाया।"

"तुम्हें पहले ही बतला देना चाहिए कि तुम नगर वधू हो। तुम्हें अपनी हवेली आबाद करनी थी। इसीलिए तुम मुझे विश्वास में यहाँ लेकर आयी।"

"हेमा पागलपन छोड़ दो। जिन्दगी को हँसकर व्यतीत करो। कोई

तुम्हारा साथ नहीं देगा। ये पुरुष बड़े स्वार्थी होते हैं। नारी को एक खिलौना समझते हैं। खिलौने से खेलते और उसे तोड़ कर फेंक देते हैं।"

"मैं खिलौना नहीं पत्थर हूँ पत्थर। मुझसे जो टकरायेगा उसका सिर अपने आप फूट जायेगा।"

"हेमा शान्ति से काम लो। अभी चार दिन पहले तुम मेरी अच्छाइयाँ देखती थीं। मुझे माँ कहकर पुकारती मुझसे श्रद्धा करती थीं। आज तुम्हारे सामने मेरी कमियाँ और बुराइयाँ हैं। मुझे सन्तोष है। मैं तनिक भी बुरा नहीं मानती और न तुमसे नाराज हूँ। अपनी सन्तान जब मुँह पर थप्पड़ मारती है तो माँ-बाप कैसे सहन करते हैं?"

"मैं तुम्हारी सन्तान नहीं हूँ।"

'फिर कौन हो?"

"एक दुखियारी एक शरणार्थी जिसे तुमने धोखा देकर चाँदी के चबूतरे पर बैठाया है और नगर वधू बना दिया। तुम्हारी सन्तान गौरव है।"

"क्या कहा गौरव मेरी सन्तान है।"

"मुझसे छिपाने की कोशिश मत करो। मुझे सब मालूम हो चुका है।"

"क्या मालूम हो चुका है?"

"यही कि तुम्हारी दासी वनमाला समाज में गौरव की माँ है। उसका ब्याह मिस्र के व्यापारी आमेन की बेटी नीली के साथ हो रहा है। कितनी प्यारी होती है अपनी सन्तान। गौरव के लिए कोई भी नहीं जानता कि वह वेश्या का पुत्र है। मैं राजकुमारी हूं। राजघराने की लड़की हूँ। तुमने मुझे नगरवधू बना दिया है। यह पाप नहीं महापाप है।"

कमला ने अपने दोनों हाथ कानों पर रख लिए। वह उठ कर वहाँ से चल दी। उसने अपने कमरे में जाकर ही साँस ली। उसे लग रहा था कि उसके सिर पर हथौड़े की चोटें पड़ रही हैं।

कमला औंधे मुँह बिस्तर पर गिरी। देर तक उसने सिर ऊपर नहीं उठाया। उसी रात कमला ने वनमाला को बुलवाया। उससे जानकारी प्राप्त की। उसने बतलाया कि उसकी हिमकिरीटिनी से कोई बात नहीं हुई।

कमला की उलझन पहले से अधिक बढ़ गयी वह अपने मन में आवश्य-

कता से अधिक हैरान थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि परिवर्तित परिस्थिति पर किस तरह नियन्त्रण पाया जाय।

दूसरे दिन कमला विस्तर से नहीं उठी। वह हर दास पर बिगड़ती दासियों पर अकारण ही क्रोध करने लगती। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

कमला का चित्त अशान्त था। वह चुपचाप लेटी थी। उसे लग रहा था कि विनाश के दिन आ गये हैं। ब्याह से पहले अगर गौरव का भेद खुल गया तो आमेन उसके साथ नीली का ब्याह कभी नहीं करेगा।

इधर कमला की यह स्थिति थी और उधर उसी साँझ को नगर का पागल उसकी हवेली में घुस आया। दरबान ने उसे टोका वह बोला—"स्वामिनी का आदेश है कि पहले नाम और पता बतलाओ। तभी आप अन्दर जा सकते हैं।"

"तेरी ऐसी की तैसी। नाम और पता पूछता है।"

दरबान बेचारा औंधे मुँह गिरा। इतने में ही पागल अन्दर पहुँच गया। वह सीधा कमला के कमरे में आया।

कमला पागल को देखकर घबड़ा गयी। वह भयभीत स्वर में कहने लगी—"तुम यहाँ क्यों आये हो? तुम्हें किसने बुलाया है।"

"तेरी सूरत देखने आया हूँ। तू कितनी निर्दयी है। तूने मेरे प्यार को ठुकरा दिया। तू मेरी मौत है।"

"यहाँ से चले जाओ, अभी जाओ, तुम्हें रुपये चाहिए कितना दूँ?"

"रुपया तुझे चाहिए मुझे नहीं। तू नागिन है मैं मेढ़क हूँ।"

"तुम चले जाओ मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ।"

"मैं चला जाऊँगा। कमला तू कितनी गोरी है। लेकिन तेरा हृदय काला है। मुझे देख मैं एक तबाह आदमी हूँ। मैं प्यार की बाजी में सबकुछ हारने के बाद अपना हृदय भी हार गया। यही मेरी दुर्बलता है।"

"ईश्वर के लिए यहाँ से चले जाओ। कोई सुन लेगा तो मैं बदनाम हो जाऊँगी।"

"हाँ तेरा बड़ा नाम है। तू नगरवधू है। तूने अपना घर बसाया। तू नयी नगरवधू लायी है। सुन कमला यह मोहनजोदड़ो धरती के गर्भ में

समा जायेगा। यहाँ सिन्धु नदी उबलेगी और यहाँ प्रलय हो जायेगा।"

"देखो तुम चले जाओ। मुझे परेशान मत करो। चलो मैं तुम्हें फाटक तक छोड़ आती हूँ।"

"अरी चुड़ैल मुझे कहाँ भेज रही है। मैंने घर नहीं बनाया। मैंने घर नहीं बसाया। तू लंका की डायन है। तूने मेरे हृदय में आग लगा दी।"

आखिर कमला पागल के पैरों पर गिर पड़ी। वह रोने लगी। उसने उसके पैर अपने आँसुओं से धो दिये।

पागल जब हवेली के आँगन में आया तो उसने हाथी की पूँछ पकड़ी और उसे जोर से हिलाने लगा। महावत उसे मना करने लगा तो पागल ने जोर से उसे एक लात मारी। वह कहने लगा—"मैं हाथी पर बैठकर सिन्धु नदी के बन्दरगाह पर जाऊँगा और तू मुझे मना करता है।"

हाथी बैठ गया। पागल उस पर सवार हो गया। दूर खड़ी कमला यह सब देख रही थी। उसने संकेत से महावत और दरबान को मना कर दिया कि वे दोनों पागल से कुछ भी न कहें।

हाथी के पीछे कमला ने अपने चार सेवक भेज दिये। उन्हें आदेश मिला था कि हाथी की देखभाल करें। मौका पाते ही उसे हवेली में ले आयें। यही उनकी जिम्मेदारी है।

पागल हाथी पर बैठ गया था वह हाथी के माथे पर जोर से लात मारता और कहता चल जल्दी चल। आमेन आ रहा है। वह नीली गुड़िया ला रहा है। उसका ब्याह होगा। वह मोहनजोदड़ो की बहू बनेगी।

लोग देखते और आश्चर्य से तालियाँ पीट कर हँसते। उनका कहना था कि आज पागल सम्राट बन गया है। वह हाथी पर सवार है।

हाथी बीच बाजार से गुजर रहा था। पागल कह रहा था—"मेरी पूजा करो मेरी आरती उतारो मैं प्रलय का देवता हूँ। अगर मेरी पूजा करोगे, तो प्रलय नहीं होगा। तुम्हारा नगर बच जायेगा।"

लोग पागल को देखते उसकी बातें सुनते कोई-कोई कह रहा था कि यह हाथी नगरवधू कमला का है। यह पागल हवेली में घुस गया होगा। यह हाथी लेकर आया। बेचारी कमला हाय-हाय कर रही होगी।

रात तक पागल हाथी पर घूमता रहा। फिर उसने उसे ले जाकर

सिन्धु नदी के अन्दर बन्दरगाह पर छोड़ दिया। तब वहां एक जलपोत खड़ा था। उसने लंगर पहले से डाल रखा था।

उस पर सूखी मेवा उतर रही थी जो मिस्र की राजधानी काहिरा से आयी थी।

पागल ने हाथी छोड़ दिया। वह बन्दरगाह के गोदाम में आ गया। वह बोरे फाड़-फाड़ कर सूखे मेवे खाने लगा। किसी ने भी उसे नहीं टोका सब लोग हँस रहे थे। वहां का प्रबन्धक कह रहा था—"पागल कितना खायेगा। इसका पेट छोटा-सा है। बहुत जल्दी मर जाएगा।"

इधर जब हाथी अकेला मिला तो कमला के नौकर उसे हवेली ले आए। कमला ने दरबान को कड़ी चेतावनी दी। उसका कहना था कि यदि भविष्य में पागल हवेली में आ गया तो उसे नौकरी से हटा दिया जायेगा।

कमला इतनी अधिक हैरान और परेशान थी कि जिसका नाम नहीं। उसके सिर में पीड़ा होने लगी। वह भूखी और प्यासी थी। आज सवेरे से उसने कुछ भी नहीं खाया। केवल वेदना पी रही थी। आज उसे बोध हो रहा था कि दुख क्या है और उसकी परिभाषा क्या है? आज उसकी समझ में आया था कि पाप क्या है और उसका प्रायश्चित क्या है?

आज कमला के समझ में आया था कि जीवन क्या है? उसका अर्थ क्या है? उसका भोग क्या है?

एक दासी के विशेष आग्रह पर कमला ने अनार का रस लिया। उसने चांदी की कटोरी में लायी गयी मलाई में सोने की भस्म डाल कर खायी फिर एक कटोरा कच्चा गाय का दूध पिया। जिसमें मिश्री डाली गयी थी।

कमला के चित्त को कुछ शान्ति मिली। उसने प्रमुख दासी को बुलाया और उसे आदेश दिया कि वह वीणा लेकर बैठे और उसे उस पर संगीत सुनाये।

वीणा बजने लगी। संगीत मुखरित होने लगी। कमला बिस्तर पर लेटी थी। उसकी पलकें बन्द होने लगीं। वह सुन रही थी—"मैंने देखा अपने राम जीवन है एक धुन। हां मैंने देखा अपने राम।"

संगीत की स्वर लहरी गूंज रही थी। कमला सोने लगी थी उसे नींद

आ रही थी। आज उसकी समझ में संगीत का महत्व आया। आज उसने उसका महत्व समझा क्योंकि उसे संगीत से शान्ति मिली थी।

वीणा बज रही थी। कमला सो गयी। वातावरण मुखरित था और उसमें शान्ति का समावेश हो रहा था।

प्रसन्नता की लहर

आमेन नीली के ब्याह की तैयारियों में व्यस्त था। उसे एक क्षण का भी अवकाश नहीं था। उसने सोच लिया था कि अभी वह गौरव से कुछ भी नहीं कहेगा। ब्याह के जब पाँच साल बीतेंगे, तो वह उसे अपना उत्तराधिकारी बना देगा।

आमेन हर मिलने वाले से यही कहता कि लड़का ऐसा है जैसे गुलाब का फूल। दौलत इतनी है कि वह सौ रुपये का पान का बीड़ा खाता है। यह ब्याह नीली के भाग्य से हो गया। लड़का लाखों में एक है।

आमेन बारात के ठहरने के लिए व्यवस्था कर रहा था। उसने इतना सुन्दर आवास बनवाया जिसे देखकर लोग दंग रह जाते।

इधर आमेन प्रसन्नता से फूला नहीं समा रहा था। और उधर नीली नील नदी पर जाती। वह माटी के दीपक कपूर जलाकर नदी में प्रवाहित करती। उसका कहना था कि ऐसे ही मैं खुशियों के चिराग सिन्धु नदी में बहाऊँगी। मैं मिस्र की राजकुमारी और भारत की राजवधू हूँ। मुझे वह सौभाग्य प्राप्त है जो प्रत्येक को नहीं मिलता।

वनमाला भी गौरव की ओर देख रही थी। उसने सारी तैयारी कर ली थी। वह पूरी तरह व्यस्त थी। उसका कहना था कि गौरव की बारात में लगभग पाँच सौ बाराती जायेंगे। यह बारात भारत से मिस्र जायेगी। बाराती वहाँ धन लुटायेंगे और मिस्र देश वाले इसका तमाशा देखेंगे।

कमला के सामने गौरव के ब्याह की समस्या एक साधारण-सी

समस्या नहीं थी। वह चाहती थी कि किसी तरह बारात यहाँ से चली जाये और राधा मोहन को इसका पता न लगे।

पागल ने भी आकर कमला का मस्तिष्क खराब कर दिया था। उसने संयम से काम लिया। पागल पर विजय पाना आसान नहीं था।

हिमकिरीटिनी ने विद्रोह मचा रखा था। वह हवेली छोड़ने के लिए पूरी तरह तैयार बैठी थी। कमला के लिए यह एक जटिल समस्या बन गयी। वह अपने में विवश हो गयी थी और उसे भविष्य अन्धकारमय दिखलायी पड़ने लगा।

ऐसे में ही गौरव की बारात उठी। कमला का दुर्भाग्य था कि वह उस बारात में शामिल नहीं हो पायी। वह वनमाला की हवेली भी नहीं पहुँची। उसने दूल्हे को नहीं देखा। बारात जलपोत के द्वारा मिस्र देश के लिए रवाना हो गयी। कमला उदासी लिए अपनी हवेली में बैठी रही। उसके सामने समस्याएँ-ही-समस्याएँ थीं।

एक दिन जब कमला सिन्धु नदी से स्नान कर प्रातः लौट रही थी तो अचानक उसकी भेंट राधा मोहन से हो गयी। दोनों बहुत दिन बाद मिले थे। उनमें हँस-हँसकर बातें होने लगीं।

कमला को शिकायत थी कि राधा मोहन उसकी हवेली कभी नहीं आते हैं। ऐसे ही राधा मोहन का कहना था कि कमला उसे भूल गयी है। वह उसे कभी निमन्त्रण नहीं देती। कभी याद नहीं करती।

दोनों में घुल-घुलकर बातें हो रही थी। तभी एक आदमी राधा मोहन के सामने आकर रुक गया। उसने उन्हें नमस्कार किया और फिर हँसकर कहने लगा—"आप गौरव की बारात में नहीं गये राधा मोहन? बारात मिस्र गयी है। वहाँ के व्यापारी आमेन ने अपनी लड़की नीली का ब्याह उसके साथ किया है। एक करोड़ नकद दहेज देगा। एक जलपोत गौरव को भेंट करेगा। तकदीर उसे कहते हैं।"

राधा मोहन को कुछ भी पता नहीं था। कमला राधा मोहन की हैरानी देखी तो भीतर-ही-भीतर बहुत ही ज्यादा परेशानी हो गयी। वह जाना चाहती थी लेकिन गयी नहीं। उसे समझना था कि राधा मोहन पर गौरव के ब्याह का क्या प्रभाव पड़ता है।

राधा मोहन मौन रहे। उन्होंने हँसकर उस आदमी को विदा कर दिया, तभी कमला ने भी उनसे विदा ली। उसका भी कहना था कि उसे गौरव के ब्याह का कुछ भी पता नहीं है। वह अपनी उलझन में है नयी नगर वधू हिमकिरीटिनी ने उसे हैरान कर रखा है।

कमला अपनी हवेली की ओर चल दी। वह रथ पर सवार थी। उसके साथ उसकी प्रधान दासी थी।

राधा मोहन अपनी हवेली में आये। उन्होंने अचानक काम देखा और उसके बाद वनमाला की हवेली की ओर चल दिये।

वनमाला ने राधा मोहन को देखा तो पत्ते की तरह काँपने लगी। वह सहम गयी थी। उसे डर लग रहा था कि राधा मोहन उसे बुरी तरह फटकारेंगे। उस पर बहुत बिगड़ेंगे। वह उनके क्रोध का सामना नहीं कर पायेगी। वह उनसे धन पाती है वह उनकी आज्ञा का पालन करती है।

राधामोहन के सामने चाँदी की चौकी आ गयी। उन पर दो दासियाँ आकर चाँदी का चँवर डुलाने लगी। उनके सामने चाँदी की कटोरियों में रस मलायी और रबड़ी आयी। उन्हें खाने के लिए पान का जो बीड़ा दिया गया उस पर चाँदी के वर्क लगे थे। वह सोने की तश्तरी में रखा था। उसमें लौंग लगी थी। उसमें केशर कस्तूरी और जावित्री पड़ी थी।

राधा मोहन ने वनमाला से प्रश्न कर दिया वे बोले—"गौरव की बारात चली गयी और तुमने मुझे उसकी सूचना भी नहीं दी वनमाला।"

वनमाला मौन थी। राधा मोहन ने पूछा—"ऐसा क्यों हुआ वनमाला?"

अब वनमाला की दृष्टि नीचे झुक गयी थी। उसके बदन में काटो तो लोहू नहीं वह बुरी तरह भयभीत थी।

"क्या कमला ने इसके लिए तुम्हें मना किया था?"

वनमाला गूंगी-बहरी बन गयी थी।

राधा मोहन क्रोध से काँपने लगे। वे अपने पर संयम नहीं रख पाये। वे आवेश में आ गये और उत्तेजित होकर वनमाला से तेज गले में कहने लगे—"गौरव के ब्याह की बात मुझसे गुप्त क्यों रखी गयी वनमाला?"

वनमाला के पास शब्द नहीं थे फिर वह राधा मोहन को क्या उत्तर

देती ?

राधा मोहन देर तक बडबड़ाते रहे। वे वहाँ से भी सीधे अपनी हवेली नहीं आये। कमला के पास पहुँचे। जाते ही उस पर बहुत बिगड़े। वे उसे दोषी ठहराते हुए कहने लगे—"मेरी समझ में सबकुछ आ गया कि तुमने गौरव के ब्याह की सूचना मुझे क्यों नहीं दी। नीली का ब्याह दीपक के साथ हो रहा था। वह सम्बन्ध विच्छेद हो गया तुमने उस अवसर का अनुचित लाभ उठाया। गौरव की बारात चली गयी। तुम्हारी बहू आ रही होगी।"

कमला अपराधी थी। दोष उसका था। इसीलिए वह चुप थी। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

राधा मोहन अंगारे पर पैर रखते हुए आये, वे क्रोध से बबूला हो रहे थे। वे बैठे भी नहीं; खड़े ही रहे और कमला से व्यस्त स्वर में कहने लगे—"आज से गौरव को एक पैसा भी नहीं दूंगा। उसका सारा खर्च बन्द कर दूंगा।"

अब कमला चुप न रह सकी। उसने ईंट का जवाब पत्थर से दिया। वह बोली, "गौरव को तुम्हारे पैसे की जरूरत नहीं है। मेरे पास असीम धन है आखिर उसे कौन खर्च करेगा।"

"मैं सभी जगह पर यह प्रचार कर दूंगा कि गौरव तुम्हारा बेटा है। उसे मैंने जन्म दिया है। वह नगरवधू का पुत्र है।"

"तुम्हारा जो मन हो वह जाकर करो मैं इसके लिए मना नहीं करती हूँ। मेरे बेटे का ब्याह हो गया होगा। बारात लौट रही होगी।"

अब राधा मोहन बुरी तरह खिसिया गये। उन्होंने जाने का आयोजन किया और जाते-जाते कमला से कहने लगे—"वेश्या किसी की मित्र नहीं होती। उसे धन प्यारा होता है। तुम्हारा कोई दोष नहीं है कमला आखिर तुम नगरवधू हो।"

"यह सब तुमको पहले ही सोचना चाहिए था। मैं तुम्हें बुलाने और निमन्त्रण देने नहीं गयी थी। तुम अपनी इच्छाओं की बारात लेकर मेरी हवेली में आये। अब तुम्हें अपनी भूल मालूम हो रही है। इसके लिए मैं क्या करूँ?"

"ठीक कहती हो कमला, मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता नारी है। वह

नारी को अबला समझता है। उस पर अपने को निछावर कर देगा। मगर वही नारी अवसर पाते ही नागिन बनकर उसे डस लेती है।"

"तुम्हारे मुँह से यह सब कुछ शोभा नहीं देता है; तुम सब कह सकते हो।"

राधा मोहन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे चल दिये। उन्हें लग रहा था कि जीवन में उनकी सबसे बड़ी हार हुई है। वे पराजित हो गये। एक नारी ने उनके अस्तित्व को कुचल दिया।

पुरुष का क्रोध

राधा मोहन जब अपनी हवेली आये तो वे चोट खाये हुए नाग की तरह बिलबिला रहे थे। देर तक वे कमरे में टहलते रहे। उनका क्रोध किसी तरह शान्त नहीं हो पा रहा था।

राधा मोहन ने उसी समय मिस्र जाने तैयारी की। वे मिस्र जाने के लिए सिन्धु नदी के तट पर पहुँच गये। जलपोत छूटनेवाला था। वे उसमें बैठ गये और यात्रा तय करने लगे।

इधर राधा मोहन काहिरा पहुँच रहे थे और उधर नीली का ब्याह गौरव के साथ सम्पन्न हो चुका। आमेन ने बारात को अपने आग्रह पर कुछ दिन के लिए रोक लिया था। वह बारातियों की खातिर कर रहा था। बाराती प्रसन्न थे, उनका ऐसा सम्मान और ऐसा स्वागत कही नही हुआ था।

नीली और गौरव एक सजे सजाये कमरे में बैठे थे। आमेन दोनों को देखकर प्रसन्न हो रहा था। तभी वहाँ राधा मोहन आ गये। वे आते ही आमेन से कहने लगे, "तुमने बहुत जल्दी की आमेन, मेरे लड़के के साथ नीली का सम्बन्ध नहीं हो सकता था। तुम पुराने व्यापार को भूल गये तुमने मुझे बतलाया भी नहीं और गौरव के साथ नीली का ब्याह पक्का कर दिया।

जानते हो गौरव किसका बेटा है ?"

"हाँ जानता हूँ।"

"क्या ?"

"गौरव वनमाला का पुत्र है। उसका पिता बचपन में ही परलोक सिधार गया था।"

अब राधा मोहन जोर से हँसे वे व्यंग्य पूर्वक बोले—"वनमाला मोहन जोदड़ो की प्रसिद्ध नगरवधू कमला की दासी है। गौरव कमला का पुत्र है, उसे सामाजिक प्रतिष्ठा देने के लिए, नगरवधू की हवेली से दूर रखा गया।"

आमेन ने यह सुना तो भौंचक्का रह गया। वह राधा मोहन का मुँह देखने लगा।

गौरव चौंका। नीली को ऐसा लगा कि उसके सिर पर पहाड़ टूटकर गिर पड़ा है।

आमेन राधा मोहन से कहने लगा—"अब मेरी समझ में आ गया कि आप यहाँ क्यों आये हैं। आपके बेटे से मैंने अपनी लड़की का ब्याह नहीं किया। उसी का बदला लेने के लिए आप आये हैं। और गौरव को बदनाम कर रहे हैं, आपके पास प्रमाण क्या है कि गौरव नगरवधू का पुत्र है ?"

राधा मोहन ने बतलाया नगर वधू कमला के तीन प्रेमी थे। सबसे पहला प्रेमी था घनश्याम, उसने अपनी सारी-की-सारी दौलत कमला पर लुटा दी। किन्तु कमला उसकी नहीं हो सकी इसीलिए पागल हो गया। आज भी वह पागल मोहनजोदड़ो की सड़कों पर भटक रहा है।

राधा मोहन कह रहे थे। आमेन चुपचाप खड़ा था। उसने भी पागल को देखा था। अब उसकी समझ में आने लगा कि पागल कौन है ?

अब आमेन मौन हो गया। वह वर्तमान परिस्थिति पर गहरायी से विचार करने लगा। उसने प्रश्न पर प्रश्न किये। राधा मोहन उनका उत्तर बराबर देते-जा रहे थे।

नीली व गौरव दोनों सन्नाटे में आ गये। उन दोनों ने भी पागल को देखा था। पागल एक निराश प्रेमी था उसका हृदय टूट चुका था। इसलिए वह कहता कि विनाश होने वाला है। प्रलय होने में देर नहीं है मोहनजोदड़ो

नगर प्रलय के गर्भ में समा जायेगा।

राधा मोहन आगे कहने लगे कि नगर वधू कमला का दूसरा प्रेमी मानिक चन्द था। इसे भी सफलता नहीं मिली यह भी निराश हो गया। तुम मानिक चन्द को जानते हो आमेन वह कमला की राह से हट गया। आज भी वह कमला को नहीं भूल पाया है। उससे उसे घृणा हो गयी। राधा मोहन का सिलसिला अभी जारी था। वे कह रहे थे कि कमला का तीसरा प्रेमी मैं हूँ, उस नगर वधू ने मेरा प्यार स्वीकार किया, उसके पुत्र हुआ, उसका नाम गौरव रखा गया। अभी तक गौरव का सारा खर्च मैं उठाता रहा हूँ, यह भेद किसी को भी मालूम नहीं है।

कमरे में सन्नाटा छा गया था। सभी लोग राधा मोहन की ओर देख रहे थे। वे कहते जा रहे थे कि गौरव को सामाजिक प्रतिष्ठा मिले उसका भविष्य उज्ज्वल बने। इसीलिए मैं उस पर पैसा पानी की तरह खर्च करता रहा। कमला ने मेरे साथ विश्वासघात किया। उसने मुझे सूचना भी नहीं दी और गौरव की बारात यहाँ आ गयी। इसीलिए मैं तिलमिला गया और मुझे मिस्र आना पड़ा।

आगे राधा मोहन ने यह भी बताया कि मानिक चन्द को यह भेद मालूम है। वह जानता है कि कमला ने एक पुत्र को जन्म दिया था उसका पिता मैं हूँ।

गौरव को अपनी कहानी स्वयं भी मालूम नहीं थी वह अवाक था। नीली अब गौरव को घृणा की दृष्टि से देखने लगी।

राधा मोहन वहाँ से चल दिये। उन्होंने बाहर आकर साँस ली और भारत के लिए रवाना हो गये।

× × ×

राधा मोहन के जाने के बाद आमेन गहरे सोच में डूब गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे? वह अपने कमरे में चला गया। जाते ही बिस्तर पर औंधे मुँह गिरा।

इधर नीली भी गौरव के पास बैठी नहीं रह सकी। वह उठकर अपने कमरे में चली आयी। उसे गौरव से घृणा हो गयी। वह अपने भाग्य पर आँसू बहाने लगी। उसे लग रहा था कि तकदीर ने उसे गुड़ दिखलाकर ईंट

मार दी।

गौरव अकेला रह गया था। उसे वनमाला पर क्रोध आने लगा कि वनमाला ने उसे कोई भी जानकारी नहीं होने दी। उसने उसे अँधेरे में रखा।

बाराती एक बड़े से भवन में ठहराये गये थे। वहाँ भी यह समाचार पहुँच गया कि गौरव नगर वधू का पुत्र है।

सभी बाराती एक-एक करके चल दिये। वे गौरव और वनमाला को बुरा-भला कह रहे थे।

आमेन बहुत कुछ सोचने के बाद इस नतीजे पर पहुँचा कि वह दहेज का कुछ भी सामान गौरव को नहीं देगा। उसके साथ नीली को भारत भी नहीं भेजेगा। वह अपनी बेटी का दूसरा ब्याह करेगा। नीली को विवश कर देगा कि वह गौरव से सम्बन्ध विच्छेद कर दे। उसे तलाक दे दे। गौरव अकेला ही भारत जायेगा।

आमेन बेटी के पास आया उसने उसके विचार जानने चाहे। नीली बाप के अनुकूल थी। उसने छूटते ही उत्तर दिया—"आज ही मैं गौरव से सम्बन्ध विच्छेद कर लूंगी। मैं ऐसे पुरुष के साथ ब्याह नहीं करूँगी जो एक वेश्या का बेटा हो।"

आमेन की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसे अपनी बेटी नीली पर गर्व होने लगा।

उसी दिन नीली ने गौरव से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। उसने गौरव से अपने को अलग कर दिया।

बेचारा गौरव अपना-सा मुँह लेकर रह गया। वह किसी तरह स्वदेश के लिए रवाना हुआ।

जलपोत में बैठा हुआ गौरव सोच रहा था कि वह जाते ही वनमाला का खून कर देगा। उसने उसके जीवन के साथ खिलवाड़ किया है। उसे अँधेरे में रखा।

जलपोत समुद्र की लहरों पर हिलता-हिचकोले खाता हुआ आगे बढ़ रहा था।

उसकी चिमनी से धुआँ निकल रहा था। जब उसका भोंपू बजने लगता

तो गौरव को ऐसा लगता कि उसके कानों के परदे फटे रहे हैं और वह जल्दी ही पागल हो जायेगा।

जलपोत ने यात्रा आधी से अधिक पूरी कर ली। वह खम्भात की खाड़ी में पहुँच रहा था। गौरव को घर पहुँचने की बहुत जल्दी थी। उसे वनमाला पर आवश्यकता से अधिक क्रोध आ रहा था। उसका भविष्य अन्धकारमय हो गया। वह अपने में बहुत हैरान था। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वह लम्बी साँसें लेता और अपने भाग्य को दोषी ठहरा रहा था।

वनमाला

वनमाला में खुशी समाती नहीं फूटी पड़ रही थी। वह अधीरता के साथ बारात के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी। राधा मोहन की नाराजगी की उसे तनिक भी परवाह नहीं थी। वह सोच रही थी कि गौरव का ब्याह हो चुका है। अब राधा मोहन उसका कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकते।

वनमाला को यह भी मालूम हो गया था कि राधा मोहन कमला के पास गये थे। उस पर बहुत बिगड़े उसे धमकी देकर चले आये हैं। अब वे गौरव पर एक पैसा भी खर्च न करेंगे।

वनमाला के मन में इस गुप्त भय की आशंका अवश्य थी कि राधा मोहन मिस्र गये हैं वे वहाँ जहर उगल कर आयेंगे। दोनों नहीं जानती थी कि नीली गौरव को छोड़ देगी।

राधा मोहन मिस्र जाकर स्वदेश वापस भी लौट आये। दोनों अनभिज्ञ ही रहीं।

गौरव ने हवेली में पैर रखा। वह अकेला ही आया था उसके साथ एक भी बाराती न था। दुलहिन नीली भी उसके साथ नहीं थी और न दहेज का कुछ सामान।

वनमाला ने यह देखा तो चौंक गयी। वह सन्नाटे में आ गयी। गौरव

से पूछने पर उसे सारी परिस्थिति का पता हो गया।

गौरव ने वनमाला से पूछा—"तुम मेरी माँ नहीं हो तुम नगर वधू कमला की प्रधान दासी हो। तुमने मुझे यह क्यों नहीं बतलाया ? तुमने मुझसे यह भेद गुप्त क्यों रखा ?"

वनमाला मौन रही। वह देख रही थी गौरव क्रोध से कांप रहा है। वह आपे में नहीं है। उसका गुस्सा सीमा को पार कर रहा है।

वनमाला बुरी तरह सहम गयी। तभी गौरव ने तेज गले से कहा—"तुमने यह भेद छिपाकर मेरा जीवन बरबाद कर दिया है। तुमने मेरा भविष्य अन्धकारमय बना दिया है। अब मैं नगर में मुँह दिखलाने के योग्य नही रहा। मैं जीवित नहीं रहूँगा मैं आत्महत्या कर लूँगा। अभी जाता हूँ सिन्धु नदी में डूब जाऊँगा। मेरे पास एक यही उपाय है।"

वनमाला रोने लगी। वह बुरी तरह घबड़ा गयी थी। उसने आगे बढ़ कर गौरव को अपने वक्ष से लगाना चाहा लेकिन गौरव ने उसे धक्का दे दिया। वह पीठ के बल जमीन पर गिरी। अब गौरव कह रहा था—"जाने से पहले मैं तुम्हारी भी हत्या कर दूँगा। तुम्हें जीवित नही रखूँगा। तुमने मेरे जीवन में विष घोला है तुम मेरी शत्रु हो।"

यह कहने के साथ गौरव आगे बढ़ने लगा। बनमाला ने उसका उग्ररूप देखा तो जोर से चीखी। वह दया की भीख माँगती हुई रो-रो कर करुण स्वर में कह रही थी—"मुझे क्षमा कर दो बेटा मुझसे भूल हुई है।"

"पापी को कभी क्षमा नही करना चाहिए मैं ऐसी भूल नही करूँगा।"

और यह कहने के साथ गौरव वनमाला की छाती पर चढ़ बैठा।

अब वनमाला जोर से चिल्लायी। वह आर्तनाद करती हुई कह रही थी—"बेटा मैं तुम्हारी धर्म की माता हूँ, मुझे क्षमा कर दो।"

"एक दासी मेरी माँ नहीं हो सकती। मैं नगरवधू का बेटा हूँ; कमला मेरी माँ है।"

यह कहने के साथ गौरव ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाये। वे हाथ वनमाला की गर्दन की ओर बढ़ रहे थे।

वनमाला भय से चीखी उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था तब तक गौरव के दोनों हाथ उसकी गर्दन पर पहुँच गये। उसने दोनों हाथों

से गर्दन दबोच ली। वह हँसने लगा था। ऐसा लग रहा था कि वह पागल हो गया है।

गौरव ने वनमाला से हँसते हुए कहा—"तू मेरी माँ है। तू मेरी धर्म की माता है। तू मेरे साथ ऐसा नाटक खेलती रही। जिसने मुझे बरबादी के चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया। मैं इस योग्य नहीं रहा कि किसी को मुंह दिखला सकूं। आज तुझे अपने कामों का फल मिल जायेगा।"

वनमाला की गर्दन दब रही थी। उसका दम घुटने लगा।

तब कमरे में कोई भी दास व दासी नहीं थे। वनमाला चिल्ला भी नहीं सकती थी। वह विवश हो गयी थी। गौरव उसकी गर्दन जोर-जोर से दबाने लगा।

वनमाला का चेहरा लाल पड़ गया। उसकी आँखें बाहर निकल पड़ रही थीं। उसके मुँह से सफेद फेन जैसे झाग आने लगे। गर्दन बुरी तरह दब रही थी। वनमाला पैर फड़फड़ाने लगी। उसके हाथों को गौरव ने अपने घुटनों के नीचे दबा रखे थे। उसने पूरी शक्ति लगा दी। वनमाला की जीभ बाहर निकल आयी उसके प्राण निकल गये। उसकी गर्दन एक ओर को झूल गयी।

अब गौरव उठकर खड़ा हो गया। वह बहुत प्रसन्न था और कह रहा था—"मैंने इसे मार डाला यह मेरी माँ की दासी थी। इसने मुझे धोखा दिया। इसने विश्वासघात किया था।"

गौरव अब जोर-जोर से हँसने लगा था। वह हवेली से बाहर आ गया। वह लोगों से कहता कि मैं नगरवधू का पुत्र हूँ मेरी माँ वेश्या है मेरे पिता राधा मोहन हैं। वे वेश्यागामी थे। अब उन्होंने प्रतिष्ठा की माला अपने गले में पहन ली है। वे नगर के गणमान्य नागरिक बन गये हैं।

लोग सुनते, चौंक जाते। सभी आश्चर्यचकित होकर गौरव की ओर देख रहे थे सभी कहते कि इसे क्या हो गया है यह तो बड़ा सज्जन लड़का था। रईस घर का था।

जिधर से गौरव निकल जाता उधर ही भीड़ लग जाती। देखने वाले कहते कि अभी तक मोहनजोदड़ो नगर में एक पागल था। यह दूसरा पागल है। यह गौरव है यह श्यामवर्ण अरबी घोड़े पर सवारी करता था।

यह सौ रुपये का पान का एक बीड़ा खाता। इसे क्या हो गया? यह पागल कैसे हो गया?

पागल गौरव नगर की सड़कों पर घूम रहा था। कमला को इसकी सूचना मिली। दास और दासियाँ दौड़ती हुई आयीं। वे कह रही थीं—कि गौरव भइया ने वनमाला मालकिन को मार डाला। वे पागल हो गये हैं। वे सड़कों पर भटक रहे हैं।

कमला घटना स्थल पर पहुँची। उसने वनमाला का हाल देखा तो जोर से चीख मार कर रो पड़ी। उसने फौरन ही सेवकों को भेजा कि वे जाकर गौरव को हवेली में लिवा लाएँ।

मगर गौरव ने दासों को झिड़क कर भगा दिया। वह उनसे कहता कि अब मैं उस बदनाम जगह में कभी नहीं जाऊँगा। जहाँ नगर की प्रसिद्ध नगर वधू और उसकी दासियाँ रहती हैं। भाग जाओ मैं कमला की भी हत्या कर दूंगा। उसने मुझे जन्म दिया है। उसने मुझे मार क्यों नही डाला। जिन्दा क्यों रखा यही उसका अपराध है।

इस तरह गौरव पागल हो गया था। वह राधा मोहन की हवेली पर पहुँचा। तब वे गद्दी पर बैठे एक व्यापारी से बातें कर रहे थे। गौरव ने जाते ही उनका गिरहबान पकड़ लिया और गुस्से से लाल-पीला होता हुआ शिकायत भरे स्वर में कहने लगा—"तुम मेरे पिता हो। तुमने मुझे समाज में कोई स्थान नही दिया। मैं नगर वधू का बेटा कहलाता हूँ और तुम दूध के धोये बने हो। मैं तुम्हें भी मार डालूंगा। जैसे वनमाला की हत्या की है।"

राधा मोहन बैठे से गिर पड़े। वे सन्नाटे में आ गये। बुरी तरह घबड़ा गये। नौकरों ने गौरव को पकड़ा। गौरव ने उनकी खूब पिटायी की। न जाने उसमें कहाँ से इतनी शक्ति आ गयी थी। बड़ी कठिनाई से राधा मोहन की जान बची। गौरव को हवेली से बाहर निकाला गया। वह सड़क पर आ गया था और लोगों से कह रहा था कि—"यह बगुला भक्त की हवेली है। यह वेश्यागामी था अब इसने गले में माला डाल ली है। यह मेरा बाप है। मैं इसी का बेटा हूँ।"

गौरव जिधर से निकल जाता उधर ही तहलका मच जाता। अब किसी

को कुछ भी पूछने, समझने व बतलाने की आवश्यकता नहीं रह गयी थी। सारी कहानी लोगों की समझ में आ गयी।

लोग राधा मोहन पर कीचड़ उछालने लगे। जो उन्हें सम्भ्रान्त नागरिक कहते थे वे घृणा से मुंह बिचकाने लगे।

राधा मोहन हवेली से बाहर नहीं निकले। सबसे पहला भय तो उन्हें यह था कि गौरव पागल हो गया है। वह उन्हें मार डालेगा दूसरे वे लोक-लाज से डर रहे थे। उनका साहस नहीं होता कि बाहर निकल कर वे लोगों को मुंह कैसे दिखलायेंगे।

दीपक बाप से पहले ही असन्तुष्ट था। अब उसे राधा मोहन से घृणा हो गयी। उसकी समझ में पूरी कहानी आ गयी थी कि उसके बाप का चरित्र पानी से भी पतला है। उसका अन्तःकरण कहने लगा कि पर्दे के पीछे अँधेरा होता है। ये जितने भी धनवान हैं इनका हृदय काला है। इनकी चादर मैली है। इनके दामन में दाग हैं।

इधर दीपक यह सोच रहा था उधर राधा मोहन ने अपने विश्वासी सेवकों को आदेश दे रखा था कि वे गुप्त रूप से गौरव की हत्या कर दें। उन्हें मुँह माँगा इनाम दिया जायेगा।

पागल गौरव पुरुष स्नान घर में आया वह वहाँ भी कह रहा था कि मैं राधा मोहन का बेटा हूँ। मेरी मां वेश्या है। मैंने वनमाला की हत्या कर दी। मैं राधा मोहन को भी मार डालूंगा।

सभी को रहस्य ज्ञात हो चुका था। लोग आपस में एक-दूसरे से कह रहे थे कि पाप कभी छिपता नहीं वह सिर पर चढ़ कर बोलता है। राधा मोहन के दिन ऐसे आ गये हैं कि वे दिन में तारे देखेंगे। उनका भाग्य का सूरज रात में निकलेगा। वे सिर झुका कर चलेंगे। उनकी मर्यादा नष्ट हो गयी। उनके बुरे दिन आ गये।

मानिक चन्द अपने रथ पर बैठे हवेली से कोठी जा रहे थे। पागल गौरव ने उनका रथ रोक लिया। वह कह रहा था कि तुम मेरे गवाह हो। तुम भी नगर वधू कमला के प्रेमी रह चुके हो। तुम्हें साक्षी देनी होगी कि मेरे पिता राधा मोहन हैं। तुम भी काजल की कोठरी में जा चुके हो। तुम भी वेश्यागामी हो।

मानिक चन्द बुरी तरह घबड़ा गये। उन्होंने किसी तरह गौरव से अपना पीछा छुड़ाया। उनका रथ आगे बढ़ गया।

मानिक चन्द को सारी घटना मालूम हो चुकी थी। वे अपनी कोठरी में आ कर गद्दी पर बैठ गये और विचार करने लगे कि राधा मोहन ने बहुत बड़ी भूल की जो काहिरा गये और आमेन से मिले। उसका परिणाम कितना भयंकर सामने आया है। नीली ने गौरव को तलाक दे दिया। गौरव ने वनमाला की हत्या कर दी और वह पागल हो गया। अब वह राधा मोहन के पीछे पड़ा है। मुझे भी बदनाम कर रहा है। ऐसा लगता है कि भविष्य में कोई बहुत बड़ी दुर्घटना होगी। राधा मोहन का जीवन संकट में है। उसके प्राण किसी भी समय जा सकते हैं।

दो पागल

गौरव सिन्धु नदी के बन्दरगाह पर पहुँचा। वहाँ दो जलपोत खड़े थे। एक माल वाहक था। उससे सामान उतारा जा रहा था। दूसरे से यात्री उतर रहे थे। तीसरा जलपोत और खड़ा था। उस पर भी यात्री बैठे थे। यह जलपोत मिस्र के लिए शीघ्र ही रवाना होने वाला था।

गौरव एक जहाज पर चढ़ गया और उसके डेग पर जा कर खड़ा हो गया। वह दोनों हाथ ऊपर उठा कर बन्दरगाह पर खड़े लोगों से कह रहा था कि यह जहाज मिस्र जा रहा है। वहाँ पैर आमेन रहता है। वह मेरा ससुर है। उसकी लड़की नीली मेरी घरवाली है। उसने मुझे त्याग दिया। निर्वासित कर दिया। अब वह दूसरा ब्याह करेगी। इस जलपोत में उसकी बारात जा रही है। बाराती बैठे हैं।

लोग हँसते और आपस में कहते कि वह बूढ़ा पागल कहता है कि मोहनजोदड़ो में प्रलय हो जायेगी। नगर पानी में डूब जायेगा। यह नया पागल कहाँ से आ गया यह कहता है कि इसकी ससुराल मिस्र में है। इसकी

पत्नी ने तलाक दे दी है।

ठीक तभी पुराना पागल भी वहाँ आ गया। उसने दूर से गौरव की बातें सुनी थी। वह उसे अच्छी तरह पहचानता था। उसने आगे बढ़ कर गौरव को वक्ष से लगा लिया। वह उसने कहने लगा—"यह बहुत अच्छा हुआ गौरव, जो तुम पागल हो गये हो। अब हम एक से दो हो गये। हम पानी में आग लगा देंगे। यह सिन्धु नदी जल जायेगी। चिन्ता मत करो बेटा। मैं तुम्हारा दूसरा ब्याह कर दूंगा। शीघ्र ही होने वाली प्रलय तुम्हारी दुलहिन बनेगी।"

दोनों पागल एक दूसरे के गले मिल रहे थे। लोगों ने यह दृश्य देखा तो खूब जोर-जोर से हँसने लगे। अजीब तमाशा था दोनों पागल ऐसी बातें कर रहे थे जो विचित्र ही नहीं महाविचित्र थीं।

इधर पागलों की यह स्थिति थी और उधर कमला अपने में बहुत हैरान थी। उसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ने लगा था। वह अपने पर संयम नहीं रख पाती, उसने धैर्य खो दिया था। उसके जीवन में अनहोनी घटनाएँ आये दिन घटती चली जा रही थीं। एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी ऐसी विचित्र घटनाएँ थीं जो यह संकेत दे रही थीं कि उसका अन्तिम समय आ गया है। उसे आत्महत्या करनी पड़ेगी और अब वह जीवित नही रह पायेगी।

कमला के जीवन में पहली दुर्घटना हिमकिरीटिनी के विद्रोह ने की। उस समय का हल वह अब तक निकाल नही पायी। बुरी तरह हैरान थी। दूसरी दुर्घटना पागल ने आकर कर दी। वह हवेली से हाथी ले गया और उस पर बैठ कर बाजार में घूमा, तीसरी घटना राधा मोहन के आने से हुई। वे धमकी देकर चले गये थे। चौथी दुर्घटना ने उसके जीवन में एक हलचल मचा दी। गौरव बारात लेकर काहिरा गया था। वहाँ से अकेला लौटा।

पाँचवीं घटना बहुत ही निर्मम थी। वनमाला का खून हो गया और गौरव पागल हो गया।

कमला के सामने छठी दुर्घटना यह थी कि पागल गौरव राधा मोहन को बदनाम कर रहा था। उसने उन्हें मार डालने की धमकी दी थी।

उसने मानिक चन्द पर भी कीचड़ उछाला और उन्हें भी अछूता नहीं छोड़ा।

कमला अब सूर्योदय से पहले ही सिन्धु नदी के तट पर जाती। वह स्नान करके शीघ्र ही लौट आती। उसे पुराने पागल ने भयभीत कर दिया था। नया पागल भी उसकी तलाश में था। वह चिल्ला-चिल्ला कर लोगों से कहता कि नगर वधू कमला मेरी माँ है।

नगर के लोग कह रहे थे कि सारे झगड़े की जड़ नगरवधू कमला है। उसने कितने घर तबाह किये। उसी के कारण ये दोनों पागल हो गये। उसके पीछे राधा मोहन और मानिक चन्द बदनाम हो रहे हैं।

अभी अम्बर के नीले पनघट में तारे पूरी तरह डूब नहीं पाये थे। प्राची का गगन श्वेत हो चुका था। उसमें भगवान भुवन भाष्कर की सवारी आने वाली थी। सात घोड़े उनके रथ में थे। सातवाँ घोड़ा सबसे आगे था।

कमला ने चाँदी का कमण्डल संगमरमर की सीढ़ी पर रखा उसने नदी के जल का आचमन किया। उसे अपने आँखों और माथे से लगाया। तभी पीछे से किसी ने आकर उसके कन्धे पर हाथ रख दिया वह कह रहा था— "तुम्हीं नगरवधू कमला हो मेरी माँ?"

कमला ने पीछे घूम कर गौरव का चेहरा देखा। वह सहम गयी। उसके होश हवा हो गये। उसका हृदय तीव्र गति से धड़कने लगा। उसके माथे पर पसीना आ गया। वह चीखना चाहती थी। लेकिन भय के आतंक ने उसे निर्जीव कर दिया।

"तुमने मुझे पैदा होते ही मार क्यों नहीं डाला? तुमने मुझे संसार की रंगभूमि पर ले जा कर खड़ा कर दिया। मैं अभिनय करने लगा। मैं नाटक का एक पात्र बन गया। मेरा अभिनय अधूरा रह गया। नाटक समाप्त होने के पहले ही परदा गिर गया तुम्हें इसी नदी में डूबो दूँ।" कमला उठ कर खड़ी हो गयी। उसने वहाँ से भागने की कोशिश की। लेकिन गौरव ने उसे जाने नहीं दिया। उसने उसका हाथ पकड़ लिया और व्यंग्य पूर्वक मुस्कराता हुआ बोला—"तुम अबला हो। तुम नारी हो। तुम्हारी कहानी यह है कि तुम्हारे आँचल में दूध और आँखों में पानी है लेकिन तुम अबला

नहीं हो। तुम राक्षसी हो तुमने न जाने कितने लोगों का जीवन बरबाद किया है। तुम नगरवधू हो। ऊँची हवेली, ऊँचा रहन-सहन मगर तुम बहुत नीच हो। कीचड़ तुम से फिर भी अच्छा है। जाओ यहाँ से भाग जाओ नहीं तो मैं तुम्हें भी मार डालूँगा। सत्तर चूहे खाकर बिल्ली अब माला जपेगी और राम नाम लेगी।"

कमला की सारी देह पत्ते की तरह काँप रही थी। उसने अपना हाथ छुड़ाने का भरसक प्रयत्न किया।

तब गौरव ने कमला की अँगुलियाँ मरोड़ दीं, उसने उसे ढकेल दिया। वह कमर के बल सीढ़ियों पर गिरी।

उस समय भी घाट पर कुछ लोग नहा रहे थे। सबने दौड़कर कमला की रक्षा की। गौरव नदी में कूद पड़ा। वह पानी पर तैरने लगा। वह हँस रहा था। और कह रहा था कि मैंने डायिन को छू लिया। इसीलिए मुझे नहाना पड़ रहा था। यह वेश्या है! यह नगर वधू मेरी माँ है।

कमला मूछित होते-होते बची थी। वह जल्दी से उठकर भागी। उसका चाँदी का कमण्डल और डोलची सीढ़ी पर ही रह गयी। उसने रथ पर आकर साँस ली और सारथी से बोली—"जल्दी चलो सारथी कल से मैं नहाने नहीं आऊँगी।"

कमला लगभग एक पहर तक बिस्तर पर लेटी रोती रही। अब वह बिल्कुल अकेली रह गयी थी। उसका कोई सहारा नहीं था। उसके सहयोगी कोई भी नहीं दिखलायी पड़ते। केवल दास और दासियाँ थीं।

कमला सोच रही थी कि गौरव पागल हो गया है। वह जड़पागल अब किसी तरह भी ठीक नहीं हो सकता। हिमकिरीटिनी उसका साथ छोड़ने के लिए पूरी तरह तैयार बैठी है। सबकुछ मिलाकर उनका भविष्य पूरी तरह अँधकार में है। उसे चाहिए कि अपने जीवन का अन्त कर दे। इस हवेली में आग लगा दे और उसी आग में कूद पड़े, या फिर एक रास्ता और है कि वह मोहनजोदड़ो छोड़ दे। काशी चली जाये वहाँ गंगा के तट पर रहे। जीवन में उसने जो पाप किये हैं उनका प्रायश्चित यही है।

कमला इसी तरह न जाने कितनी देर तक उधेड़-बुन में व्यस्त रही। सहसा उसके कानों में हिमकिरीटिनी के चिल्लाने की आवाज आयी। वह

किसी दासी को पीट रही थी और उससे कह रही थी—"तू मुझे बाहर नहीं जाने देगी। मैं तेरा गला घोंट दूंगी। मैं दासी नहीं मैं खरीदी नहीं गयी हूँ और न मैंने यहाँ नौकरी की है। मैं राजकुमारी हूँ राजकुमारी। यह वेश्या की हवेली है। यहाँ मैं नहीं रहूँगी।"

कमला उठकर उधर ही भागी। वह बहुत दुखी हो गयी थी उसकी आँखों में आँसू आ गये।

हिमकिरीटिनी ने कमला को देखते ही उसके मुँह पर जोर से एक थप्पड़ दिया। वह दाँत पीसकर बोली, "यह आ गयी चुड़ैल। इसी ने मुझे नगर वधू के नाम से प्रसिद्ध कर दिया है। आज मैं इसका खून पी लूंगी, इसकी हत्या कर दूंगी।"

यह कहने के साथ उत्तेजित हिमकिरीटिनी कमला के गले से लिपट गयी। दासियों ने उसे बड़ी मुश्किल से उसे छुड़ाया। वह कमला को गिरा देती। उसका गला दबाती उसने उसे मार डालने की योजना बना ली थी।

कमला पुनः अपने कक्ष में आ गयी। उसे चारों ओर अँधेरा-ही-अँधेरा दिखलायी पड़ रहा था ऐसा लग रहा था कि वह पागल हो जायेगी कि उसका मानसिक सन्तुलन पूरी तरह बिगड़ चुका है।

• •

दीपक की दुनिया

दीपक रत्नगर्भा के रास्ते से बहुत पहले ही हट चुका था उसने हिमकिरीटिनी का सहारा लिया। उसे कमला ने नजर बन्द कर लिया। बाप से वह नाराज था। हवेली में उसका मन नहीं लगता।

इधर दीपक अस्त-व्यस्त जीवन व्यतीत कर रहा था। उधर हिमकिरीटिनी उसके लिए व्याकुल थी। वह बहुत परेशान थी।

जब दोपहर होती तो दीपक सड़क पर जाकर खड़ा हो जाता। वहीं पीछे हिमकिरीटिनी की खिड़की थी। पहले वह खुली रहती थी। इधर कई

दिनों से बन्द थी।

एक दिन जैसे ही दीपक सड़क पर आया वैसे ही खिड़की खुली और हिमकिरीटिनी नीचे झाँकने लगी। दोनों की आँखें चार हो गयीं। वे विवश थे प्रतिबन्ध दोनों के बीच में दीवाल बन बन गया।

हिमकिरीटिनी ने दीपक से बातें इसलिए नहीं की। क्योंकि दो दासियाँ उसके कमरे में मौजूद थी। वह स्वतन्त्र नहीं थी। आखिर दीपक चला गया और वह खिड़की पर खड़ी-खड़ी देखती रही।

दीपक ने सोच लिया था कि वह रात के अँधेरे में हिमकिरीटिनी के पास जायेगा, किसी तरह खिड़की पर चढ़कर अन्दर पहुँचेगा।

दिन बीत गया। रात आ गयी। दीपक सोचता रहा कि उसे हिमकिरीटिनी के पास पहुँचने के लिए क्या करना चाहिए। वह हवेली से रात के पहले पहर से ही बाहर निकल गया। वह एक गोहवाले के घर गया। उससे गोह खरीदी। यह गोह बहुत बड़ी थी। दीपक ने उसकी कमर में कमन्द बाँधी।

यह रस्सी बहुत मजबूत थी। आधी रात हो चुकी थी। सन्नाटा साँय-साँय कर रहा था। पथ पर भी सन्नाटा था। दीपक ने गोह ढेले की तरह ऊपर फेंकी, गोह खिड़की पर पहुँच गयी। उसने अपने पंजे खिड़की पर टिका दिये। खिड़की खुली थी। दीपक रस्सी के सहारे खिड़की पर आया। कमरे में अँधेरा था।

तब हिमकिरिटनी सो रही थी। कमरे में एक भी दासी नहीं थी।

दीपक ने हिमकिरीटिनी को जगाया। वह उसके पास बैठ गया। दोनों में धीरे-धीरे बातें होने लगीं। दीपक ने अपना सारा हाल बतलाया। हिमकिरीटिनी पर जो कुछ बीत रही थी। उसने भी वह कथा करुण स्वर में सुनायी।

दीपक ने कहा, "गोह खिड़की पर बैठी है। रस्सी लटक रही है। यही अवसर है भाग चलो हिमकिरीटिनी हम लोग कहीं दूर जाकर अपनी दुनिया बसायेंगे।"

हिमकिरीटिनी सहमत हो गयी। दीपक ने सबसे पहले उसे उतारा। वह रस्सी पकड़कर सड़क पर आ गयी फिर दीपक भी उतरा। गोह खिड़की

पर बैठी रही। रस्सी नीचे लटकती रही।

सवेरा होने से पहले ही एक दासी हिमकिरीटिनी के कमरे की सफायी करने आयी। उसने देखा कि बिस्तर खाली है हिमकिरीटिनी कमरे में नहीं है। वह चौंकी बुरी तरह घबरा गयी। वह सोच रही थी कि मालकिन कमला को क्या जवाब देगी?

जो दासी हिमकिरीटिनी के कमरे पर रात को पहरा दे रही थी। वह अब भी बैठी सो रही थी। उस दासी ने उसे जगाया और उससे व्यस्त स्वर में पूछने लगी—"हिमकिरीटिनी कहाँ है? आज बहुत जल्दी उठ गयी।"

पहरे वाली दासी घबड़ा गयी। वह अन्दर आयी। दोनों दासियाँ हैरान थीं। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर हिमकिरीटिनी कहाँ चल गयी। अब दोनों घबड़ा गयी। दोनों के चेहरे सफेद पड़ गये। वे कमला के पास आयीं और उसे सारा हाल बतलाने लगीं।

कमला दोनों दासियों को भला बुरा कहने लगी। वह हिमकिरीटिनी के कमरे में आयी। आते ही उसकी निगाह खिड़की पर बैठी गोह पर पड़ गयी। वह चौंकी खिड़की पर आयी। उसने नीचे झाँक कर देखा तो रस्सी लटक रही थी। वह रस्सी गोह की कमर में बँधी थी।

अब कमला की समझ में आ गया कि किसी ने गोह ऊपर फेंकी है। हिमकिरीटिनी इसी रस्सी के सहारे नीचे उतर गयी।

कमला कलेजा थाम कर रह गयी। उसे दीपक पर सन्देह था। उसका अन्तःकरण कह रहा था कि दीपक ही हिमकिरीटिनी को ले गया है।

कमला ने फौरन ही राधा मोहन की हवेली में दो दास भेजे। उन्होंने जाकर राधा मोहन से पूछा कि दीपक कहाँ है?

राधा मोहन ने दोनों सेवकों को बतलाया कि इधर एक सप्ताह से दीपक कभी रात को हवेली नहीं आता। कभी पूरे दिन लापता रहता। वह हवेली में नहीं है। रात को ही कहीं चला गया था।

कमला की हैरानी बढ़ गयी। उसने देखा कि हिमकिरीटिनी जाने से पहले अपने सारे गहने उतार कर एक चौकी पर रख गयी थी। कमला ने उन गहनों को देखा तो आँसू बहाने लगी।

किसी तरह कमला की हवेली से यह बात बाहर आयी। फिर पूरे नगर

में फैल गयी। अब सभी लोग कह रहे थे कि राधामोहन का बेटा नगर वधू हिमकिरीटिनी को लेकर कहीं भाग गया है।

राधामोहन ने यह सुना तो उन्होंने अपने माथे पर दोनों हाथ दे मारे। वे कह रहे थे "वाह रे, भाग्य तूने मुझे यह दिन भी दिखलाया। मेरा लड़का हाथ से बे हाथ हो गया।"

रत्नगर्भा सारी बातें न जाने कब से सुन रही थी। उसने सुना था कि दीपक और नीली का सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। दीपक की बाप के साथ अनबन हो गयी। वह नगर वधू की हवेली जाने लगा।

रत्नगर्भा ने आज यह सुना कि दीपक नगरवधू हिमकिरीटिनी को लेकर कहीं चला गया है।

रत्नगर्भा उदास हो गयी। उसने प्रमुख दासी प्रभा को सारा हाल बतलाया। प्रभा हैरान थी। उसे दीपक से सहानुभूति थी। दीपक की बदनामी हो रही थी, प्रभा को इसी का दुख था।

रत्नगर्भा ने पूजन का सारा सामान एक चाँदी की थाली में रखा। वह शिवमन्दिर गयी। उसने विधिवत पूजन किया। फिर देवता को प्रणाम कर मन-ही-मन कहने लगी—"मेरी शुभ कामनाएँ दीपक के साथ हैं। वह कहीं भी रहे आबाद रहे। खुशहाल रहे। उसकी दुनिया में सदा बहार रहे।"

रत्नगर्भा हवेली आ गयी। वह दीपक का स्मरण कर रही थी। उसे बीते दिन और बीती बीतें याद आने लगी। अतीत के चलचित्र एक-एक करके उसके सामने आने लगे। उसकी अकुलाहट इतनी अधिक बढ़ गयी कि उसके सिर में पीड़ा होने लगी।

रात को मानिकचन्द जब हवेली आए तो वे अपनी बेटी को बतलाने लगे कि दीपक नगर वधू को लेकर कहीं भाग गया है। तुम उसके साथ ब्याह करने के लिए उत्सुक थीं। उसका बाप वेश्यागामी था। वह भी नगर वधू को लेकर भाग गया। जैसा बाप वैसा ही बेटा भी निकला।

रत्नगर्भा ने बाप की बातें सुनी किन्तु वह मौन रही उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

खिड़की से नीचे आकर दीपक ने हिमकिरीटिनी का हाथ पकड़ा। दोनों रात्रि के गहन अन्धकार में न जाने कहाँ विलीन हो गये।

दीपक अब सिन्धु नदी के तट पर आ गया था। वहाँ दो जहाज लंगर डाले खड़े थे। दोनों को मिस्र जाना था वे सबेरे छूटनेवाले थे।

दीपक ने हिमकिरीटिनी से कहा—"भारत छोड़ दो हिमकिरीटिनी' हम लोग मिस्र चलेंगे। वहाँ की राजधानी काहिरा में पहुँचकर अपना डेरा डालेंगे। हमारा संसार वहीं बसेगा। हमारे सौभाग्य का सूरज भी वहीं उदय होगा।"

"मैं जन्मभूमि नहीं छोड़ूंगी। भारत मेरा स्वदेश है। आगे पंजाब का इलाका है। वहाँ पाँच नदियाँ बहती हैं। हम वहीं चलेंगे वहीं रहेंगे।"

"ठीक है हिमकिरीटिनी मोहनजोदड़ो तो हमें छोड़ना ही पड़ेगा। यहाँ रहने में भलाई नहीं है।"

दीपक अपने साथ प्रचुर मात्रा में हीरे लाया था। उसने एक तेज रफ्तार में चलने वाली घोड़ागाड़ी किराए पर ली। उसके कोचवान से कहा था कि "हम पंजाब चलेंगे, वहाँ रावी नदी के किनारे हमें पहुँचा दो।"

इस तरह दीपक और हिमकिरीटिनी की यात्रा तय होने लगी।

दोनों पंजाब आ गये। वे लाहौर नगर में प्रविष्ट हुए। वहाँ एक सुन्दर सा आवास किराए पर लिया। वे उसमें रहने लगे। दीपक योजना बना रहा था उसे कोई-न-कोई व्यापार अवश्य करना चाहिए। वह कपड़े की बड़ी-सी दुकान करेगा। उसके पास प्रचुर मात्रा में धन है।

हिमकिरीटिनी भी प्रसन्न थी। यहाँ उसे कोई भी नगर वधू कहकर नहीं पुकारता। दीपक ने अपना नाम बदल दिया वह सूरज कहा जाने लगा। हिमकिरीटिनी को लोग मधुरिमा के नाम से जानने लगे।

इस तरह दीपक ने अपना नया संसार बसाया था। उसकी छोटी-सी दुनिया आबाद हो गयी। उसने बाप के धन को ठोकर मारी। उसने धन, हवेली, व्यापार, पिता, और मोहनजोदड़ो सभी का त्याग कर दिया।

उस जमाने में पंजाब की धरती खुशी के गीत गाती थी। पंचनदियों ने उसे पवित्र बना दिया था।

इधर दीपक प्रसन्न था उधर राधा मोहन का बुरा हाल था। वे लाज

के कारण हवेली से बाहर नहीं निकलते उनकी मर्यादा भंग हो गयी थी। उनकी प्रतिष्ठा में बट्टा लग गया था।

पहले लोग कहते थे कि राधा मोहन गौरव के पिता हैं। गौरव की माँ प्रसिद्ध नगर वधू कमला है। अब हर आदमी कह रहा था कि राधा मोहन का लड़का दीपक एक नगर वधू को लेकर भाग गया।

राधा मोहन पर हजारों घड़े पानी पड़ गया। वे बिस्तर के बन्दरी बन गये। उन्हें हृदय रोग हो गया। जब उसको दौरा पड़ जाता तो वे अचेत अवस्था को प्राप्त हो जाते।

नगर का प्रमुख वैद्य उनका उपचार करने लगा। उसका कहना था कि अधिक सोचने व अधिक दुख से राधा मोहन की यह हालत हुई है। उन्हें प्रसन्न रहना चाहिए। यदि वे प्रसन्न नहीं रहेंगे तो यह हृदय का दौरा उन्हें बार बार पड़ेगा।

जो हवेली रात में दुलहिन की तरह श्रृंगार करती थी। उसमें दीपक जलाए जाते। उसमें मोमबत्तियाँ जलायी जातीं। कमरे में रंगीन झाड़ फानूसों की रोशनी होती। अब उस हवेली में अँधेरा रहता दिन में भी हवेली सूनी सूनी दृष्टि गोचर होती। राधा मोहन की दुकान बन्द पड़ी थी। उन्हें लग रहा था कि उनके घर में भूतों ने डेरा डाला है। घर सूना हो गया। हवेली की दीवालें सिसकियाँ ले रही थी।

नगर के लोग एक दूसरे से कहते कि राधा मोहन का अन्तिम समय निकट आ गया है। उनके हृदय पर गहरा धक्का लगा। उन्हें दिल का दौरा पड़ता है। इसी में उनकी मृत्यु हो जायेगी।

राधा मोहन की स्थिति अच्छी नहीं थी। वे खुद दुर्बल हो गये। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा सा हो गया था। वे दिन रात बिस्तर पर लेटे रहते। हवेली से बाहर नहीं निकलते। वे दीर्घ उच्छ्वास लेते। उनके सोचने का काम एक क्षण के लिए भी बन्द नहीं होता। उनकी स्थिति पागलों जैसी हो रही थी।

मानिक चन्द ने रत्नगर्भा को बहुत समझाया कि वह विवाह कर ले उसकी हठ अच्छी नहीं है। वह दीपक के लिए इतना बड़ा त्याग कर रही है। दीपक ने उसे ठुकरा दिया। वह वेश्या को लेकर नगर से कहीं दूर चला गया।

रत्नगर्भा की समझ में कुछ भी नहीं आता। यही कारण था कि वह बाप की किसी भी बात का उत्तर नहीं देती।

मानिक चन्द वर की खोज कर रहे थे। उन्हें जल्दी थी कि शीघ्र ही रत्नगर्भा का ब्याह हो जाए।

एक दिन मानिक चन्द की बूढ़े पागल से टक्कर हो गयी। उसने उनकी राह रोक ली और अट्टाहस करता हुआ कहने लगा—"अब मोहनजोदड़ो में प्रलय होने वाली है। तूफान आयेगा। झंझावात मचलेंगे सिन्धु नदी उबलेगी तुम भी उस प्रलय में डूब जाओगे मानिक चन्द। वह भी डूबेगी जिसने मुझे पागल बनाया है।"

मानिक चन्द मौन थे वे पागल से अपनी जान बचाना चाहते थे। तभी पागल आगे फिर कहने लगा—"राधा मोहन का बेटा बाप से भी आगे निकल गया। मुझे खुशी है। मैं प्रसन्न हूँ। जैसा बाप वैसा बेटा निकला। विष वृक्ष में कभी अमर फल नहीं लग सकते।"

मानिक चन्द किसी तरह आगे बढ़े। कुछ दूर चलने पर उन्हें दूसरा पागल मिल गया। यह गौरव था। यह कह रहा था कि "तुम्हें साक्षी देनी होगी मानिक चन्द। तुम मेरे गवाह हो। तुम्हें दुनिया को बतलाना होगा कि मेरे पिता राधा मोहन हैं। मेरी माँ मोहनजोदड़ो की प्रसिद्ध नगर वधू कमला है।"

मानिक चन्द ने इस पागल से भी अपना पीछा छुड़ाया। दूकान पर आये और मन मार कर गद्दी पर बैठ गये।

मानिक चन्द गहरे सोच में डूब गये थे। उनका अन्तःकरण कह रहा था कि वे मोहनजोदड़ो छोड़ दे और हड़प्पा में चले जाएँ। वहाँ रत्नगर्भा के

विचार बदलेंगे तब वह ब्याह के लिए सहमत हो जायेगी।

आज रात चाँदनी थी। धरती पर चाँदी की चादर बिछ रही थी। नीले आसमान पर तारों की हाट लगी थी। चाँद मुस्करा रहा था। उसने भी अम्बर की खिड़की खोल रखी थी। ऐसे मे रत्नगर्भा हवेली की छत पर खड़ी थी। वातावरण शान्त था। हवा शीतल और सुगन्धित हो कर बह रही थी।

रत्नगर्भा को बोध ही नही पाया कि उसके पिता मानिक चन्द कब पीछे आकर खड़े हो गये हैं। उसने एक लम्बी साँस ली और आकाश की ओर देखने लगी। तभी पीछे से मानिक चन्द ने टोक दिया वे धीरे से बोले— "कैसे खड़ी हो बेटी ?"

रत्नगर्भा चौंक गयी। वह पीछे घूम कर बाप की तरफ देखने लगी।

मानिक चन्द ने पुत्री के सिर पर स्नेह भरा हाथ रख दिया। वे मृदु स्वर में कहने लगे—"बेटी तुमने अपने विषय में क्या सोचा है ? मैं वही जानने आया हूँ।"

"मुझे कुछ भी सोचना नही है पिताजी। मैं ब्याह नहीं करूँगी। मुझे आजीवन कुँवारी ही रहना है।"

"यह ठीक है बेटी लेकिन···।"

"लेकिन क्या पिताजी ?

"लोग मुझे क्या कहेंगे ?"

"क्या कहेंगे ?"

"मानिक चन्द की लड़की कुमारी ही रह गयी। असीम धन होते हुए भी वे पुत्री का ब्याह नहीं कर पाये।"

"आप लोगों को समाज से इतना डर क्यों है पिताजी ? यह समाज किसी का नहीं। यह व्यक्ति की बुराई देखता है उसकी प्रशंसा कभी नहीं करता।"

"बेटी मैं तुमसे भीख मांगता हूँ। तुम ब्याह कर लो। मैं तुम्हारे लिए ऐसा वर खोजूंगा जो घर जवाँई बन कर रहे। उस दीपक को भूल जाओ। उसका पतन हो चुका है।"

"मैं कुछ भी नहीं भूल पाऊँगी पिताजी। मुझे सब याद रहेगा। आप

मेरे लिए हैरान न हो। आपको मेरी सौगन्ध।"

मानिक चन्द की आंखों में आँसू आ गये। उनका स्वर भी गीला हो गया था। वे दुखी होकर फिर कहने लगे—"बेटी और सोच लो। मुझ पर तरस खाओ। मैं तुम्हारा बाप हूँ। मैं तुम्हारा अनिष्ट नहीं देख सकता। मेरा कलेजा मुंह को आने लगता है। तुम मेरी एकलौती सन्तान हो। तुम से ही मेरा संसार जगमगाता है।"

रत्नगर्भा मौन हो गयी। वह आँसू बहाने लगी थी। उसे लग रहा था कि उसका संसार सूना हो गया है। वह नारी है। समाज के विधान के अनुसार उसे व्याह करना बहुत आवश्यक है।

देर तक मानिक चन्द बेटी से बातें करते रहे। फिर वे निराश होकर छत से नीचे आ गये।

× × ×

रत्नगर्भा आधी रात तक छत पर खड़ी रही। वह अपने जीवन से निराश हो गयी थी। उसका अन्तःकरण कह रहा था कि जिस जीवन में हँसी और खुशी न हो, वह बिल्कुल व्यर्थ है। ऐसे जीवन का अन्त कर देने में ही भलाई है।

रत्नगर्भा नीचे आ गयी। वह बिस्तर पर ऐसे गिरी जैसे अधमरी हो। उसने पलकें मूंद लीं और रोने का उपक्रम करने लगी।

किन्तु उसे नींद नहीं आ रही थी। आँखें खुल गयीं। वह गहन चिन्ता में डूब गयी।

रत्नगर्भा ने बहुत सोचा उसे जीवन से ही नहीं पूरे संसार से विराग हो गया। उसका मन कहता जो सुख का त्याग करते हैं उन्हें स्वर्ग मिलता है। जो हृदय और मस्तिष्क पर संयम कर ले जाते उन्हें ही ज्ञान की प्राप्ति होती। मुझे कुछ नहीं चाहिए मैं हवेली छोड़ दूंगी। पिताजी किसी दूसरे को अपना उत्तराधिकारी बना दो। मुझे धन और वैभव की आवश्यकता नहीं। मैंने एक कदम उठाया था उसी राह पर सुन्दर सुन्दर सपने देखे थे। वे सपने माटी में मिल गये। जिन्दगी मुस्करायी नहीं, वह रोयी।

रत्नगर्भा सोचती चली गयी। रात बीतती रही वह सोचती रही फिर जब उसके चित्त को शान्ति नहीं मिली तो उठकर आंगन में आ गयी। पूरब

में शुक्र तारा का उदय हो चुका था। सप्त ऋषि मण्डल बीचो बीच आकाश में आ गये। हवा कुछ अधिक ठण्डी हो गयी। वह सवेरा होने की सूचना दे रही थी।

रत्नगर्भा अपने कमरे में आयी। उसने चाँदी की दीवट पर रखी मोमबत्ती जला दी। चकमक पत्थर से देर में आग जली। वह कुछ झुंझला गयी। उसके माथे पर बल पड़ गये।

अब रत्नगर्भा ने चौकी मोमबत्ती के सामने रखी वह कलम दान देकर पत्र लेकर लिखने बैठ गयी।

लकड़ी के तख्ती पर कागज लगा था। वह उसी पर लिखने लगी—"पिताजी अपने विषय में बहुत सोचा लेकिन मेरी समझ में कुछ नही आया। आप चाहते हैं कि मैं ब्याह कर लूं। आपका उत्तरदायित्व इस तरह पूरा हो जायेगा। मगर मैं विवश हूँ। मेरी इच्छाएँ मर गयी। मेरे अन्दर की नारी सो गयी। मुझे यह हवेली, आपका धन, आपका वैभव कुछ भी नहीं चाहिए। मैं जा रही हूँ। कहाँ जाऊँगी, क्या करूँगी। इसका मुझे कुछ पता नही है। आप मेरी खोज मत करना, मैं वापस नहीं आऊँगी। जिस समय आप को मेरा यह पत्र मिलेगा। मैं मोहनजोदड़ो से दूर निकल जाऊँगी।"

पत्र में आगे लिखा था कि आप दत्तक पुत्र गोद ले लीजिए। वह आप का उत्तराधिकारी बनेगा। आप निश्चित हो जायेंगे। मुझे भूल जाइये पिताजी मैं आपकी सेवा नहीं कर पायी। यह मेरा दुर्भाग्य है। मुझे संसार से घृणा हो गयी है। समाज मेरी समझ में नही आया। विदा दीजिए पिताजी हमेशा-हमेशा के लिए विदा।

पत्र रख कर रत्नगर्भा ने नीचे अपने हस्ताक्षर कर दिए उसने दीवाल पर लगे पिता के चित्र को प्रणाम किया। और फिर कमरे से बाहर आ गयी। आँगन में आकर देखा अब तारों की ज्योति मन्द पड़ने लगी थी। पूरब का आसमान सफेद होने लगा था।

वह हवेली के फाटक पर आ गयी। दरबान बैठा ऊँघ रहा था। रत्नगर्भा ने धीरे से खिड़की खोली वह फाटक से बाहर आ गयी।

जो रत्नगर्भा रथ से नीचे पैर नहीं रखती थी। इस समय वह पैदल जा रही थी। और पैर नंगे थे। उसने एक बार पीछे घूमकर हवेली को देखा

उसकी आँखों में आँसू आ गये। उसने हवेली को प्रणाम किया फिर आगे बढ़ गयी। वह अनिश्चित् दिशा की ओर बढ़ी चली जा रही थी। उसका हृदय तीव्र गति से धड़क रहा था। उसके कानों में कोई कह रहा था—"यह पलायन है। यह जिन्दगी की हार है। जब साहस साथ नहीं देता तभी मनुष्य ऐसा कदम उठाता है।"

रत्नगर्भा ने अपने दोनों कानों पर हाथ रख लिए। अब उसके हृदय से आवाज आने लगी थी। वह कह रही थी—"रत्नगर्भा बाप से तुम्हें बिल्कुल प्यार नहीं, तुमने उसका मोह छोड़ दिया। तुम्हें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि तुम उनकी जिन्दगी की सबसे बड़ी खुशी हो। उनकी हृदय गति रुक जायेगी। वह तुम्हारे वियोग का दुख सह नहीं सकते।"

रत्नगर्भा ने दाँतों से अपने होठ चबाएं। किसी तरह उसने हृदय पर नियन्त्रण पाया।

तभी मन विचलित हो उठा। वह अपनी बात कह रहा था, "मानिक चन्द पर लोग कीचड़ उछालेंगे। असलियत को समझने की कोई भी कोशिश नहीं करेगा। सब लोग कहेंगे कि दाल में काला कुछ अवश्य था। तभी रत्न-गर्भा हवेली से चली गयी।"

रत्नगर्भा चलती रही, शहर बहुत बड़ा था। अभी वह नगर से बाहर नहीं निकल पायी थी कि सवेरा हो गया। उसने गति में वेग भर लिया। उसकी साँसें तेज हो गयीं। उसके नथुने जोर-जोर से चलने लगे।

रत्नगर्भा यह सोच रही थी कि कोई उसे देख न ले। कोई उसे पहचान न ले। अब भी उसे बोध नहीं था और वह निश्चय नहीं कर पायी थी कि उसे कहाँ जाना है और क्या करना है?

बसेरों से उड़कर पक्षी इधर-उधर डोल रहे थे। वे चीं-चीं का राग अलापते। सवेरे का वातावरण मुखरित हो रहा था।

सोने का सूरज आसमान पर निकल आया। उसकी सुनहली किरणें आकर धरती पर मुँह चूमने लगी। रत्नगर्भा को थकावट का अनुभव हुआ, किन्तु इसकी उसने तनिक भी परवाह नहीं की। उसकी यात्रा निर्विघ्न तय हो रही थी। वह आगे बढ़ रही थी। तब उसने मोहनजोदड़ो की नगर सीमा को पार किया। तब दिन का आधा पहर व्यतीत हो चुका था।

मानिकचन्द

मानिकचन्द का नित्य का नियम था कि वे प्रातः उठते ही सबसे पहले अपनी पुत्री के कमरे में आते। वे सर्वप्रथम उसका ही मुँह देखते, वे लोगों से कहते कि रत्नगर्भा मेरी तकदीर है। वह भाग्य की देवी है। उसने मेरे घर में जन्म लिया है। उन्हें पुत्री से अत्यधिक स्नेह था। यही कारण था कि उन्होंने पत्नी के निधन के बाद दूसरा ब्याह नहीं किया।

आज सबेरे जब मानिकचन्द बेटी के कमरे में आए तो देखा मोमबत्ती जल रही है। रत्नगर्भा कमरे में नहीं है। उसका बिस्तर खाली है।

तभी उन्हें प्रभा दिखायी दी, वे उससे पूछने लगे। प्रभा भी हैरान थी। उसने बतलाया कि मैं जब बिटिया रानी को जगाने आयी थी, वे कमरे में नहीं थीं।

देर हो गयी। सबकी चिन्ता बढ़ गयी और उसकी तलाश सरगर्मी के साथ होने लगी।

दरबान से पूछा गया। वह कोई उत्तर नहीं दे पाया। फाटक की खिड़की अन्दर से खुली थी। अब मानिकचन्द को यह दृढ़ निश्चय हो गया कि रत्नगर्भा कहीं चली गयी है। वे उसके कमरे में आए। उसके चित्र के सामने जाकर खड़े हो गये। उसके आँसू बह रहे थे।

तभी प्रभा ने उनका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। वह व्यस्त स्वर में कह रही थी—"मालिक बिटिया रानी का पत्र देखिए इसमें क्या लिखा है ?"

यह कहने के साथ प्रभा ने वह लकड़ी की तख्ती मानिक चन्द के हाथ में दे दी। वे पत्र पढ़ने लगे। खड़े से गिर पड़े। तख्ती हाथ से छूट गयी और वे मूच्छित हो गये।

दासियाँ रोने लगी। दास दौड़े आये। मानिकचन्द को उठाकर बिस्तर पर लिटाया गया। उनके मुँह पर हवा की जाने लगी।

प्रभा ने अपने स्वामी के मुँह पर पानी के छींटे मारे। वे लगभग एक घण्टे बाद होश में आये। प्रभा उन्हें समझाने लगी। उसने धीरज बँधाया।

उसका कहना था कि "हिम्मत से काम लो मालिक। बिटिया रानी की खोज में लोगों को भेजो। आप भी उनकी तलाश कीजिए और मैं भी जाऊँगी। वे मिलेंगी; अवश्य मिलेंगी। मेरा अन्तःकरण यही कह रहा है।"

मानिकचन्द निर्जीव से हो गये थे। उनके शरीर में शक्ति नहीं रह गयी। वे उठकर बैठे, उनका सिर अब भी चकरा रहा था। वे कुछ भी सोच नहीं पाते। उनकी बुद्धि काम नहीं करती। वे अपने में बुरी तरह हैरान थे।

प्रभा ने फलों का रस मानिकचन्द को पिलाया। उनके हृदय को कुछ शान्ति मिली और वे चुपचाप आँखें मूँद कर लेट गये।

प्रभा हवेली की प्रधान दासी थी। हर दास और दासी उसकी आज्ञा का पालन करती। उसने कई सेवकों को रत्नगर्भा की खोज के लिए भेज दिया। उसका उनसे कहना था कि चारों दिशाओं में जाओ, बिटिया रानी की खोज करो। उनका पता लगाना बहुत आवश्यक है। यदि वे न मिलीं तो गृह स्वामी का हाल बुरा हो जायेगा।

इसी तरह प्रभा ने कुछ दासियों को नगर में भी भेजा। उन्हें आदेश दिया था कि वे रत्नगर्भा की खोज में कुछ उठा न रखें।

प्रभा हवेली से इसलिए नहीं गयी, क्योंकि मानिकचन्द अकेले थे। उनकी देख-भाल करना भी आवश्यक था।

दोपहर को मानिकचन्द बिस्तर से उठे। अभी तक कोई भी दासी और दास नहीं लौटा था। वे प्रतीक्षा कर रहे थे और यह सुनना चाहते थे कि रत्नगर्भा अमुक जगह पर मिली। वह आ रही है।

तीसरे पहर कुछ दासियाँ लौटीं। वे निराशा भरे समाचार लायी थीं। कुछ सेवक भी वापस आए। वे अपने साथ उदासी लाये थे।

अब बाबू मानिकचन्द प्रभा से बोले—"रथ तैयार करवाओ। प्रभा हम स्वयं जायेंगे। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।"

प्रभा ने फौरन रथ तैयार करवाया। दोनों उस पर बैठे वे नगर का भ्रमण करने लगे। साँझ की वेला आ गयी। अब दिशाएँ धूमिल होने लगी। झुटपुटा धरती पर उतर रहा था। रथ सिन्धु नदी के उस घाट पर आकर रुका। जहाँ रत्नगर्भा स्नान करने जाती थी।

घाट पर बैठे वहाँ के पुजारी और पण्डे ने बतलाया कि रत्नगर्भा आज यहाँ नहीं आयी। एक सप्ताह पहले वह स्नान करने आयी थी। तब से हम लोगों ने उसे नहीं देखा।

मानिकचन्द निराश हो गये। सिन्धु नदी के प्रवाह को देखने लगे। वे मन-ही-मन ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि उनकी बेटी घर आ जाये। वे घाट की सीढ़ियाँ संगमंरमर की बनवा देंगे। वे यहाँ पर एक शिवमन्दिर भी बनवायेंगे। वे साधुओं का भण्डारा करेंगे।

जब अधिक देर हो गयी तो प्रभा ने अपने स्वामी को टोका। वह सम्मान भरे स्वर में धीरे से बोली—"आप घर चलिए मालिक। रात बहुत हो गयी है। मेरा मन कह रहा है कि बिटिया रानी आ गयी होगी। वे हमारी राह देख रही होंगी। हमें जल्दी पहुँचना चाहिए।"

"एँ क्या कहा रत्नगर्भा आ गयी होगी ?"

"हाँ।"

"फिर जल्दी प्रभा देर मत करो।"

अब प्रभा ने मानिक चन्द का हाथ पकड़ा। उन्हें धीरे से सहारा देकर उठाया, फिर रथ पर ले जाकर बैठाया और सारथी को आदेश दिया कि वह शीघ्र-से-शीघ्र हवेली पहुँचे। वहाँ बिटिया रानी आ गयी होगी।

रथ जब हवेली के फाटक के अन्दर आया तो दरबान सिर झुकाये खड़ा था। उसका उदास चेहरा कह रहा था कि दुख का वातावण अभी सुख में नहीं बदला है।

हवेली के भीतर भी सन्नाटा था। दासियाँ उदास-सी खड़ी थीं। दासों के चेहरे मलीन थे। प्रकाश हो रहा था। किन्तु सन्नाटा साँय-साँय करता। ऐसा लग रहा था कि हवेली की रौनक हमेशा-हमेशा के लिए चली गयी है।

उस दिन किसी ने भी नहीं जाना मगर दूसरे दिन सवेरा होते ही यह समाचार पूरे नगर में फैल गया कि मानिकचन्द की बेटी रत्नगर्भा कहीं चली गयी। वह अपने पीछे एक पत्र छोड़ गयी है। उसमें लिखा है कि अब वह वापस नहीं लौटेगी, उसकी तलाश न की जाये।

राधामोहन ने इस समाचार को सुना तो उन्हें इससे दुःख हुआ।

उनका बेटा दीपक हवेली छोड़ चुका था। वे अकेले रह गये। मानिकचन्द से उनकी कोई शत्रुता नहीं थी। जब जवानी के दिन थे और दोनों नगरवधू कमला की हवेली के चक्कर काटते थे। तब उनमें परस्पर स्पर्धा थी।

किन्तु अब ऐसे अवसर पर राधामोहन की पूरी-पूरी सहानुभूति मानिक चन्द के साथ थी।

राधामोहन रथ पर बैठे उन्होंने उस पर पर्दा डलवा दिया। वे मानिक-चन्द की हवेली आये और उन्हें समझाने लगे कि वे धीरज से काम लें। आपत्ति में धीरज ही काम आता है। धर्म ही साथ देता है।

मानिकचन्द की स्थिति पागलों जैसी हो रही थी। उन्हें लग रहा था कि वे पागल हो जायेंगे। उनका मानसिक सन्तुलन बिगड़ चुका है।

लगभग एक सप्ताह तक रत्नगर्भा की खोज निरन्तर होती रही। मगर उसका कोई पता नहीं लगा। मानिकचन्द निराश हो गये। प्रभा ने भी उसके मिलने की आशा छोड़ दी।

मानिकचन्द बिस्तर में बन्दी बन गये थे। उन्हें हृदय का दौरा पड़ने लगा। जो स्थिति राधा मोहन की थी, वही उनकी भी हो गयी। उनका उपचार चलने लगा। प्रभा उनकी सेवा में रत रहती।

प्रभा का कहना था कि मालिक आप कोई लड़का गोद ले लीजिये। बिटिया रानी को भूल जाइये। उस दत्तक पुत्र का ब्याह कीजिये। आपकी हवेली आबाद हो जायेगी।

किन्तु मानिक चन्द की समझ में कुछ भी नहीं आता। वे जब ऐसी बातें सुनते तो रोने लगते।

वैद्य का कहना था कि मानिक चन्द को हमेशा प्रसन्न रहना चाहिए। उनकी परिस्थितियों में सुधार तभी होगा जब उनकी पुत्री रत्नगर्भा हवेली आ जायेगी।

प्रभा हैरान थी। उसने मानिक चन्द को अपना मालिक कभी नहीं समझा। वह उन्हें धर्म पिता के रूप में मानती थी उसे उनसे श्रद्धा थी। वह उनका दुख देख नहीं पाती। वह आंचल में मुँह छिपा लेती और सिसक-सिसक कर रोने लगती।

इस तरह मानिक चन्द की हवेली आँसुओं में डूब रही थी। वहाँ आशा

की एक भी किरण दिखलायी नहीं पड़ती। जिसके आधार पर यह कहा जाता कि यह हवेली फिर मुस्करायेगी।

प्रभा

एक लम्बा समय भी व्यतीत हो गया। मानिकचन्द की हालत में कोई भी सुधार नहीं हुआ। वे आवश्यकता से अधिक दुर्बल हो गये थे। केवल फलों का रस पीकर रहते। अन्न बिल्कुल छूट गया था।

प्रभा गुप्त भय की आशंका से मन-ही-मन काँप रही थी। उसका अन्तःकरण कहता कि अगर कुछ दिन ऐसी ही हालत रही तो मानिक चन्द का निधन हो जायेगा।

यही कारण था कि प्रभा जब उनका मन तनिक अच्छा देखती तो अपनी बात कहने लगती कि आप लड़का गोद ले लीजिए। इस काम में देर करना ठीक नहीं है। आखिर आपके बाद इस हवेली का स्वामी कौन होगा ?

मानिक चन्द प्रभा की ऐसी बातों का कोई भी उत्तर नहीं देते। वे लम्बी साँस लेते और उनके मुँह से एक दीर्घ उच्छ्वास निकल पड़ता।

रात को जब मानिक चन्द थोड़ी देर के लिए सो जाते तो भी प्रभा जागती रहती। वह दिन-रात उनके पास ही बैठी रहती थी। वैद्य ने उससे कहा था। हृदय रोग के बीमार को नींद बहुत कम आती है। यदि उसे पूरी नींद आने लगे, तो वह रोग से मुक्त हो जाएगा।

जब मानिक चन्द प्रभा से आग्रह करती और जोर देकर कहती कि सो जाओ बेटी प्रभा। तो वह हँस देती और धीरे से कहने लगती कि स्वामी की सेवा करना मेरा कर्तव्य ही नहीं धर्म है। आप अच्छे हो जायें फिर मैं खूब सो लूंगी। मैंने यही सोचा है।

इस पर मानिक चन्द को हँसी आ जाती और वे प्रभा के सिर पर स्नेह पूर्वक हाथ फेरने लगते। ऐसे में उन्हें आभास होता कि यह प्रभा नहीं रत्न-

गर्भा है। यह हवेली की दासी नही उनकी बेटी है। इसमे त्याग की भावना है। इसीलिए यह महान है।

प्रभा चम्मच से मानिक चन्द को फलों का रस पिलाती। वह दूध में मिश्री घोलती। उन्हें उठाकर बैठाती, फिर जैसे बच्चों को चम्मच से दूध पिलाया जाता है। वैसे ही वह उन्हें दूध पिलाती। उनके सिर पर तेल लगाती, उनका माथा सहलाती।

मानिक चन्द देख रहे थे कि प्रभा उनकी सेवा तन-मन से कर रही है। उसे उनसे असीम श्रद्धा है।

मानिक चन्द की हालत में थोड़ा-सा सुधार हुआ। अब वे प्रसन्न रहने लगे थे। प्रभा उनका मन बहलाती। एक दिन उनके मुँह से निकल गया—"स्वामी आप लड़का गोद कब लेंगे? मुझे आज्ञा दीजिए मैं इस कार्य को शीघ्र ही कर डालूंगी।"

मानिक चन्द मुस्करा दिये। वे धीरे से बोले—"मैंने लड़का गोद ले लिया है।"

"एं!"

"हाँ"

"आपने यह कार्य कब किया?"

"आज रात को।"

"आज रात को?"

"हां आज रात को।"

"आपने मुझे नही बतलाया!"

"अब बतला रहा हूँ।"

"लड़का मेरे पास बैठा है।"

"आप हँसी कर रहे हैं स्वामी आप···।"

अभी प्रभा इतना ही कह पायी थी कि मानिक चन्द ने उसे खींच कर अपने वक्ष से लगा लिया। वे उसके सिर पर स्नेह पूर्वक हाथ फेरते हुए गद-गद कण्ठ से बोले—"तू ही मेरी बेटी है। तू ही मेरा बेटा है। तू ही रत्नगर्भा है। आज से तू मेरी उत्तराधिकारी है।"

यह कहते-कहते मानिक चन्द की आँखों में आँसू आ गये।

प्रभा विस्मित विस्फरित नेत्रों से अपने मालिक की ओर देखने लगी। वह अवाक् रह गयी थी। उसके मुँह से बोल नहीं निकला।

तभी मानिक चन्द फिर कहने लगे—"आज से तू मुझे पिता जी कहकर पुकारेगी। मैं तेरा धर्म-पिता हूँ। तू इस हवेली की स्वामिनी है। यहाँ का सब कुछ तेरा है।"

प्रभा आश्चर्य चकित-सी बैठी थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या है?

मानिक चन्द ने चाबियों का गुच्छा उसके हवाले कर दिया। वे कह रहे थे—"इस गुच्छे में तहखाने और तिजोरियों की चाबियाँ हैं। आज ही मैं उत्तराधिकार का पत्र लिखता हूँ। नगर के प्रमुख गणमान्य लोगों को बुलाऊँगा। उनके उस कागज पर हस्ताक्षर होंगे फिर मैं तेरा ब्याह करूँगा बेटी। मेरी हवेली में बारात आयेगी।"

प्रभा मन्त्र मुग्ध-सी बैठी थी। उसे लग रहा था कि वह कोई विचित्र सपना देख रही हो।

मानिक चन्द अब उठकर बैठ गये। ऐसा प्रतीत होने लगा था कि वे पूर्णतया स्वस्थ हो गये हैं।

अब मानिक चन्द ने फिर प्रभा को वक्ष से लगाया। उन्होंने उसकी बलायें लीं। उसकी पीठ ठोकी और पुलकित कण्ठ से कहने लगे—"जमाई ऐसा लाऊँगा जो घर जमायी बनकर रहे। तेरी गोद भरे। तू सदा सुहागिन रहे मेरा यही आशीर्वाद है बेटी।"

प्रभा अब श्रद्धा विभोर हो गयी थी। उसकी भी आँखों में आँसू आ गये। उसने पुनः मानिक चन्द के वक्ष में सिर गड़ा दिया। भावावेश में उसके मुँह से श्रद्धा का स्वर निकला, "पिताजी।"

"मेरी बेटी।"

मानिक चन्द निहाल हो गये। उनमें खुशियाँ लौट आयी और वे अपना दुख भूल गये।

हवेली का हर दास और दासी यही कह रही थी कि मानिक चन्द ने प्रभा को गोद ले लिया है। अब उनकी बेटी है। वे उसका ब्याह खूब धूम-धाम से करेंगे। इसे कहते हैं भाग्य। यही तकदीर कहलाती है। कौन जानता

था कि हवेली की प्रधान दासी प्रभा एक दिन उसकी स्वामिनी बन जायेगी।

दूसरे दिन गोद लेने की रस्म पूरी हो गयी। मानिक चन्द ने एक बहुत बड़ा प्रीतिभोज दिया। इसमें नगर के सभी प्रमुख नागरिक आमन्त्रित किये गये थे।

उसी महीने प्रभा का ब्याह हो गया। उसके पति का नाम गगन था। वह एक शिल्पी था। वह कलाकार था। इसीलिए मानिक चन्द उससे प्रभावित हुए। वे उसे अपनी हवेली में ले आये। और उसके साथ प्रभा का ब्याह कर दिया।

अब मानिक चन्द कुछ बीमार नहीं थे। वे बिल्कुल ठीक हो गये। वे प्रसन्न रहने लगे। दुकान जाने लगे। उनके साथ उनका जमाई भी जाता। वह गद्दी पर बैठता।

राधामोहन ने यह सुना तो मन-ही-मन सोचने लगे कि मानिक चन्द ने बेटी का मोह छोड़ दिया। उनकी दुनिया बदल गयी। वे मरणासन्न थे और अब खुशहाल हैं।

नगरवधू कमला ने यह सुना तो उसकी छाती पर साँप लोट गया। वह मानिक चन्द से ईर्ष्या करने लगी। वह सोच रही थी कि उसका वैभव किसी के भी काम नहीं आया। गौरव पागल हो गया। वह जड़ पागल बन गया है। अब उसमें सुधार होने की कोई आशा नहीं। हिमकिरीटिनी चली गयी। वह अकेली रह गयी। उसके बाद उसके धन का क्या होगा?

इधर यह परिस्थिति थी और उधर दोनों पागल एक हो गये थे। अब गौरव बूढ़े पागल के साथ-ही-साथ रहता। बूढ़ा पागल उसे बहुत प्यार करता। दोनों सिन्धु नदी के तट पर जाकर बैठ जाते। जब कोई जलपोत आता तो गौरव जोर-जोर से चिल्लाने लगता—"इस पर आमेन बैठा है। इससे नीली उतरेगी। वह मुझे तलाक देगी। वह एक बला है बला। वह एक विदेशी नागिन है। वह जिसको डसती है उसे पागल बना देती है।"

ऐसे ही जब कोई जहाज बन्दरगाह से रवाना होता तो गौरव कहने लगता—"इस जलपोत पर मेरी बारात जायेगी। यह मुझे दहेज में मिला है। इसी में एक करोड़ रुपया रखा है। सावधान समुद्र में डाका पड़ता है।

लुटेरे रुपया लूट ले जायेंगे।"

और दूसरा पागल घनश्याम अपनी बात लोगों को सुनाने लगता। वह कहता कि तूफान आने वाला है। अभी नदी में उबाल आयेगा। सिन्धु की लहरें आसमान को छूने लगेंगी। मोहनजोदड़ो डूब जायेगा। यहाँ पाप अपनी सीमा को पार कर चुका है। यहाँ विनाश होगा। यहाँ प्रलय होगा। इस धरती पर पानी-ही-पानी रह जायेगा।

लोग हँस देते और आपस में एक दूसरे से कहने लगते कि यह रोज यही चिल्लाता है। इसके कहने से प्रलय हो जायेगा। इसके कहने से मोहनजोदड़ो की धरती पानी में डूब जायेगी। पहले यह अकेला था और अब एक जवान को भी अपना साथी बना लिया है।

इस तरह दोनों पागलों की जोड़ी साथ-ही-साथ रहती। घनश्याम गौरव को अपने हाथ से खाना खिलाता, जब गौरव सो जाता तो वह उसका सिर अपने घुटने पर रख लेता।

लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि बूढ़ा पागल जवान पागल को इतना प्यार क्यों करता है? ऐसा लगता है दोनों बाप-बेटा हों। गौरव भी बूढ़े का आदर करता। वह उसके पैर दबाता था।

उबाल

आमेन नीली को लेकर भारतवर्ष फिर आया। वह अपनी बेटी नीली का ब्याह भारत में ही करना चाहता था। वह एक किराये के आवास में ठहरा। यह आवास बहुत ही सुखप्रद था।

आमेन उसी ज्योतिषी के पास पहुँचा जिसने बतलाया था कि तुम्हारी बेटी का ब्याह एक वेश्या के पुत्र के साथ होगा। यह सम्बन्ध विच्छेद हो जायेगा।

ज्योतिषी ने बाप और बेटी दोनों की हस्त रेखाएँ देखीं। उसने देर तक विचार किया और फिर आमेन से कहने लगा—"ब्याह अवश्य होगा। यहीं मोहनजोदड़ो में होगा। लेकिन अधूरा रह जायेगा। तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं हो पायेगी।"

आमेन को ऐसा लगता, जैसे किसी ने उसे आसमान से उठाकर धरती पर पटक दिया है। वह भौंचक्का-सा रह गया और व्यस्त स्वर में ज्योतिषी से पूछने लगा—"यह आप क्या कह रहे हैं? ज्योतिषी जी मेरी समझ में कुछ नहीं आया।"

"मैं ठीक कह रहा हूँ।"

"कैसे?"

"योग ऐसा है कि जिस समय फेरे पड़ रहे होंगे तभी अनहोनी घटना घट जायेगी और ब्याह अधूरा रह जायेगा।"

"इसका कोई उपाय है?"

"इसका कोई उपाय नहीं।"

"क्यों?"

"होनी को किसी तरह भी रोका नहीं जा सकता है।"

"मैं नीली के फेरे नहीं पड़ने दूँगा। वह वर के गले में जयमाला नहीं डालेगी।"

"आप कुछ भी कीजिए नीली का ब्याह कभी नहीं होगा। इसके हाथ में ऐसी रेखा है।"

आमेन को सन्तोष नहीं हुआ। उसने ज्योतिषी को दक्षिणा भी नहीं दी और नीली के साथ वहाँ से चल दिये।

जब आमेन दूसरे ज्योतिषी के पास आया, तो उसने भी वही बात बतलायी उसका कहना था कि अष्टग्रही योग है। नगर मोहनजोदड़ो पर शनिश्चर की दशा चल रही है। क्या-से-क्या हो जायेगा, यह कुछ भी कहा नहीं जा सकता।

आमेन निराश नहीं हुआ। उसका अन्तःकरण कह रहा था कि मुझे किसी भी ज्योतिषी से पूछना नहीं चाहिए। जिससे पूछूँगा, वही ऐसी बात देगा। जो मेरे लिए चिन्ता का विषय बन जायेगी।

आमेन ने एक जौहरी से बात की। उसका लड़का अकेला था। वह करोड़ों का स्वामी था। आमेन का कहना था कि वह एक करोड़ नकद रुपया दहेज में देगा। एक जलपोत भी दामाद को देगा। लड़की नीली को हीरे-जवाहरातों के गहने पहनायेगा।

ब्याह पक्का हो गया। नीली ने भी लड़के को पसन्द कर लिया था। इस बार योजना यह बनायी गयी थी कि बारात भारत से मिस्र नहीं जायेगी। ब्याह कार्य मोहनजोदड़ो में ही सम्पन्न होगा।

आमेन की योजना दूसरी यह थी कि नीली के ब्याह के बाद वह मोहन-जोदड़ो में एक बड़ी-सी हवेली बनवायेगा उसका दामाद व्यापार करेगा। उसकी मृत्यु के बाद वही उसका उत्तराधिकारी कहलायेगा।

इस तरह आमेन को सन्तोष हो गया। नीली भी सन्तुष्ट हो गयी। दोनों को ऐसा लग रहा था कि यह ब्याह निर्विघ्न होगा। इसमें कोई भी बाधा नहीं आयेगी।

इधर आमेन और नीली की यह परिस्थिति थी और उधर गौरव ने एक दिन दोनों को देख लिया। वह नीली के पीछे-पीछे चलने लगा। वह रास्ता चलते लोगों से कह रहा था—"यह मेरी दुलहिन है। इसने मेरे साथ फेरे लिये थे। अब नगरवधू बन गयी है। इसने मुझसे नाता तोड़ लिया। अब यह वेश्या है।"

आमेन को बहुत बुरा लगा। उसने पीछे घूमकर गौरव के गाल पर जोर से एक थप्पड़ दिया।

पागल तो पागल था ही, उसने आमेन को उठाकर सड़क पर पटक दिया। वह उसकी छाती पर चढ़ बैठा। उसने दोनों हाथों से उसका गला दबाया और लोगों से कहता जा, रहा था—"यह मेरा ससुर है। अब यह लड़की की कमायी खायेगा। इसकी लड़की वेश्या बन गयी।"

भीड़ लग गयी, लोग तमाशा देखने लगे। कोई कुछ कह रहा था और कोई कुछ। नीली रो रही थी। वह हाय-हाय कर रही थी।

लोगों ने गौरव को किसी तरह हटाया। तभी वहाँ बूढ़ा पागल आ गया। वह आते ही आमेन को पीटने लगा। वह उससे कह रहा था—"यह मेरा धर्म पुत्र है। यह नगर का बेटा है। कमला इसकी माँ है। इसका बाप

राधामोहन है। तू इसका ससुर है। इसकी घरवाली इसको दे दे। नही तो मैं तेरी आँखें निकाल लूंगा।"

आमेन फिर गिर पड़ा। पागल घनश्याम उसे दोनों हाथों से पीट रहा था। लोग छुड़ाते मगर वह उसे छोड़ता ही नही था।

जब लोगों ने किसी तरह आमेन को छुड़ाया तो घनश्याम ने नीली का हाथ पकड़ लिया। वह उसे अपनी ओर घसीटने लगा। उसका कहना था कि चल तेरी सास कमला तुझे बुला रही है। हिमकिरीटिनी वहाँ से भाग गयी। वह तुझे नगरवधू बनायेगी उसकी हवेली सूनी है।

अब भीड़ इतनी बढ़ गयी थी कि यातायात बन्द हो गया। कोई कहता यह वेश्या का बेटा है। किसी का स्वर सुनायी पड़ता कि इसका बाप राधा-मोहन है। ऐसे ही कोई कह रहा था कि यह मिस्र की लड़की चरित्रहीन है। इसने गौरव को तलाक दिया। तभी यह पागल हो गया है।

नीली खिचती चली जा रही थी। घनश्याम ने उसे मजबूती से पकड़ रखा था। वह लोगों से कहता कि यह नयी नगरवधू है। इसकी सास कमला है। जिस तरह कमला ने कई हवेलियां तबाह कर दीं। वैसे ही यह सैकड़ों घर उजाड़ेगी। यह मोहनजोदड़ो की नयी नगरवधू है। इसकी प्रदर्शिनी लगेगी।

सब लोग नीली को छुड़ाते रहे लेकिन पागल ने उसे नहीं छोड़ा। वह उसे कमला की हवेली में खींच लाया। उसने उसे कमला के सामने जाकर पटक दिया और हँस कर कहने लगा—

"ले चुड़ैल, तेरी बहू ले आया हूँ। इसी नागिन ने गौरव को तलाक दे दी थी। तभी वह पागल हो गया। इसे नाच और गाना सिखला यह भी वेश्या बनेगी।"

भीड़ कमला की हवेली के अन्दर आ गयी। आमेन छाती पीट रहा था।

गौरव मुस्करा रहा था। वह लोगों से कह रहा था—पहले यह मेरी दुलहिन थी और अब नगरवधू बन गयी है। मेरी माँ नगरवधू है। यह भी वेश्या बनेगी। यह सुन्दर है। यह जवान है। इसके पास लक्ष्मी पुत्र आयेंगे और इस पर हीरे-मोती लुटायेंगे।

भीड़ की यह हालत थी कि वह बढ़ती ही जा रही थी। हवेली के बाहर मेला जैसा लगा था। भीतर का चौक खचाखच भरा था। जिसे देखो वही इधर भागा चला आता। हर आदमी जान गया था कि गौरव कमला का बेटा है। उसका बाप राधा मोहन है।

इसी तरह पागल घनश्याम के लिए भी जानने वाले लोग कह रहे थे कि यह कमला का पुराना प्रेमी है। कमला की बेरुखाई ने इसे पागल बना दिया।

नीली उठकर भागी। वह बाप के वक्ष से आकर लग गयी।

लेकिन घनश्याम ने उसकी चोटी पकड़ी। उसे खींच कर कमला के पास पटका और तेज गले से कहने लगा—

"जाती कहाँ है चुड़ैल, पैरों में घुँघरू बाँध। तुझे सबके सामने नाचना पड़ेगा। तू वेश्या की हवेली में आयी है। तू उसकी बहू है। तू बदनाम है। तेरी यही दुकान है। तेरे ग्राहक यहीं आयेंगे।"

कमला सन्नाटे में थी। वह कभी पागल घनश्याम की ओर देखने लगती। कभी गौरव को निहारती। कभी उसकी दृष्टि आमेन पर जाकर टिक जाती।

नीली बुरी तरह रो रही थी। वह फिर उठकर भागी। इस बार घनश्याम ने उसकी पीठ पर जोर से एक लात मारी और दाँत पीसकर जोर से चिल्लाया—

"जो नयी लड़की वेश्या के कोठे में आती है। पहले वह इसी तरह पीटी जाती है, तब राह पर आती है।"

लोग भयभीत हो गये। उन्हें डर लगने लगा था कि कहीं पागल घनश्याम नीली की हत्या न कर दे। किसी का भी साहस नहीं होता कि वह बीच में आए और नीली को छुड़ाए।

जैसे ही नीली उठकर खड़ी होती वैसे ही घनश्याम उसे पीटने लगता।

गौरव प्रसन्न था। वह कह रहा था—नीली को ऐसा ही दण्ड मिलना चाहिए था इसने मेरा अपमान किया था। मैं इसके घर बारात लेकर गया। इसने मुझे अकेला लौटा दिया। इसे नगरवधू बना दीजिए। यह इसी योग्य है। यह मेरी माँ कमला वेश्या है। यह इसे भी वेश्या बना देगी। आप इसे

सही जगह पर लाये हैं। आप सच कहते हैं कि यह मोहनजोदड़ो की नयी नगरवधू है। यह वेश्या बनेगी। मुझे महान हर्ष होगा।"

लोग सन्नाटे में थे। भीड़ बढ़ती जा रही है। ऐसा लग रहा था कि नीली की हत्या हो जायेगी। घनश्याम उसे नहीं रहने देगा।

नगरवधू की हत्या

कमला पसीने-पसीने हो रही थी। उसे लग रहा था कि घनश्याम अपने पागलपन की चरम सीमा पर पहुँच गया है। वह इन्सान से शैतान बन गया है। आज वह कुछ करके रहेगा। इसीलिए वह यहाँ आया है।

आखिर कमला ने साहस बटोरा। वह आगे बढ़ी। उसने घनश्याम को धीरे से समझाया।

वह बोली, "तुम यहाँ से जाओ घनश्याम व्यर्थ में भीड़ लगा रखी है। नीली को छोड़ दो वह नगरवधू नहीं बनेगी। वह एक सभ्रान्त परिवार की लड़की है।

"सच कहती हो कमला। नीली सम्भ्रान्त परिवार की लड़की है। तुम सम्भ्रान्त नारी हो। मैं इसे नहीं छोड़ूँगा। यह नगरवधू बनेगी और इसी हवेली में रहेगी।"

"मैं इसे अपनी हवेली में नहीं रखूँगी।"

अब घनश्याम का गुस्सा बढ़ गया। उसने नीली को छोड़ दिया और कमला का हाथ कसकर पकड़ लिया। उसका चेहरा लाल हो गया था। वह क्रुद्ध स्वर में कहने लगा—

"क्या कहा तू इसे अपनी हवेली में नहीं रखेगी।"

"हाँ, मैं इसे अपनी हवेली में नहीं रखूँगी।"

"तेरी यह हिम्मत ? तू मेरी बात नहीं मानेगी।"

यह कहने के साथ ही घनश्याम ने कमला के मुँह पर थप्पड़ दिया। वह

बुरी तरह तिलमिला गयी। उसकी नाक से खून आ गया।

उधर नीली उठकर अपने बाप के पास आयी। तभी गौरव ने उसे पकड़ लिया। वह उसे फटकारता हुआ कठोर स्वर में कहने लगा—

"तू कहाँ चली? तू चली जायेगी फिर इस हवेली की नगरवधू कौन बनेगी?"

नीली बुरी तरह से रो रही थी। आमेन की हालत दयनीय थी। वह पुत्री को गौरव के चंगुल से बचाना चाहता था। लेकिन उसका साहस साथ नहीं देता। इसीलिए पास नहीं जाता, दूर खड़ा था।

कमला ने आँचल से अपनी नाक का खून पोंछा। वह घनश्याम से अपना हाथ छुड़ाने लगी।

किन्तु घनश्याम ने कमला का हाथ नहीं छोड़ा। वह उसे मरोड़ने लगा। कमला को लगा कि उसकी बाँहें टूट जाएँगी, वह जोर से चिल्लायी। तभी उसके मुँह पर घनश्याम ने दूसरा थप्पड़ मारा। अब वह कह रहा था:— "बोल तू नीली को अपनी कोठी में रखेगी या नहीं?"

"नहीं···नहीं···नहीं।"

"तू अपने मन की करेगी?"

यह कहने के साथ घनश्याम ने कमला को पीठ के बल गिरा दिया। वह उसकी छाती पर चढ़ बैठा और उसे दोनों हाथों से पीटने लगा।

कमला पिट रही थी। वह चिल्ला-चिल्ला कर रोती, शोर मचाती लेकिन किसी में भी हिम्मत नहीं थी जो उसकी रक्षा करता और आगे आता।

घनश्याम कह रहा था—"तुझ पर मैंने अपनी सारी सम्पत्ति लुटा दी। मैं निर्धन हो गया। तूने मेरे प्यार को ठुकराया। इसीलिए यहाँ आया हूँ।"

कमला के मुँह से खून आ गया। उसके गाल लाल हो गये थे। घनश्याम ने उसके बाल भी खूब नोचे। उसका गला दबाया। वह अधमरी हो गयी थी। मगर फिर भी घनश्याम निर्दयता के साथ उसे पीटे जा रहा था।

जब कमला ने देखा घनश्याम उसे मार डालेगा तो वह जीवन से निराश हो गयी। उसने अच्छी तरह समझ लिया था कि कोई भी उसे नहीं

बचा पायेगा। सभी पागल से भयभीत हैं। सभी डर रहे हैं।

अब कमला ने गौरव को पुकारा। वह आर्तनाद करती हुई करुण स्वर में बोली—"गौरव मुझे बचाओ। यह शैतान मुझे मार डालेगा।"

गौरव ने नीली को छोड़ दिया। वह घनश्याम के सामने आ गया और विनम्र स्वर में कहने लगा--"माँ को छोड़ दो पिताजी! इन्हें बहुत दण्ड मिल गया। ये नीली को नगरवधू बनाएंगीं। मैं वचन देता हूँ।"

"तू वचन देता है।"

"हाँ पिताजी ! मैं वचन देता हूँ।"

"तुम्हारे कहने से मैं इसे छोड़ देता हूं।"

घनश्याम गौरव के पास आ गया। उसने कमला को छोड़ दिया। कमला उठकर बुरी तरह हांफ रही थी। उसकी साड़ी अस्त-व्यस्त हो गयी। उसका मुँह लाल से अब स्याह पड़ने लगा। उस पर सूजन आ गयी थी। उसके बदन से जगह-जगह से खून बह रहा था।

नीली अपने बाप के पास पहुँच गयी थी। लोग आमेन से कह रहे थे कि जल्दी से लड़की को लेकर यहाँ से भाग जाओ।

आमेन ने यही किया। उसने नीली का हाथ पकड़ा और द्रुत गति के साथ वहाँ से चल दिया।

घनश्याम ने यह देख लिया। उसने आमेन के लात पीछे से जाकर मारी। आमेन औंधे मुँह जमीन पर गिरा, उसका माथा फूट गया।

अब घनश्याम ने नीली के बाल पकड़ लिए। उसे घसीटता हुआ कमला के पास लाया। उसने नीली को कमला पर ढकेल दिया और कमला से कहने लगा—"ले इसे सँभाल यह भागी जा रही थी।"

कमला किसी तरह उठकर खड़ी हुई, उसने घनश्याम की ओर जलती आँखों से देखा। वह खिसिया गयी थी। इसीलिए कहने लगी—"तू पागल हो गया, तुझे तो मौत आ जाती, तो अच्छा होता। तू मेरी जिन्दगी का नासूर बन गया है। तुझे मौत आये। तेरा बुरा हाल हो।"

"ए गौरव की माँ, देखो मुझे गालियाँ मत दो। मैं तुम्हारी जबान खींच लूंगा।"

"तूने क्या जबान खींचेगा। तू कुत्ता है कुत्ता। एक दिन वह था जब तू

भर गया। वह उबल रहा था। ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ धरती के गर्भ में समाने लगीं।

यह प्रलय का पानी, यह आँधी और यह तूफान, केवल मोहनजोदड़ो तक ही सीमित नहीं रहा, हड़प्पा में भी प्रलय का नंगा नाच नचा था। वहाँ की भी धरती फट गयी। वहाँ के भी भवन उसके गर्भ में समाने लगे।

कमला की हवेली में शोर मचा कि प्रलय हो गया है सिन्धु नदी में बाढ़ आ गयी। उसका पानी उबलने लगा है।

हवेली में भी पानी आ गया। उसके आँगन में दरार हो गयी। वहाँ की धरती फट गयी। वह भारी शोर के साथ फटी धरती में समाने लगी। वहाँ पर पानी ही पानी हो गया।

पूरे दो दिन तक आंधी चलती रही। तूफान मचलता रहा। सिन्धु नदी गर्जन करती रही। उसका पानी बढ़ता रहा। मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा धरती के गर्भ में समा गये। वहाँ केवल पानी ही पानी था।

नगर का एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा था। प्रलय अपने साथ पानी लाया था। वह दो दिन तक भयानक तांडव-नृत्य दिखलाता रहा।

उनका अस्तित्व सदा के लिए विलीन हो गया। नगरवधू कमला अवनी की गोद में समा गयी थी। पागल घनश्याम का कुछ भी पता नहीं चला वह भी मौत के मुँह में जा चुका था।

नीली जब धरती में समाने लगी, तो गौरव ने उसके बाल पकड़ लिए। वह भी उसके साथ भूकम्प के झटके में धरती माता की गोद में समा गया।

यह नगर का महान दुर्भाग्य था। नगरवासियों का भी दुर्भाग्य था। आज भी नगर मोहनजोदड़ो धरती के गर्भ में पड़ा सो रहा है। उसकी कहानी शेष है। वह चिर निन्द्रा में लीन है।

आज सिन्धु नदी शान्त है। उसे पुराना इतिहास जब याद आ जाता तो उसका कलेजा मुह को आने लगता है। कभी नगर मोहनजोदड़ो उसके तट पर बसा था। वह उसे अपना गौरव समझती।

०००